आषाढ़ २०६०

ओ३म्

जुलाई 2003

23 जुलाई जिनकी प्रेरक जयन्ति है

"स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहुँगा"

मंत्र के उद्घोषक

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

जनज्ञान

हिन्दी मासिक

मान्यवर बंधु।

वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद और भारतीय अस्मिता की रक्षार्थ सजग प्रहरी के रूप में 'जनज्ञान' मासिक विगत ३८ वर्षों से अभावों, अड़चनों को झेलते हुए भी सतत प्रकाशित हो रहा है। निश्चय ही देश-विदेश में जनज्ञान की एक विशिष्ट छवि और हजारों परिवारों में उसका एक विशिष्ट स्थान बना है। यह सब आप सरीखे समर्थ, सक्षम और ध्येयनिष्ठ सहयोगियों के सहयोग से ही संभव हो सका है।

'जनज्ञान' कोई व्यावसायिक मासिक नहीं अपितु एक वैचारिक पत्र है। स्वतन्त्रता दिवस के ऐतिहासिक अवसर पर जनज्ञान का स्वातन्त्र्य **सेनानी स्मृति विशेषांक** प्रकाशित हो रहा है। जिसमें राष्ट्र के स्वाधीनता संग्राम के हुतात्माओं और स्वातन्त्र्य साधकों की प्रेरक गाथाओं के अतिरिक्त उनके सपनों और उद्देश्यों की अभिव्यक्ति करने वाली प्रेरक सामग्री तो स्थान पाएगी ही साथ ही स्वदेश की समस्याओं और उनके निदान पर देश के मूर्धन्य विचारकों की रचनाएं भी प्रकाशित की जाएंगी। ओजस्वी कविताएं और विचार भी इस विशेषांक की विशेषताएं होंगी।

आप अपने प्रतिष्ठान व समाज तथा संस्थान का विज्ञापन जुलाई माह के दूसरे सप्ताह तक इस विशेषांक में प्रकाशनार्थ भेजकर जनज्ञान के माध्यम से राष्ट्रीय स्वाभिमान जागरण यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करेंगे, इसी विश्वास के साथ यह अनुरोध पत्र प्रेषित कर रही हूँ।

विज्ञापन दरें निम्नानुसार हैं–

अंतिम कवर पृष्ठ	—	५००० रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	—	४००० रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	—	२५०० रुपए
आधा पृष्ठ	—	१५०० रुपए
चौथाई पृष्ठ	—	७५० रुपए

विश्वास है आपके द्वारा दिया विज्ञापन 'जनज्ञान' के पृष्ठों को सुशोभित करेगा और हमारे आग्रह को आप समादृत करेंगे।

विज्ञापन व धनराशि बैंक ड्राफ्ट अथवा केवल दिल्ली के चैक द्वारा निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें–

'जनज्ञान' मासिक, २२८६, आर्यसमाज मार्ग,
करौलबाग, नई दिल्ली–५

निवेदिका
आपकी बहन
राकेश रानी
(संपादक)

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

जनज्ञान प्रकाशन
नई दिल्ली - 5

हिन्दूराष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

कार्यालय
2286 आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 25724741, 25815457

प्रधान कार्यालय
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-36, दूरभाष : 27202249

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

सम्पादक : पंडिता राकेश रानी
सह-सम्पादक : दिव्या आर्य
वार्षिक शुल्क - 100 रु० आजीवन-801 रु०
एक प्रति - 10 रुपये
विदेश में वार्षिक शुल्क 350 रु.
आजीवन 8001 रु.
जुलाई 2003 वर्ष 38 अंक 3

सम्पादकीय

मातृभूमि के भव्य भाल पर वह था 'तिलक' महान।
इसकी रक्षा हेतु समर्पण था उसका युग आह्वान॥

भव्य देवभूमि, आर्यावर्त, हिन्दुस्थान के भाग्याकाश पर लगभग एक हजार वर्ष के दासता के सघन घनों को छितराने का क्रम जिस युगसृष्टा के जन्म के साथ-साथ पुनः प्रारम्भ हुआ, वह था सरजा शिवाजी के स्वराज्य अभियान से चैतन्य युक्त महाराष्ट्र में जन्मा वह महान स्वातन्त्र्य योद्धा जिसे भारतीय इतिहास में लोकमान्य के रूप में अमर स्थान मिला है, मुगल सत्ता के विरूद्ध संघर्ष समरांगण में उतरे और स्वराज्य की पताका सह्याद्रि की पर्वत मालाओं में फहराने में सफल रहे शिवाजी के चरण चिह्नों को जो महाराष्ट्र धरा अपने आंचल में सहेजे है उसी में जनमा था वह बाल। जिसने अपने कर्म कौशल से अपने वंश और आर्य जाति को निहाल किया। अद्भुत संयोग है इतिहास का यह भी कि ब्रिटिश राज्य सत्ता के विरूद्ध हुए प्रथम स्वातन्त्र्य समर (१८५७) के रणनाद से एक वर्ष पूर्व (१८५६ में) बाल गंगाधर तिलक जन्मे थे।

सन सत्तावन के स्वातन्त्र्य समर की असफलता के कारणों पर बाल गंगाधर तिलक ने भली भांति चिंतन किया था और वह कतिपय निष्कर्षो पर पहुंचे थे। पौराणिक आख्यानों के अनुसार गंगाधर हैं शंकर जिन्होंने पतित पावन के रूप में प्रतिष्ठित महान सरिता गंगा को ब्रह्मा के कमंडल से बाहर आने पर अपनी जटाजूट में धारण करने का गौरव पाया था। उसी गंगाधर (शिव) के सुपुत्र के रूप में गणपति पौराणिक जगत में प्रतिष्ठित हैं। इस संदर्भ में बाल गंगाधर तिलक के जीवन वृत्त पर ध्यान जाता है तो यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं लगता कि उन्होंने अपनी नाम संज्ञा को अपनी कर्मविधा में साकार किया था।

बाल गंगाधर तिलक ने, यौवन की देहरी पर पग धरते-धरते परतन्त्रता की पीड़ा को स्वतः अनुभूत कर ब्रिटिश दासता की शृंखलाओं से परम पुनीता भारत भूमि को बंधन मुक्त कराने का वज्र संकल्प ग्रहण कर, स्वराज्य के प्रति राष्ट्र में जन-जागरण को युग धर्म के रूप में मान्य कर राष्ट्रीय राजनीति के मंच पर पदार्पण किया था। उन्होंने इस सत्य को

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी 2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 से प्रकाशित एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स 308/4 शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

अनुभूत कर लिया था कि हिन्दू समाज ही इस राष्ट्र का मेरूदंड है। यह मेरूदंड जब-जब दुर्बल और निर्बल हुआ है, तब-तब राष्ट्र पराधीनता का अभिशाप झेलने पर बाध्य हुआ है। इस संबंध में उन्होंने अपने चिंतन-मनन को इन शब्दों में व्यक्त किया था : **"जब तक आप लोग बटे रहेंगे, तब तक एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय के साथ सम्बन्ध स्थापित नहीं करेगा, आप हिन्दू धर्म की उन्नति की आशा नहीं कर सकते। राष्ट्रीयता के लिए धर्म अनिवार्य तत्व है। धर्म शब्द का अर्थ है एक बंधन, जो 'धृ' धातु से बना है। 'धृ' का अर्थ है धारण करना या वहन करना। वह क्या है, जिसे हम धारण करें? हमें आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध धारण करना है और मनुष्य का मनुष्य के साथ सम्बन्ध धारण करना है धर्म का अर्थ है कि हम ईश्वर और मनुष्य के प्रति अपने कर्त्तव्यों को धारण करें अर्थात् उनका निर्वाह करें।"**

उनके उपरोक्त उद्गारों से यह सुस्पष्ट है कि वैदिक धर्म के मूल सार तत्वों को उस युग पुरुष ने अपने चिन्तन में आत्मसात कर ही सार्वजनिक जीवन में पदार्पण किया था। समाज में व्याप्त भेद-विभेद की पीड़ा को अपने मानस में सहेजे उस कर्मयोगी ने रोगी राष्ट्र को स्वस्थ करने की संजीवनी के रूप में जहां 'गणपति उत्सव' की परिपाटी का श्रीगणेश किया था, वहीं राष्ट्र में परतन्त्रता की पीड़ा को भी अनुभूत कर शिवाजी जयन्ती केसामूहिक रूप से आयोजन को युगधर्म निरूपित किया था। ब्रह्मतेज और क्षात्रतेज के सम्नन्वय को राष्ट्रोद्धार और स्वातन्त्र्य दर्शन और रक्षण के वैदिक महामन्त्र को राष्ट्र के दिग्दिगन्त में निनादित करने हेतु वह नरपंगुव कर्मक्षेत्र में अवतरित हुआ। हिन्दू समाज को संगठित करने हेतु ही उस युग पुरुष ने 'गणपति उत्सव' और 'शिवाजी जयंती' के ससमारोह परिपालन का जन-गण से आह्वान किया था।

तिलक ने "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे" का महामन्त्र गुंजाकर राष्ट्र में नव चैतन्य का सृजन करने के साथ ही साथ राजनैतिक मंच पर तब तक पसरे रहे याचक भाव का निस्तारण किया। उन्होंने जन-गण में आत्म विश्वास के प्रेरक भाव की गंगा को भी गतिमान किया। स्वातन्त्र्य समर के इस उद्भट सेनानी ने निश्चय ही युग दृष्टा देव दयानंद के चिंतन से प्रेरणा ग्रहण की थी, इस सत्य को उन्होंने स्वयं अपने इन शब्दों में स्वीकार भी किया था : **"ऋषि दयानंद भारतीय आकाश पर अपनी अलौकिक आभा से चमके और गहरी निद्रा में सोए हुए भारत को जागृत किया तथा वे स्वराज्य के प्रथम संदेश वाहक थे।"**

स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए संकलपबद्ध बाल गंगाधर तिलक को ही यह श्रेय जाता है कि उन्होंने तत्कालीन कांग्रेस मंच को ब्रिटिश सत्ताधीशों के समक्ष मांगे पेश कर याचना जैसे भाव से मुक्ति दिलाकर उसे पराधीनता से स्वराष्ट्र को मुक्ति दिलाने वाले एक तेजस्वी संगठन का रूप प्रदान किया। आज जिस चिंतन (हिन्दुत्व) को हेय जताने का प्रयास स्वदेश के बुद्धि वारिधि कर रहे हैं, उसी चिंतन को लोकमान्य इस राष्ट्र की दासता की श्रृंखलाओं से मुक्ति दिलाने और परम वैभव पदपर प्रतिष्ठित कराने की संजीवनी सुधा मानते थे। उसी को प्रेरणा का पुंज मानकर उन्होंने राष्ट्र को निराशा के अंधकार से मुक्त कराकर उसे अपने स्वर्णिम भविष्य के प्रति आस्था से युक्त कराने के भागीरथ प्रयास किए थे। ब्रिटिश सत्ता ने राष्ट्र को अपने पराधीनता पाश में जकड़े रखने की नीयत से फूट और विघटन के जो बीज विखराए थे उनको प्रभावहीन करने के लिए उन्होंने अपने समकालीन पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय और बंगभूमि में सक्रिय युग नायक विपिनचन्द्र पाल से हाथ मिलाकर स्वातंत्र्य महायज्ञ में अपनी समिधा समर्पित की थी। उन्होंने इस मर्म को इतिहास के सांगोपांग अध्ययन से हृदयंगम किया था कि स्वधर्म, स्वसंस्कृति व स्व-भाषा की त्रिवेणी में राष्ट्र के जन-गण का अवगाहन ही इसे एकताबद्ध रखने का महान एवं परीक्षित पथ है। इसी भांति विदेशी दासता से मुक्ति हेतु वे शांतिपूर्ण प्रयास और क्रांति की मशाल को बाल कर स्वातंत्र्य समरांगण में उतरने इन दोनों ही विधाओं कें परिपालन के प्रबल पक्षधर थे।

इतिहास साक्षी है कि लोकमान्य ने क्रांति पथ के पथिक बने भारतीय युवकों को अपना शुभाशीष प्रदान किया। स्वातंत्र्य वीर सावरकर को ब्रिटिश सिंह की मांद (लंदन) में प्रवेश कराने का सुअवसर उन्होंने ही क्रांतिधर्मी एवम महर्षि दयानन्द के निष्ठावान अनुयायी पंडित श्यामजीकृष्ण वर्मा द्वारा प्रदत्त 'शिवाजी छात्रवृति' के माध्यम से उपलब्ध कराया था। क्रांति पथ के पथिकों को गोरी सत्ता द्वारा दंडित करने पर लोकमान्य ने अपने द्वारा संस्थापित 'केसरी' के सम्पादकीय स्तम्भ में उस दंड के विरूद्ध खुलकर विरोधी स्वर उभारा था। उनकी लेखनी से हुई अग्निवर्षा से संतप्त गोरी सत्ता ने उनको निष्कासित कर बर्मा (म्यांमार) में बंदीवास झेलने हेतु पठाया तो उन्होंने अपनी स्थानबद्धता के उस काल में मानव जीवन के सार तत्व पर चिंतन-मनन कर श्रीकृष्ण के गीता ज्ञान के मर्म का सार अपनी लेखनी का विषय बनाया था।

एकांगी चिंतन से ग्रस्त किसी महात्मा के समान तिलक ने गीता में जीवन से पलायन जैसा कोई सार तत्व नहीं तलाशा था अपितु उन्होंने जो निष्कर्ष प्रस्तुत किया था वह उन्हीं के शब्दों में यह था : 'हिन्दू धर्म, जिसमें कि मैं पैदा हुआ हूँ, उसके अनुसार यदि कोई ऐसा जीवन चाहता है, जो

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो।)

सम्पादकीय	१
महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी	४
सामयिक-विचार	६
आपके पत्र	७
वैदिक-चिंतन—ईश्वरीय ज्ञान -डॉ. सत्यपालसिंह	९
वैदिक-दर्शन—विद्यार्थी का ब्रह्मचर्य -स्वामी रामस्वरूप	१२
वैदिक-चिंतन—वेदार्थ में श्रौत्रसूत्रों का योगदान -डॉ. कृष्णलाल	१४
लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक-डॉ. हरिपाल सिंह	१६
महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद -बचनेश त्रिपाठी	१७
विश्व में यज्ञ क्रांति और दयानन्द -आचार्य आर्यनरेश	१८
भौतिक-अमरता (धारा-३) -डॉ. ज्ञानचन्द्र	२०
प्रभु प्रार्थना करें—प्रार्थना-प्रदीप - नित्यानन्द	२२
आर्यसमाज की विचारधारा (२) -स्व. पं. क्षितीश वेदालंकार	२५
अथर्ववेदीय मंत्रविद्या - स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक	२७
स्वास्थ्य-चर्चा—वृद्धावस्था और स्वास्थ्य - हरशरण गोयल	३४
पेट के रोग व चिकित्सा - कविराज कृष्णगोपाल	३५
बौखलाए पोप ले मर्यादाएं तोड़ी - विक्रमगणेश ओक	३८
कहानी—खजाना अक्ल का - अरविन्द जैन	४०
बालक शिवाजी की गोभक्ति	४१
व्यंजन—आम का खट्टा अचार... -सुशीला सिंघवी	४२
शहीद का अंतिम संदेश -शिवकुमार गोयल	४३
कौन है देश विभाजन का अपराधी..... -श्री ओमप्रकाश	४४
घर-परिवार—पिता-पुत्र	४६
सातवां विश्व हिन्दी सम्मेलन.... -रामबिहारी विश्वकर्मा	४७
महिला-जगत्—दहेज उत्पीड़न... - अमृता निकोर-शिक्षाविद	५०
धर्म से आर्य-कर्म से आर्य—महाशय धर्मपाल -सुमेधा आर्य	५३
समाचार-दर्शन	५३

वस्तुतः जीने योग्य है, तो उसे देर-सवेर अपने जीवन के चरम-लक्ष्य —मोक्ष को पाने के लिए दुनियादारी को त्याग देना पड़ेगा। इस प्रश्न ने मुझे सोचने विचारने केलिए विवश किया कि क्या मेरा धर्म मनुष्यत्व के पूर्णत्व को प्राप्त करने से पहले ही इस संसार को त्यागने की बात करता है? मैंने इस प्रश्न का उत्तर गीता में खोजा और मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि संसार में रहते हुए, पहले अपने कर्म का भली भांति निर्वाह करो, इसी से तुम ज्ञान या शक्ति से ईश्वर का सान्निध्य पा सकोगे। यह कर्म क्या है? यह कर्म है—संसार को सही मार्ग पर चलाए रहने में अपना योगदान करना। ईश्वर ने सृष्टि की जो रचना की है, उसका जो उद्भव और विकास किया है, उसे उसी दिशा में आगे ले जाना ही मनुष्य का कर्म है।"

स्वतंत्रता के महासंग्राम में यदि राष्ट्र उनके द्वारा अपनी नश्वर काया का परित्याग करने के बाद भी उनके द्वारा प्रदर्शित पथ पर चलता रहता तो यह विश्वास केसाथ कहा जा सकता है कि स्वदेश स्वतंत्र तो होता ही वह खंडित कदापि नहीं होता। स्वतंत्र भारत केसमक्ष आज भी समस्याओं का तान-वितान तना हुआ है। कश्मीर की केसर क्यारियों से लेकर कामाख्या तक विघटनकारी तत्व खंडित भारत की अखंडता को चुनौती दे रहे हैं। योगेश्वर श्रीकृष्ण की पद रज से पावन और देव दयानंद की जन्मदायिनी के रूप में धन्य हुई गुजरात की धरा तक में राष्ट्रद्रोही तत्व अपने कोप का प्रदर्शन करने का दुस्साहस दर्शाते हैं तो महान राष्ट्र नायक शिवाजी और स्वयं लोकमान्य तथा वीर सावरकर को गोदी में खिलाकर धन्य हुए महाराष्ट्र तथा आदि शंकर की जन्मस्थली केरल धरा में भी राष्ट्र की एकता और अखंडता को खंडित करने की दुरभिसंधि अपने मानस में संजोए अनेक तत्व सक्रिय हैं।

इन संकटों पर पार पाने हेतु लोकमान्य तिलक की चिंतन धारा के अनुरूप राष्ट्र के कर्णधारों का व्यवहार ही एकमात्र त्राण पथ है। उनका जीवन दर्शन यही प्रेरणा प्रदान करता है कि आसुरी प्रवृतियों का शमन करने में दृढ़ता का अनुगमन ही युग धर्म है। मत-मजहब, पंथ और सम्प्रदाय के प्रति तुष्टिकरण नहीं अपितु इन सबसे ऊपर उठकर राष्ट्र की परम आराध्य भाव का जन-गण में विस्तार तथा सभी से यथायोग्य व्यवहार ही सबल, सुदृढ़ और गौरव-गरिमा युक्त स्वतंत्र भारत के सृजन का महामंत्र है। वैश्वीकरण और खुले बाजार के महाजाल ने तो राष्ट्र की स्वतंत्रता को चुनौती दी ही है साथ ही अनीति, अधर्म, अन्याय, शोषण पर लगी नैतिक मर्यादाओं का तिरोहित होते जाना भी एक अशुभ संकेत है।

दिगभ्रमित राष्ट्र को लोकमान्य के आग्नेय व्रत से युक्त जीवन वृत से मिला प्रकाश ही उबारने में समर्थ हो सकता है ऐसी हमारी आस्था है। भारतीय संस्कार के जिस दीपक को उन्होंने अपने श्रम और चिंतन तथा साधना का घृत प्रदान किया था, उसको प्रकाशित और आलोकित रखकर ही हम नैराश्य की राष्ट्र जीवन में पसरती छाया का पटल हटाने में समर्थ हो सकेंगे। राष्ट्र के नायकों का भी उनके प्रेरक जन्मदिवस पर उनके इस आह्वान पर ध्यान अभीष्ट है।

"समाज में वास्तविक मान-सम्मान पाने के लिए गुण ही प्रभावी होते हैं जाति और वर्ण नहीं। हमें राजनीति में भी तथा अपने नित्य के जीवन में भी इस बात पर बल देना चाहिए कि आदमी का महत्व उसकेअपने चरित्र से बनता है।"

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

आपस की फूट पिशाचिनी

दुर्दैव से फुट का जहर इस तरह फैल चुका है कि कोई भाग भी अछूता नहीं रहा। वार्षिक अधिवेशन, निर्वाचन अशोभनीय विवाद स्थल बन गए हैं। मुकदमे, इंजैक्शन और झगड़े प्रतिदिन की घटना है।

कितना अपमान, कितनी पीड़ा, इन सब कांडों से सच्चे आर्यों को होती है इसकी तनिक भी कल्पना यदि लड़ने वालों ने की होती तो उनका हृदय भी रो पड़ता।

अपना मान-गौरव और गरिमा सरे बाजार नीलाम होते देख भी जिन्हें लज्जा अनुभव नहीं होती, उनकी सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना करने के अतिरिक्त और किया ही क्या जा सकता है। घर जलाकर हाथ सेंकने का आनन्द उठाने वाले शायद स्वयं भी यह नहीं जानते कि वे कितना बड़ा अपराध कर रहे हैं। लक्ष्य भूला, मार्ग से भटके, तप-त्याग-साधना तो गहरे गर्त में गए, छा गयी यह फूट पिशाचिनी। ताड़का वध के लिए राम-लक्ष्मण के धनुष चाहिएं या आर्यत्व का सच्चा आरम्भ। कुछ भी हो, फूट-विष-घट फूटना ही चाहिए अन्यथा कुछ भी तो जीवित नहीं रहेगा।

वेद प्रचार सप्ताह आ रहा है...

उठो, भाई उठो, अब नींद खोलो, आलस्य छोड़ो, झगड़ों से ध्यान हटाओ और वेद प्रचार सप्ताह उत्साह से मनाने की तैयारी करो।

व्रत रखो, एक दिन का धन अपने-अपने समाज को वेद प्रचार सप्ताह के लिए दान दो और अपने समाज के मंत्री महोदय से कर बद्ध प्रार्थना करो, कि हे ऋषि दयानन्द के उत्तराधिकारी ! जाग और इस बार **'वेद संदेश'** अपने क्षेत्र में पूरी शक्ति से फैला।

मंत्री महोदय, देव दयानन्द की आज्ञा मानें और व्रत लें कि इस बार वेदप्रचार सप्ताह में अपने क्षेत्र के हर व्यक्ति तक वेद का संदेश पहुचायेंगे।

वेदप्रचार सप्ताह में निम्न विषयों पर भाषण कराइये—**१. वेद ही क्यों? २. वेद का महत्व ३. ईश्वरीय ज्ञान वेद ४. वैदिक धर्म की प्रमुख शिक्षाएं ५. वेद और अन्य मत ६. वेद और विज्ञान ७. वेद द्वारा निर्दिष्ट समाज की व्यवस्था आदि।**

यदि विद्वान् पुरोहित न भी मिलें तो स्वयं ऋषि ग्रंथ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से स्वाध्याय कर निम्न विषयों का प्रचार करें। प्रतिदिन वैदिक साहित्य बांटें। आर्यों के घरों में चारों वेद आएं और सभी मिलकर वेद के स्वाध्याय का व्रत लें। कुछ ऐसा करो आर्य जन ! कि वेद प्रचार सप्ताह पर सारा देश वेद की ध्वनि से गुंजायमान हो उठे। अज्ञान कांपे, पाखंड भागे और सत्य की थिरकन से आनन्द शांति का संदेश सर्वत्र मुस्कराए।

छोड़ो, नींद, आलस्य आर्यो ! अब तो जाग जाओ ! **हमारे साथ आओ। हमारी बात मानो। हमें दयानन्द का काम करना है।**

कभी-कभी निराशावादियों की बातें कानों में आती हैं तो डर लगने लगता है पर प्रभु की गोदी में बैठकर निर्भय होकर मन कहता है कि नहीं-निराश मत हो, आगे बढ़। जो सपने तूने देखे हैं वे तेरे दुनियां से जाने से पहले पूरे होंगे।

दयानन्द के अनुयायी वीरो ! प्रभु की यही प्रेरणा हमारी पूंजी है। इसी के बल पर आप को भी पुकारता हूँ—आओ, मेरे साथ आओ ! और सब कुछ भूल जाओ, याद केवल यह रहे हमें दयानन्द का कार्य पूरा करना है।

हम ऋषि के लक्ष्य के लिए जिएंगे, उसी के लिए मरेंगे। मरते समय भी यही पुकारेंगे—ऋषिवर दयानन्द की जय। दयानन्द की जय के लिए क्रांति करनी है। विचारों की क्रांति का यज्ञ तो हमने बिना सामग्री के आरम्भ कर दिया। फिर भी यज्ञाग्नि बुझ नहीं सकती। आज नहीं तो कल बुद्धि को प्रेरणा मिलेगी-हम नींद से जागेंगे, साहित्य के महत्व को समझेंगे।

शहीद लेखराम के खून की अंतिम पुकार की शपथ खाकर हमने यज्ञ आरंभ कर दिया है। ज्वाला जल रही है, हम अपने सर्वस्व की आहुति दे चुके। हमें तो ज्योति फैलानी है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

मान्यबन्धु ! सादर नमस्ते।

रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर मंगलकामनाएं स्वीकार करें। विश्वास है राखी बंधवाते समय अपनी इस बहन के उस अभियान का स्मरण आपको अवश्य होगा ही, जो वैदिक संस्कृति एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान और अपनी परम्पराओं को तथा अपने परिवार और बच्चों को आधुनिक पश्चिमी सभ्यता के प्रवाह से रक्षण हेतु **"दयानन्द संस्थान"** एवं **"जनज्ञान मासिक"** के माध्यम से चलाया जा रहा है।

महर्षि दयानन्द का आदेश है कि प्रत्येक परिवार में अपने **धर्मग्रन्थ "वेद"** का पारायण होना ही चाहिये। उसी संदर्भ में महात्मा वेदभिक्षुः का आह्वान था कि प्रत्येक घर में प्रभु की वाणी "वेद" पहुंचना चाहिये। आपका **"दयानन्द संस्थान"** और **"जनज्ञान मासिक"** उस दिशा में अपनी पूरी शक्ति से सक्रिय हैं—और यह शक्ति आपकी सहयोग भावना ही हमें प्रदान करती है।

संस्थान द्वारा अभी तक देश विदेश में कई लाख परिवारों में, मन्दिरों में, अनेक मठों और गुरुद्वारों में परमपिता परमात्मा की अमरवाणी "वेद" और अन्य वैदिक साहित्य लागत से भी कम मूल्य पर सुलभ कराया जा चुका है।

महात्मा वेदभिक्षुः द्वारा स्थापित सेवाश्रम वेदमन्दिर इब्राहीमपुर दिल्ली-३६ में गौशाला के अलावा एक वर्ष से धर्मार्थ औषधालय भी संचालित हो रहा है। बालक-बालिकाओं को संस्कृत भाषा का ज्ञान तथा सन्ध्या-हवन अनुष्ठान के प्रति रूचिवान बनाया जा रहा है। समय-समय पर योग शिविरों का आयोजन भी वहां होता है। जिसमें स्वामी सत्यपति जी एवं संस्थान के आचार्य स्वामी जगदीश्वरानन्द मार्गदर्शन देते हैं। इन सभी गतिविधियों को सक्रिय रखने में प्रभु कृपा और आपका सहयोग ही हमारा संबल है।

मुझे विश्वास है राखी के धागों को अपनी कलाई में बांधते समय इस बहन के संकल्प का, जो आपका अपना भी है स्मरण करते हुए अधिक-से-अधिक धनराशि सहयोग स्वरूप भेजकर वैदिक विचारधारा के प्रचार में लगी बहन के प्रति अपना दायित्व निभायेंगे।

सहयोग राशि किसी भी बैंक का ड्राफ्ट "दयानन्द संस्थान" के नाम बनवाकर अथवा धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा **दयानन्द संस्थान** करौलबाग, नई दिल्ली-५ के पते पर भेजें। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं।

परमपिता परमात्मा समस्त परिवार पर सुखों की वर्षा करें।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ –आपकी बहन
राकेशरानी
अध्यक्ष

बुश–मुशर्रफ भेंट

पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ की अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश से कैम्प डेविड आरामगाह में भेंट से अपेक्षित परिणाम ही निकला है। पाक विपक्ष असंतुष्ट है तो इसका कारण यही है कि उसकी उम्मीदें बहुत बढ़ी-चढ़ी थीं। वे उम्मीदें पूरी नहीं हो पाईं और जनरल मुशर्रफ ने भेंट के बाद निर्धारित संवाददाता सम्मेलन से कतराना ही बेहतर समझा। चाहे सवाल भारत से बातचीत का हो या आतंकवाद के खिलाफ कदमों का, जनरल मुशर्रफ की कभी गरम और कभी नरम बातें करने का सिलसिला थमने वाला नहीं है। यह उनकी सुविचारित शैली है। फिर भी, जार्ज बुश से भेंट के बाद वाशिंगटन के शांति संस्थान में अपने भाषण में उन्होंने उपमहाद्वीप में 'ऐतिहासिक शांति प्रक्रिया में प्रधानमंत्री वाजपेयी के साथ साझीदार' होने की बात कही और भारत से पाकिस्तान के मुकाबले 'बड़ा देश होने के नाते उदारता' दिखाने की अपील की। कश्मीर का जिक्र करना वे नहीं भूले। यह भी दावा किया कि नियंत्रण रेखा पर एक चिड़िया भी नहीं उड़े इसकी गारंटी वे नहीं दे सकते। लेकिन अमरीकी प्रशासन के सूत्रों ने मुशर्रफ से सीमा पार घटनाओं को रोकने के लिए सौ फीसदी कोशिशें करने की अपेक्षा व्यक्त की है। जाहिर है कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में पाकिस्तान को सहयोग के लिए धन्यवाद देने की बात सामान्य शिष्टाचार है। ऐसा ही सवाल उत्तर कोरिया के साथ पाकिस्तान के परमाणु सहयोग का है। बुश के साथ मुशर्रफ की बातचीत में इस मुद्दे के उठने को स्वीकार भी किया गया है। मुशर्रफ के लिए एक और अप्रिय बात पाकिस्तान में लोकतंत्र कायम करने के प्रयासों की है। वहां चुनाव हो चुके हैं, प्रधानमंत्री और उनका मंत्रिमंडल भी है, फिर भी लोकतंत्र पर जोर दिए जाने से स्पष्ट है कि हकीकत अमरीका से छिपी नहीं है। अमरीकी अधिकारियों का कहना है कि उक्त बातों को शर्त के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। लेकिन इस किसी शर्त से कम भी नहीं माना जा सकता। पाकिस्तान को दी जाने वाली तीन अरब डालर की सहायता की किस्तों को अमरीकी संसद मंजूर करेगी और वह इन मुद्दों को प्रगति के आधार पर ही हर वर्ष मंजूरी देगी।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने एफ-१६ विमानों की आपूर्ति पर जोर दिया। अमरीकी सेंट्रल कमान को उन्होंने इसके लिए तैयार भी कर लिया बताते हैं। लेकिन नए विमानों को हरी झंडी नहीं मिल पाई। पाकिस्तान को दिए जा चुके एफ-१६ विमानों को ही कार्यक्षम बनाने के लिए अमरीका राजी हुआ। जाहिर है उसे भारत की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखना था क्योंकि नई दिल्ली ने अभी तक इराक में सेना भेजने के सवाल को अटकाया हुआ है मुशर्रफ फौजी साजो-सामान की लम्बी लिस्ट लेकर गए थे। उन्होंने परम्परागत हथियारों में भारत के आगे निकल जाने और शक्ति संतुलन बिगड़ जाने की दलीलें भी भरसक दीं। कई दशकों से चले आ रहे पाक-अमरीकी संबंधों को देखते हुए अमरीका को पता है कि पाकिस्तान की सेना को संतुष्ट रखना जरूरी है। तभी मुशर्रफ की स्थित मजबूत रह पाएगी।

(२७ जून "राजस्थान पत्रिका" से साभार)

संसद की सुरक्षा

भारतीय लोकतंत्र के आधार स्तंभ संसद भवन की सुरक्षा हर हालत में की जाय, इसमें दो राय नहीं हो सकतीं और खासतौर पैर तब जब १३ दिसम्बर २००१ को दुस्साहसिक आतंकवादी हमले से दो-चार होना पड़ा हो। सुरक्षा मामले की संयुक्त संसदीय समिति ने संसद भवन के अंदर और बाहर की सुरक्षा के मसले पर गहरी समीक्षा करने के बाद बुधवार को जो भी निर्णय लिये हैं, वे न केवल जरूरी प्रतीत होते हैं बल्कि कुछ हद तक महत्वपूर्ण भी हैं। चूंकि १३ दिसम्बर के हमले का उद्देश्य भारतीय लोकतंत्र को सीधी चुनौती देना था, इसलिए उस चुनौती का माकूल जवाब देना भी आवश्यक था, जो उस दिन दिया गया। भावी हमले से बचाव के लिए एहतियाती कदम उठाने की जरूरत सामयिक हो सकती है और इसे एक सीमा तक उचित भी कहा जा सकता है, लेकिन क्या इन उपायों से फुलप्रूफ सुरक्षा हो सकती है? बहरहाल, लोकसभा उपाध्यक्ष पी एम सईद की अध्यक्षता में समिति का यह फैसला है कि संसद भवन पर परमाणु, रासायनिक या जैविक हथियारों से हमला होने की स्थित में विशिष्ट व्यक्तियों को बचाने के लिए भूमिगत दो बंकर बनाये जाएं। सवाल उठता है कि क्या ऐसा व्यापक आतंकी हमला संसद पर हो सकता है जिसकी संभावना पर निर्णय लिये गये हैं? क्या ये उपाय अमरीकी ह्वाइट हाउस की अनुकृति तो नहीं है? दूसरे फैसले के अंतर्गत ऐसे उपकरण लगाने की बात कही गयी है, जिससे लोकसभा, राज्यसभा और केन्द्रीय कक्ष में इन हथियारों से उत्पन्न विकिरण प्रवेश न कर पायें। इन दोनों फैसलों की जरूरत और उसके महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता। यह

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

अनुपम पत्रिका

मान्य वहिन जी, नमस्ते। मुझे समझ नही आ रहा कि आपको किससे उपमा दूँ। वास्तव में अपने कार्यक्षेत्र में आप अनुपम महिला हैं। आपके द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित 'जनज्ञान' (मासिक) की एक-एक पंक्ति राष्ट्रीय भावना से भरपूर होती है। जून अंक में एक ओर जहां महान् राष्ट्रभक्त श्यामाप्रसाद मुखर्जी पर खोजपूर्ण लेख हैं, वहीं गुरुग्रन्थ साहिब में वैदिक विचारों का दिग्दर्शन है। वेद उदार हैं—हिन्दू मात्र को जोड़े हैं, सबके सम्मानीय हैं।

समय-समय पर जनज्ञान में वीर सावरकर, हकीकतराय, भगतसिंह आदि जैसे बलिदानियों की प्रेरक गाथायें प्रकाशित होती रहती हैं। जून अंक में ही मोहित सेन जैसे कम्युनिस्ट की आत्मकथा के जो अंश आपने प्रकाशित किये हैं वे साम्यवादियों के दूषित राष्ट्रविरोधी कार्यों का कच्चा चिट्ठा खोलते हैं। जो साम्यवाद अपनी जड़ें विदेशों में खोजता है, वह भारत-हितैषी कैसे हो सकता है। मैं दिल्ली के एक साम्यवादी नेता के सम्पर्क में आया। प्रत्येक समस्या पर उनका दृष्टिकोण टरकाऊ और लटकाऊ दिखा। अन्ततोगत्वा किसी भी समस्या के लिये उनके पास जाना छोड़ दिया। ये किस बात के साम्यवादी हैं। शुद्ध चरित्र नहीं, व्यसनों (सिगरेट-शराब) से दूर नहीं। ये क्या जन कल्याण कर सकते हैं। वास्तव में यह सब केवल राजनीतिक प्रपंच है। सच्चा 'समाजवाद केवल वैदिक समाजवाद है। जून अंक में ही डॉ. कैलाशचन्द्र का पत्र आंखें खोलने वाला है। प्रो. जयदेव आर्य का स्वामी दीक्षानन्द सम्बन्धी लेख उनकी गरिमा के अनुकूल है। आप अनुपम हैं, बधाई की पात्र हैं। **(कृष्णलाल पूर्व रीडर संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) विश्वनीड, ई-९३७, सरस्वती विहार, दिल्ली-३४** •

सराहनीय सम्पादन

आदरणीया वहन! आपको मैं कई दिनों बाद पत्र दे रहा हूँ कारण इधर मेरा काफी नुकसान हो गया। आपने समाचार पत्रों में पढ़ा ही होगा तथा टी.वी. पर देखा भी हो कि कलकत्ता में सत्यनारायण ए/सी मार्केट में अप्रैल की एक रात आग लग गई थी जिसमें करोड़ों का नुकसान हो गया था। उसमें मेरी भी दो दुकानें थीं। ईश्वर की न्याय व्यवस्था में कोई अन्याय नहीं होता। हमारे किये कर्म चाहे इस जन्म के हों चाहे पूर्व जन्मों के हों उन्हीं का फल हमें मिला है। तो हमें शान्ति व धैर्य से सहन करना चाहिये। यही सोचकर सन्तोष किये हुए हैं। बहन जी, आपने जनज्ञान में मेरा एक लेख 'महर्षि में शिव के दर्शन' शीर्षक का बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रकाशित किया, इसके लिये आपको धन्यवाद।

खुशहालचन्द्र आर्य, १८०, महात्मा गांधी मार्ग, कोलकाता

जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामना

आदरणीया, पं. भारतेन्द्रनाथ जी (वेदभिक्षुः) द्वारा लगाया गया वेद प्रचार वट वृक्ष आपका श्रम सीकर पाकर पल्लवित-पुष्पित होते हुए जन मानस को वेद ज्ञान की शीतल छाया में मानसिक शान्ति प्रदान कर रहा है। भारत मां आप जैसी ऋषिका को पुत्री रूप में पाकर धन्य हो गई जो 'आ नो भद्राः क्रतवोयन्तु विश्वतः' का प्रचार-प्रसार सर्वतः कर रही हैं। जनज्ञान मार्च १९८४ 'महात्मा वेदभिक्षुः स्मृति अंक' की सम्पादकीय से लिखी आपकी पंक्तियां बरबस याद आ रही हैं जिसमें आपने लिखा है—**"उसके विचारों में भी देव दयानन्द की क्रांन्ति की भावना है जो हमने (आपके पिताजी ने) मुन्नी को प्रदान की है। यह अनुमान कितना सही रहा, यह मैंने उनके साथ विताये समय में भली-भांति अनुभव किया। मेरे पिताजी ने जैसे क्रांतिकारियों के जीवन चरित्र मुझे पढ़ाये और बताये थे वैसे ही क्रांतिकारी की सहधर्मिणी बनकर वास्तव में ही मैं धन्य हो गई।"**

जीवन के अनेक झञ्झावातों में कुशल नाविक की तरह वेद-प्रचार के साथ राष्ट्रीयता की भावना का अलख जगाते हुए आपने कर्णधार बन 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' को जीवन में आत्मसात् कर अपने जीवन वृत्त से मूल्यवान बना दिया है। जीवन का प्रत्येक क्षण कुछ करने की तड़प लेकर बीतता है। जो देव-दयानन्द का जीवनव्रत था।

'विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतितन्यमाना, प्रारम्भ चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति' इस सूक्ति को साकार रूप देने वाली मेरी श्रद्धेया बहन जी आपके जन्मदिन पर मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि जिस भाव-धारा को शब्द के तट-बन्ध अपने में बांध नहीं पाते। प्रभु आपको स्वस्थ व दीर्घायु प्रदान करें जिससे वेद एवं वैदिक धर्म का प्रवाहमान स्रोत अजस्र धारा का रूप ले सके और सभी उसमें अवगाहन करते रहें। इसी शुभकामना के साथ वेद प्रचार यज्ञ में १५१/- की हवि आज ही धनादेश द्वारा प्रेषित कर

रहा हूँ। भूरिशः शुभकामनाओं के साथ। शशिभूषण आर्य, शीतल माझा (रूद्रपुर), देवरिया (उ. प्र.)

डॉ. रघुवीर का जन्म शताब्दी वर्ष

संपादक महोदया, भारत की स्वतंत्रता के लिये हजारों देशभक्तों ने अपने जीवन कुर्बान कर दिये। अनेक मनीषियों ने सपने संजोये थे कि भारत स्वतन्त्र होगा तो भारत की गरिमा फिर से स्थापित करेंगे। भारत एक महान् राष्ट्र बनेगा, भारत विश्व की अजेय शक्ति बनेगा। हमारी श्रेष्ठ संस्कृति भारत में पुनः उत्कर्ष को प्राप्त होकर जग को भी आलोकित करेगी। भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी पूरे विकास के साथ संसार में अपना उचित स्थान प्राप्त करेगी। एशिया के अनेक देश जो भारत की ओर श्रद्धा और प्रेम से देखते हैं, भारत को पुण्य भूमि मानते हैं, उन सबके सहयोग से विश्व में भारत का स्थान अग्रणी बनेगा, ऐसी भावना रखनेवाले और इसके लिये अथक परिश्रम करने वाले आचार्य डॉ. रघुवीर का यह जन्म शताब्दी वर्ष है। आचार्य रघुवीर ने इन्डोनेशिया, थाईलैंड, कम्बोडिया, चीन, जापान, कोरिया और मंगोलिया में विद्यमान संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थ, उनके अनुवाद और उन देशों में प्रचलित संस्कृत मन्त्रों तथा उन देशों द्वारा संस्कृत के आधार पर रचे गये साहित्य का विपुल संग्रह किया, हिन्दी के लिये चार लाख वैज्ञानिक और पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया ताकि हिन्दी संसार की सर्वाधिक विकसित भाषा बने और अपनी भाषा के द्वारा हमारे विद्यार्थी विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि विषयों में अधिक उन्नति करें। यह शब्दावली संस्कृत पर आधारित होने के कारण भारत की सभी प्रान्तीय भाषाओं के लिये समान रूप से उपयोगी है।

इस शब्दावली के द्वारा सभी भारतीय भाषाएं भी निकट आ जाती हैं। अतः भारत की एकता अधिक प्रगाढ़ हो जाती है। यहां तक कि श्रीलंका देश में भी इस शब्दावली का प्रयोग उत्साह से किया जाता रहा। आचार्य रघुवीर जी का कार्य भारतीयों के लिये बहुत ही प्रेरणाप्रद है। चाहे देर से ही सही किन्तु आचार्य रघुवीर जी का जीवन चरित्र अब आदित्य प्रकाशन दिल्ली ने प्रकाशित किया है जिसे पढ़कर बड़ी प्रेरणा मिलती है। आज राष्ट्र भाषा हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति की जो विपन्नावस्था है ऐसी स्थित में आचार्य रघुवीर जैसे मनीषियों का कार्य जन-जन में अपनी भाषा और संस्कृति की रक्षा करने की प्रेरणा देता है।

डॉ. कैलाशचन्द्र, हिन्दू संस्कृति प्रतिष्ठान ३३१, सुनहरी बाग अपार्टमेंट, रोहिणी, से.-१३, दिल्ली-८५

भारत के आकाश पर भारतेन्द्र सा जीव चमक रहा वह आज भी बिना प्राण सजीव

❑ आचार्य यादकुमार याद

पुत्र शारदा देविके, भारतेन्द्र नाथ
जिनके पति वे पण्डिता, रानी सोम सुमाथ॥
दिव्य ज्ञान जनज्ञान की, स्वामिनी जो राकेश।
रानी भी जो पण्डिता, ध्याती जो यज्ञेश॥
यज्ञ देव से देव को आहुति करें प्रदान।
अमृतत्व प्राप्तव्य हित, बांटे जन को ज्ञान॥
कस्मै देवाय हविषा, विधेम कह आहूति।
वही देव परमात्म है, और किसे आहूति॥
यँज्ञरूप है प्रणव है, प्रणव रूप ही यज्ञ।
जो इनको ध्याये प्रखर, वही सबों में अज्ञ॥
ज्ञ, सौ ही सर्वज्ञ है, सर्वात्मा श्री राम।
सूक्ष्मति सूक्ष्म की लस्य, मध्ये ही अभिराम॥
भारत के आकाश पर भारतेन्दु सा जीव।
चमक रहा वह आज भी, बिना प्राण सजीव॥
स्वयं वेदभिक्षुः बने, दे दी सबको सीख।
वानप्रस्थ सर के रहे, आजीवन राजीव।
चली उन्हीं के मार्ग पर, अर्धांगिनी स्वरूप।
शेष कार्य उनके बचे, पूर्ण करे जो रूप॥
उनका ही ये जन्म मना रहे हम आप।
रहे प्रफुल्लित पल्लवित इनका सदा प्रताप॥
धवल ज्योत्सना सी विमल, रानी श्री राकेश।
और संग में पण्डिता, ज्यों प्रकृति संग ईश॥
जनज्ञान से मिल रहा, जन-जन को श्रुति ज्ञान।
वही पण्डिता दे रहीं, देवी सम विज्ञान।
सन्तों की आयु नहीं उनका विमल प्रताप।
कृपा उन्हीं की मेटती, पाप, ताप, सन्ताप॥

सीताराम वाजार, दिल्ली द्वारा
(८ जून जन्मदिवस पर शुभकामना)

(पृष्ठ ४ का शेष)

आओ, साथ आओ आहुति दो और धरती के प्रत्येक मनुज के मन मंदिर पर 'ओ३म्' पताका लहराने के लिये जो कुछ भी कर सकते हो, करो।

दयानन्द का संदेश फैलाने के लिए एकाकी चरण बढ़ाते हम आपको ऋषि भक्तों को पुकार रहे हैं।

भारतेन्द्रनाथ (महात्मा वेदभिक्षुः)
(जनज्ञान मासिक, १५ जुलाई १९६९ से...)

ईश्वरीय ज्ञान—वेद : एक वैज्ञानिक विवेचन

❑ डॉ. सत्यपालसिंह

हजारों-लाखों सदियाँ बीत गई। काल का प्रवाह गंगोत्री की पवित्र गंगा की तरह अविच्छिन्न बहता रहा। हजारों-लाखों पुस्तकें (शास्त्र, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, काव्य, साहित्य) लिखी गई—सब पुस्तकों के लेखकों का नाम सुरक्षित रहा। पर किसी देहधारी ने वेदों के बनाने वाले को साक्षात् कभी नहीं देखा। किसी भी भारतीय ऋषि, मनीषी, पण्डित को कभी यह सन्देह नहीं हुआ कि वेद सृष्टि के आरम्भ में प्रकाशित नहीं हुए तथा ईश्वरीय ज्ञान नहीं हैं। महर्षि व्यास ने दोनों हाथ उठाकर महाभारत में घोषणा की—

अनादिनिधना नित्या वाग् उत्सृष्टा स्वयम्भुवा। आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः॥ (महा., शान्तिपर्व, २३)

स्वयम्भुव ब्रह्मा प्रजापति ने आदि और निधन रहित नित्य वाक् को उत्सृष्ट किया, सृजन किया। आदि में वेदमयी दिव्य वाक् थी। उस वाक (वाणी) से संसार की सब प्रवृत्तियाँ हुई।

वेदज्ञान सृष्टि के आदि में मनुष्य मात्र के लिये देव वाणी में दिया गया। जहाँ ईश्वर—परम चेतन तत्त्व हमारे विषय का मूल हो, जहाँ शुद्ध आत्माओं द्वारा ईश्वर के अमरज्ञान वेद को हृदयंगम करने के सवाल की वैज्ञानिक जाँच करनी हो, तो आश्चर्यजनक व क्रांतिकारी प्रगति करने वाला आधुनिक विज्ञान भी छोटा पड़ जाता है। अभी साइंस की दुनिया में जानने के लिये इतना कुछ बाकी है कि सहसा मुझे महान् वैज्ञानिक न्यूटन की उक्ति याद आ जाती है। अपने स्वागत-सम्मान समारोह में न्यूटन ने कहा था—"मैं तो ज्ञान समुद्र के किनारे सिर्फ कुछ अच्छी कंकरियाँ चुनने में सफल हुआ हूँ—जल रूपी विशाल ज्ञानराशि को तो मैं अभी स्पर्श भी नहीं कर पाया।" पिछले कुछ वर्षों में विज्ञान ने खगोल विज्ञान, ह्यूमन जिनोम (मानव संरचना) आदि क्षेत्र में अनेक नये तथ्यों का पता लगाया। पर आधुनिक विज्ञान वाणी के क्षेत्र में, भाषा के मूल को जानने के लिये कोई विशेष उपलब्धि न कर पाया।

जहाँ तक वेद की प्राचीनता का सवाल है इसमें विद्वानों में कोई अधिक भेद नहीं है। वेद की पुस्तक प्राचीनतम है ऐसा दूसरे धर्म वाले लोग भी मानते हैं। मुसलमानों की कुर्आन शरीफ में बाईबिल का जिक्र है तथा खुदा चार सन्दूकों से निकालकर ज्ञान देता है ऐसा लिखा है। चार सन्दूक—चार वेद ही हैं ऐसा कुछ विद्वान् मानते हैं। बाईबिल में पारसी धर्म-पुस्तक जन्दा-अवेस्ता का वर्णन है तथा जन्दा-अवेस्ता में वेदों का वर्णन है। चारों वेदों में कहीं किसी विशेष जाति का, समय का, जगह का वर्णन नहीं आया। उसमें मनुष्य के काम आने वाली सभी बातों का वैज्ञानिक वर्णन है।

विज्ञान के हिसाब से "वेद ईश्वरीय ज्ञान है" इस पर चार विभिन्न तरीकों से, तर्कों से मैं अपने विचार विद्वज्जनों के सामने रखने की कोशिश कर रहा हूँ।

१. वैज्ञानिक दृष्टि—विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक आईस्टीन के अनुसार अगर किसी बात को वैज्ञानिक सिद्धान्त की तुला पर तोलना हो तो उसकी तीन कसौटियाँ हैं—सरलता, एकात्मकता एवं प्रकाशमयता।

अ. सरलता—सरलता के दो पहलू हैं—पहला है इसका विस्तार—अर्थात् यह छोटी से छोटी बात से लेकर बड़े से बड़े रहस्य को समझा सके। तथा दूसरा है इसकी संक्षिप्ता, अर्थगम्यता - न इसमें कुछ बेकार हो और न दुनिया का कोई ऐसा विषय हो जो उसमें न आया हो। वेद के अन्दर मनुष्य जीवन की छोटी-छोटी सभी विधाओं का सरलता से, सुन्दरता से वर्णन किया गया है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक विषयों से लेकर गम्भीर खगोलीय आदि विद्या तक सभी विषयों का समावेश है। वेद का एक-एक छन्द, एक-एक शब्द, एक-एक वर्ण सार्थक व वैज्ञानिक है।

ब. एकात्मता—मानव शरीर की तरह जहाँ सब घटक एक दूसरे के पूरक हैं तथा सम्पूर्ण से पूरी तरह जुड़े हैं। वेद के अन्दर चार विषय—ज्ञान, कर्म, उपासना व विज्ञान एक दूसरे के साथ सन्निहित हैं। आपस में कहीं कोई विरोध नहीं है। सभी मनुष्य-निर्माण व उसकी प्रगति के लिये समर्पित हैं। **यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे** के अनुसार आरम्भ से लेकर अन्त तक सभी जगह शक्ति और सुन्दरता का समन्वय है।

स. प्रकाशमयता—जो सिद्धान्त सूर्य की तरह स्वयं प्रकाशित है तथा दूसरी चीजों को भी प्रकाशित करता है। स्वयं सत्य है तथा दूसरे तथ्यों को परख सके। वेद तो स्वयं ज्ञान प्रकाश का स्रोत है, स्वयं प्रमाण है तथा सब सत्य विद्याओं का प्रकाश तथा पक्षपात हीन धर्म का प्रतिपादन करता है। उसे अन्य किसी प्रमाण की जरूरत ही नहीं।

इन तीनों कसौटियों पर वेद खरा उतरता है—अर्थात् पूर्णतया वैज्ञानिक है। जिन्होंने भी वेद के अन्दर असत्य, अनर्गल, असम्बद्ध तथा ऐतिहासिक बातें होने का विधान सिद्ध किया है वे या तो वैदिक वाड्मय से पूर्णतया अनभिज्ञ हैं अथवा विदेशी जूठन का रसास्वादन करने वाले पूर्वाग्रस्त लोग हैं।

२. वाक् एवं भाषाविज्ञान—आधुनिक भाषाशास्त्री मानते हैं कि मनुष्य ने धीरे-धीरे पक्षियों व जानवरों को देखकर बोलना सीखा। शुरु में मानव भाषा बहुत ही संक्षिप्त, कामचलाऊ थी। समय के प्रवाह के साथ भाषा समृद्ध होती गई और उसके विभाग, परिवर्तन होते गए। पर ये भाषाशास्त्री इस बात को मानने में असमर्थ हैं कि आज के वैज्ञानिक युग में भी अगर किसी नवजात शिशु को जंगल में छोड़ दिया जाये तो वह भाषा सीखना और बोलना तो दूर, दो पैरों पर खड़ा होना भी नहीं सीख सकता। तो सृष्टि के आरम्भ में बिना किसी के सिखाये मनुष्य कैसे सीखा? वेद तो कहता है कि सृष्टि-यज्ञ में मनुष्य बनने से पूर्व अग्नि, पृथ्वी, चन्द्र, ग्रह आदि देवताओं की विचित्र गतियों से जो ध्वनियाँ उठीं, और जो दैवी गान होते थे, वे ही ये वेदमन्त्र हैं। यह देववाणी पहले आकाशीय ऋषियों में आयी और बाद में पार्थिव ऋषियों की हृदयगुहा में प्रकट हुई। इसलिये वेद को श्रुति प्रकृति की आवाज कहा गया है।

तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे, यजुस्तस्माद् अजायत॥ (ऋ. १०.९०.९)

अर्थात् उस (दैवी) यज्ञ से जो सर्वहुत यज्ञ था, उससे ऋचाएं, यजुः, साम उत्पन्न हुए। वेद की वाणी आकाशीय है। इसी तर्ज पर मुस्लिम लोग कुर्आन शरीफ को 'आसमानी किताब' कहते हैं।

वैदिक भाषा अपौरुषेय है क्योंकि वर्णमाला अपौरुषेय है। वर्णमाला का प्रत्येक वर्ण सार्थक है। वेद का प्रत्येक शब्द वर्णानुसार अर्थ रखता है। प्रत्येक वर्ण का अपनी बनावट के आधार पर अर्थ है। अक्षर तो अविनाशी हैं। शब्द नित्य हैं आकाश की तरह। शब्द तो ऊर्जा हैं तथा आकाश में फैले हैं। जिसके पास जितना अच्छा व शक्तिशाली ऐंटिना है, रेडियो है वह उतनी ही अच्छी तरह उसको पकड़ सकता है। वेद ने कहा कि ग्रहों आदि की गतियों से जो आवाज पैदा हुई वही तो देववाणी थी, उसी देववाणी से मानुषवाणी बनी और उस आरम्भिक वाणी से दुनिया की अलग-अलग भाषाएँ, बोलियाँ बनीं।

सभी वैज्ञानिक तथा विचारशील लोग इस बात को मानते हैं कि यह दुनिया कभी बनी। इसके समय के बारे में लोगों में मतभेद हो सकते हैं पर यह बनी जरूर, चाहे करोड़ों वर्ष पूर्व अथवा अरबों वर्ष पूर्व। क्या उस आरम्भिक अवस्था के, उस समय के वातावरण के कुछ अवशेष कहीं ब्रह्माण्ड में होंगे? जैसे बहुत चीजों के बारे में वैज्ञानिक पता लगा चुके हैं। विश्व की उस प्रारम्भिक अवस्था का नाम वैज्ञानिकों ने कॉस्मिक माइक्रोवेव वैकग्राउंड (सी.एम. बी.) दिया। आकाश में इसका पता लगाने के लिये वर्ष १९९८-९९ में अमेरिका के बर्कले विश्वविद्यालय ने तीन बड़े गुब्बारेयुक्त प्रयोग किये जिनके नाम थे—मैक्सिमा, बूमरेंग, एवं डासिल। ये नासा से छोड़े गये। वैज्ञानिक प्रयोगों से यह पता चला कि शुरु का सघन ब्रह्माण्ड संगीतमय ध्वनि तरंगों से भरा था। विशाल विस्फोट से लगभग तीन लाख वर्ष तक पदार्थ तथा विकिरण दोनों सूप की तरह मिल गये थे जिससे ध्वनि अथवा दबाव तरंगे आन्दोलित हो उठीं। जब ब्रह्माण्ड ठण्डा हुआ तो फोटोन (प्रकाश कण) दूसरे प्राथमिक कणों से अलग हुए। उस समय ध्वनि तरंगों ने सी.एम.बी. के अन्दर तापपरिवर्तन के रूप में अपनी बड़ी कहानियों के निशान छोड़ दिये। इन निशानों का पता लगाने, उनका अध्ययन करने के लिये वैज्ञानिकों ने यह मिशन हाथ में लिया। इन प्रयोगों से सिद्ध हुआ कि प्रारम्भिक अवस्था का, उस समय का ब्रह्माण्ड गीत गा रहा था। जिसने उन गीतों को सुना, उन देवों की वाणी को सुना उन ऋषियों के हृदयों में ही वेद प्रकट हुए।

प्रकृति के कोने-कोने में संगीत भरा है—इस धरती में संगीत है, नदियों और समुद्र के पानी में संगीत है, हवा में संगीत है, पक्षियों के बोलने में संगीत है, आकाश में संगीत भरा पड़ा है। पर जैसे योगी अरविन्द ने कहा था—प्रकृति बोल रही है, गा रही है पर कोई सुनता नहीं है। जो इस संगीत को समझ लेता है वह तो ऋषि बन जाता है मित्रो! हारमोनियम के अन्दर तो संगीत पहले से ही है, उसे निकालने के लिये किसी की सधी हुई उंगलियों की जरूरत है। संगीत नित्य है, उसे निकालने के लिये, उसे सुनने के लिये समय-समय पर नये-नये साज बनते रहते हैं। आकाश में गाने हैं, समाचार हैं, हवनमन्त्र हैं, पर उन्हें सुनने के लिये किसी रेडियो, टी. वी. की जरूरत है। रेडियो में गाने आते हैं, समाचार आते हैं, पर क्या गाने रेडियों के अन्दर बनते हैं? क्या फिल्म टी. वी. के अन्दर छिपी पड़ी है? सब जानते हैं कि यह सब तो आकाश में है किसी और ने बनाया है। यह संगीत, यह ध्वनि, ये शब्द, ये भाषा सब अपौरुषेय हैं। चार आदि ऋषियों ने टी. वी. /रेडियों का काम किया, आकाश से पकड़ा और विश्व मानवता को सुना दिया।

३. विकासवाद की असफलता—डार्विन का

विकासवाद का सिद्धान्त भाषा और ज्ञान के क्षेत्र में असफल रहा है। आज भी बिना ज्ञान के, बिना सिखाये। मनुष्य का बच्चा अपने आप कुछ नहीं सीख सकता। मनुष्य की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी-माँ-बाप से शारीरिक, मानसिक, आत्मिक गुणों में, ज्ञान में आगे बढ़ेगी, यह बहुत कम केसों में ही होता है। समय के साथ यदि ज्ञान हमेशा बढ़ता तो आज हम दिल्ली-महरौली की लाट, मिस्र के पिरामिड तथा आयुर्वेद की चन्द्रकान्त मणि दुबारा बना सकते। हमारी भाषाओं की समृद्धि कम हो रही है। भाषाओं में वर्णमाला कम हो रही है। दुनिया के अन्दर अभी तक वेद जैसा वैज्ञानिक, पूर्ण सत्य विद्याओं का ग्रन्थ लिखने की बात तो कोसों दूर है, उसे पूरा समझने की योग्यता भी हमारे पास नहीं है। कालिदास का काव्य लिखना भी आज मुश्किल है। भाषा से ज्ञान बना, भाषा से हम कुछ जान पाये। ज्ञान से भाषा नहीं बनी जैसा आधुनिक भाषाविद् मानते हैं। आज भी बिना भाषा सिखाये किसी बच्चे को ज्ञान नहीं दिया जा सकता। सबसे पहले गुरु को भाषा किसने सिखाई? भाषा अपौरुषेय है। वेद की तरह बाईबिल भी कहती है—शब्द (भाषा) भगवान् का ही रूप है, उसी की तरह अक्षर व अपौरुषेय है।

४. वेद की अपनी अलौकिक विशेषताएँ :—प्राचीन ऋषियों तथा आधुनिककाल में महर्षि दयानन्द तथा गम्भीर गवेषक पं. भगवद्दत्त जैसे वैदिक विद्वानों के अनुसार वेद की अपनी कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो उसको मनुष्य की बुद्धि से परे ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करती हैं। जैसे—

१. श्रुति वेद को ही कहा गया है, और किसी अन्य पुस्तक व ज्ञान को नहीं।
२. वेद के मूल मन्त्रों में आनुपूर्वी—शब्दों व अक्षरों का क्रम आज तक सुरक्षित रहा। आज तक अग्नि के स्थान पर वह्नि, पावक आदि शब्द कभी प्रयुक्त नहीं हुआ। संहिता-पाठ में 'अग्निमीळे' के स्थान में 'ईळे अग्निम्' कभी नहीं हुआ।
३. वेदों में छान्दसी मुद्रा है। वेदानुकरण पर कोई रचना कर भी ले तो वेद के विद्वान् उसमें छान्दसी मुद्रा का अभाव तत्काल बता देंगे।
४. वेद शब्द सर्वतोमुख है अर्थात् लोकभाषा की तरह वैदिक शब्दों का अर्थ निश्चित् नहीं है। एक ही मन्त्र में प्रकरण बदलने से एक शब्द के अनेक अर्थ हो जाते हैं।
५. वेदों में लेट् लकार का प्रयोग है, दूसरे शास्त्रों में नहीं है।
६. संसार में धातुज्ञान का उद्गम वेद से है। जहाँ शब्दार्थ-सम्बन्ध नित्य है। वेदभाषा अपना अर्थ स्वरों से पुष्ट करती है। अर्थ का दर्शन प्राचीन ऋषियों को मन्त्रों के पदों में हुआ था। ये अर्थ मानव समझौते के कारण शब्दों से चिपकाये नहीं गए थे प्रत्युत शब्दों में निहित थे।
७. आधुनिक संस्कृत व्याकरण के पूरे नियम भी वेद की सब शब्दावली को प्रकट नहीं कर सकते। वह तो जैसा पं. गुरुदत्त जी ने लिखा—"दुनिया के सभी विषयों के ज्ञाता को ही वेद समझ में आ सकते हैं"। और वह अत्यन्त कठिन व विरले लोगों को ही होता है। इसलिये वेदमन्त्रों का अर्थ तो योगधर्मा ऋषियों को ही हुआ। **ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः।**

ऊपर दिये गये कारणों से भी यह सिद्ध होता है कि वेद मनुष्यकृत हो ही नहीं सकते परन्तु ईश्वरीय ज्ञान हैं। अन्त में मैं तो यही कहना चाहूँगा कि वैज्ञानिक आदमी ने सीमेंट, स्टील, बिल्डिंग बनाई पर मिट्टी, लोहा व पानी नहीं (जिनको भगवान् ने बनाया); आदमी ने तरह-तरह के सोने के जेवर बनाये पर सोना तो नहीं बनाया। आदमी ने दीप, मोमबत्ती, बल्ब बनाया पर सूर्य नहीं। आदमी ने तरह-तरह का कपड़ा बनाया पर कपास तो नहीं। आदमी ने बीज बोकर फसलें तो पैदा कीं पर बीज नहीं, बीज का अंकुर नहीं। आदमी ने कुएं, नहरें खोदीं पर नदी व समुद्र तो नहीं। मिट्टी, लोहा, सोना, कपास, पानी, हवा आदि मौलिक पदार्थों का मूल तो ईश्वर है। इसी तरह आदमी ने तरह-तरह की पुस्तकें लिखीं, तरह-तरह की भाषाएँ बनाईं पर ज्ञान का मूल, भाषाओं का मूल, वाणी का मूल वेदवाणी तो मनुष्य ने नहीं स्वयं ईश्वर ने दी। इसलिये तो वेद आदमी को सावधान करता है, और कहता है—

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्। यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः। यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते। ऋ. १.१६४.३९।

अर्थात् ऋचाएँ परम अविनाशी शब्दमय अक्षर में ठहरी हैं जिनमें देवता (शब्दों के विषय) रहते हैं। जो उस अक्षरार्थ को नहीं जानता, वह ऋचाओं से क्या लाभ प्राप्त करेगा? इसलिये मित्रो !

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।

वेद तो ईश्वर की रोशनी है उसी से दुनिया में ज्ञान का प्रकाश आया। हमारा धर्म है इस रोशनी की रक्षा करना, इस रोशनी को आगे बढ़ाना, इस रोशनी से स्वयं रोशन होकर दूसरों को रोशन करना।

(वेदवाणी जून २००३ से साभार)

कृत्तिका, वाटरफिल्ड रोड, बान्द्रा (पश्चिम), मुम्बई

विद्यार्थी का ब्रह्मचर्य

❑ स्वामी रामस्वरूप

विदुर नीति में कहा :—

'विद्यार्थी वा कुतः सुखं, सुखार्थी वा कुतः विद्या।

अर्थात् विद्यार्थी को सुख कहां एवं सुख चाहने वाले को विद्या कहां? अतः विद्यार्थी का कर्त्तव्य नित्य कठिन पुरुषार्थ द्वारा विद्या प्राप्त करना है। कठिन पुरुषार्थ एवं विद्या प्राप्ति का आधार उसका ब्रह्मचर्य जीवन ही है। जैसे मजबूत इमारत का आधार उसकी मजबूत नींव होती है उसी प्रकार दृढ़ एवं स्थिर ब्रह्मचर्य ही जीवन के सुख, विद्या एवं दीर्घायु की नींव है। वैदिक वाङ्मय के आधार पर गृहस्थादि चार आश्रमों में प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम आता है। इसका समय पांच व आठ वर्ष की आयु से लेकर अड़तालीस वर्ष तक का है। यजुर्वेद में कहा है—

वसस्त्र्योदशाक्षरेण.....'

अर्थात् वसु ब्रह्मचारी चौबीस वर्ष, आदित्य चौतीस वर्ष एवं रुद्र चवालीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़ने वाले विद्वान होते हैं। इन ब्रह्मचारियों को चारों वेद कण्ठाग्र (मुंह जवानी) होते थे आज के विद्यार्थी को एक पुस्तक याद करना प्रायः कठिन हो जाता है। पिपलाद ऋषि के आश्रम में सुकेश एवं कवन्धी ऋषि परमेश्वर प्राप्ति की जिज्ञासा लेकर गये। पिपलाद ने उन्हें प्रथम कहा—**"भूया एव तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया सम्वतसरं सम्वत्स्यथ:** अर्थात् पहले एक वर्ष तक मेरे आश्रम में श्रद्धापूर्वक ब्रह्मचर्य सहित तप करो, फिर तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूंगा। महर्षि पतञ्जलि ने योग दर्शन में ब्रह्मचर्य के लाभ में कहा—

'ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्य लाभः।'

ब्रह्मचर्य की दृढ़ स्थिति से वीर्य (सामर्थ्य) का लाभ होता है। अर्थात् इससे पुरुषार्थ, उत्साह एवं पराक्रम इत्यादि गुण एवं दिव्य गुण प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद ने कहा—

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते॥

अर्थात् ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्त करके राजा राज्य करने को और आचार्य विद्या पढ़ने को समर्थ होता है। मनुष्य देह प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, धनंजय, देवदत्त, क्रिकल, नाग एवं कूर्म इन दस प्राणों पर आधारित है। इसमें प्राण और अपान शक्ति दो धाराओं के रूप में काम कर रही हैं। इसी शक्ति का नाम सुपुम्ना है जिसका रस मस्तिष्क में परिपूर्ण रहता है। इसी रस पर प्राण एवं जीवन आधारित हैं। जितना यह रस शुद्ध/पवित्र एवं रक्षित होता है उतने ही प्राण एवं जीवन शक्तिमय और दीर्घ होते हैं। इस रस का सूक्ष्म रूप ही रेत (वीर्य) है। शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में कहा—**'रेतो वा आज्यम्'** अर्थात् रेत (वीर्य) ही जीवन है। ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ में कहा—**'प्राणो रेतः'** (२/३८) अर्थात् रेत (वीर्य) रक्षा ही प्राण का आधार है। महिदास ऐतरेय ऋषि ने ब्रह्मचर्य के प्रताप से १२० वर्ष एवं कश्यप ऋषि ने ३०० वर्ष की आयु प्राप्त की थी। ब्रह्मचर्य के बिना पूर्ण विद्या, आत्म साक्षात्कार अथवा योग की सफल साधना व सुख की प्राप्ति असंभव है। इसके अभाव में क्षणिक सांसारिक उन्नति रावण, कंस, दुर्योधन व औरंगजेब जैसी विनाशकारी हो जाती हैं। ब्रह्मचर्य द्वारा रेत (वीर्य) की रक्षा से ही प्राण सुदृढ़, आयु लम्बी एवं समाधि लाभ होता है। ब्रह्मचर्य हीन अशुद्ध रेत से काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार, व्याधियां, अशांति का वातावरण एवं अल्पायु होती है। विद्यार्थी में आलस्य, निद्रा, कमजोर स्मरण-शक्ति, अनेक रोग एवं कुविचार उत्पन्न होते हैं। महर्षि मनु ने ब्रह्मचर्य की कमी से उत्पन्न होने वाले दस दोष इस प्रकार कहे हैं—

मृगयाक्षादिवास्वपनः परिवादस्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाय्या च कामजो दशको गणः।

अर्थात्—१. शिकार करना २. जुआ खेलना ३. दिन में सोना ४. दूसरों की झूठी निन्दा करना ५. स्त्रियों में पुरुषों की, पुरुषों में स्त्रियों की आसक्ति होना ६. मद्यपान ७. नाचना ८. गाना ९. बजाना (शास्त्रीय संगीत व अच्छे संगीत को छोड़कर) १०. व्यर्थ इधर-उधर घूमना। इसलिए यजुर्वेद में प्रार्थना है—

'तेजोऽसि तेजो मयि धेहि वीर्यवसि वीर्य मयि धेहि'

अर्थात् हे परमेश्वर जो आपमें (तेजः) तेज है वो मुझमें धारण कीजिए और जो आपमें (वीर्य) पराक्रम है उसे मुझमें धारण कीजिए। भगवान की आज्ञा है कि मनुष्य बाल्यावस्था में विवाह न करे। क्योंकि विवाह (वि+वाह) एक विशेष वाहन अर्थात् रथ है। इसके कुछ नियम हैं। वर की आयु २५ वर्ष कम से कम तथा कन्या की आयु १८ वर्ष कम से कम होनी अनिवार्य है। इससे पहले मन में कभी भी कुविचार न आने पाएं। मन सदा शिव संकल्प वाला हो। सुख व विद्या आदि शुभ गुणों को

प्राप्त करने के लिए प्रयत्न एवं पुरुषार्थ करना ही संकल्प है। मुण्डकोपनिषद में कहा—**सत्येन लभ्यस्तपसा ह्यसे आत्मा स सम्यङ् ब्रह्मचर्य्येण नित्यम्।**

अर्थात् सत्याचरण, धर्म तथा ब्रह्मचर्य के द्वारा ही परमेश्वर का ज्ञान होता है। अत: मनसा, वाचा, कर्मणा अर्थात् मन, वचन, कर्म से भी कभी काम, क्रोध आदि व्यभिचार को न करें। भीष्म, हनुमान, गार्गी इत्यादि अनेक उदाहरण ब्रह्मचर्य के द्योतक हैं। सीता, मदालसा तथा सावित्री जैसी अनेक देवियों ने ब्रह्मचर्य के बल पर ही उत्तम वर एवं उत्तम सन्तान प्राप्त की थी। अथर्ववेद में ब्रह्मचर्य की प्रशंसा इस प्रकार की है—

ब्रह्मचर्य्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
अनड्वान ब्रह्मचर्य्येणाखो घासं जिगीषति।

अर्थात् कन्या ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्या प्राप्त करकेयुवा अवस्था में पुरुष को अपना पति धारण करे। इसी प्रकार पुरुष भी सुशील, धर्मात्मा स्त्री के साथ विवाह करके सुखी हो। क्योंकि पशु भी जो पूरी जवानी ब्रह्मचर्य धारण करे तो अत्यन्त बलवान होकर निर्बल जीवों को जीत लेता है। अथर्ववेद ने ही कहा—

ब्रह्मचर्य्येण तपसा देवा मृत्युमुपाध्नत।
इन्द्रो ब्रह्मचर्य्येण देवेभ्य: स्वराभरत।

अर्थात् ब्रह्मचर्य एवं धर्मानुष्ठान से ही विद्वान् लोग मृत्यु को जीतकर मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं। जैसे सूर्य परमेश्वर के नियम में रहकर सब लोकों में प्रकाश करने वाला होता है। अत: निष्कर्ष यही है कि ब्रह्मचर्य ही जीवन के सब सुखों एवं विद्यादि का आधार है, एवं ब्रह्मचर्याश्रम सब आश्रमों में श्रेष्ठ है। विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य जीवन में धारण करने योग्य कुछ नियम :—

१. ब्रह्मचर्य का दृढ़ता से पालन करे।
२. नित्य प्रचुर मात्रा में पानी पिए।
३. आलसी न रहे, नित्य पुरुषार्थ युक्त शुभ कर्म एवं विद्या ग्रहण करे।
४. दिन में कभी न सोए। इससे आयु घटती है एवं इन्द्रियां संयम में नहीं रहतीं।
५. गुरु के अधीन रहकर विद्या ग्रहण करे।
६. गुरु के अधीन रहकर धर्मानुसार बर्ताव करे।
७. क्रोध वर्जित है। क्रोध कभी न करे।
८. मैथुन वर्जित है।
९. मुलायम गद्दे इत्यादि पर न सोए। कठोर भूमि पर सोए।
१०. खुशबूदार तेल व आंखों में काजल वर्जित है।
११. अधिक स्नान, भोजन, निद्रा, जागना अथवा लोभ, मोह, भय एवं शोक वर्जित है।
१२. प्रतिदिन घोर प्रातःकाल में उठकर आवश्यक कर्म करके, दांत साफ करके स्नान करे। तत्पश्चात् कुछ समय परमेश्वर के ध्यान में बैठ योग साधना इत्यादि करे।
१३. मांस एवं मदिरापान वर्जित है।
१४. अकारण अपनी इन्द्रि का स्पर्श अथवा शक्ति नाश न करे।
१५. नित्य युक्ति का आहार-विहार करे तथा विद्या प्राप्ति के लिए यत्नशील रहे।
१६. सुशील मीठी वाणी वाला तथा सभ्य बने।

टीका लेहसरं, चोल कैम्प, कांगड़ा (हि. प्र.)

एकमधुर मुलाकात

आर्य जगत् के अप्रतिम आध्यात्मिक मनीषी डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

डॉ ज्ञानचन्द्र

महर्षि विश्वामित्र के समान अपने अध्ययन, चिन्तन व साधना केबल पर ब्राह्मणत्व को उपलब्ध करने वाले डॉ. कपिलदेव द्विवेदी अपने आपमें एक पठनीय शास्त्र, मननीय मानव व दर्शनीय आर्य विभूति हैं। अभी दिल्ली में उनसे एक संक्षिप्त मुलाकात हुई। इस अनुपम एवं अप्रतिम भव्यात्मा को मिलकर जिस आनन्द और सहजविकीरित तृप्ति का अनुभव हुआ वह अनुभवगम्य है शब्दगम्य नहीं है।

कीर्तिनगर में उनकी पुत्री एवं जामाता के गृह पर हमारी भेंट हुई। वेद, वेदार्थ एवं साधना व योग आदि अनेक विषयों पर बातचीत हुई। प्रत्येक प्रश्न पर उनका विश्लेषण व व्याख्या तात्कालिक और अत्यन्त सुसम्बद्ध व सटीक होती है। १५० के लगभग ग्रन्थों के प्रस्तोता तथा पिच्चासी वर्ष की आयु में भी ग्रंथ रचना में संलग्न डॉ. द्विवेदी ने अपने सभी पुत्रों, पुत्रियों एवं पुत्रवधुओं को विद्वान और संस्कृति का उपासक बनाया है। सभी बहुपठ, बहुश्रुत, सुविज्ञ और प्राय: ग्रन्थरचयिता हैं।

योग साधना पर अभी हाल में उनकी 'साधना और सिद्धि' पुस्तक आई है। यह पुस्तक एक प्रकार का योग साधनाओं व योग परम्पराओं का संग्रह-कोष भी है तथा स्वानुभूत प्रयोग का संदर्भ ग्रंथ भी। इसमें श्री अरविन्द के योग-प्रकरण के वक्तव्यों के लिए उन्होंने मुझसे पत्र व्यवहार किया था तथा ग्रंथ में मेरे लेखों और ग्रंथों के चयनित वक्तव्य भी प्रस्तुत किए हैं। चलते समय जब उन्होंने मुझसे पूछा कि ज्ञानचन्द्र जी आप के लिए और क्या कर सकता हूँ तो मैंने उनसे कहा कि वचन दें कि आप कम से कम १२५ वर्ष इस भूमि पर सशरीर रहें और आर्य साहित्य की वृद्धि के साथ अपनी पावमानी उपस्थिति के स्पंदन विकीरित करते रहें। यही मेरी आपसे मांग है। श्रेष्ठ योगाभ्यासक एवं वेदार्थ परिमंथक डॉ. द्विवेदी इस पर मुस्करा दिए और नेत्रों ही नेत्रों में नि:शब्द वक्तव्य दिया कि जैसी हरि इच्छा।

वेदार्थ में श्रौतसूत्रों का योगदान

❑ डॉ. कृष्णलाल

वेदार्थ में श्रौतसूत्रों का योगदान इस दृष्टि से अभावात्मक ही कहा जायेगा कि श्रौतसूत्रों का लक्ष्य केवल विविध वैदिक कर्मों का प्रतिपादन और विस्तृत वर्णन करना ही होता है। इस क्रम में विशेष यज्ञ क्रियाओं में विशेष वैदिक मन्त्रों का विनियोग निर्दिष्ट किया जाता है। ये मन्त्र प्रायः सूत्र की अपनी वैदिक शाखा के होते हैं। उन विनयोगों का सूत्र प्रायः अपनी शाखा के ब्राह्मण में होता है। व्याख्याकार उस सम्बन्ध सूत्र के आधार पर ही व्याख्या करते हैं जिसमें ब्राह्मण वचन को अन्तिम प्रमाण माना जाता है। वे विनियोग शब्दों के कल्पित अर्थ पर आधारित होते हैं अथवा विनियुक्त मन्त्रों में अविद्यमान शब्दों पर भी आधारित होते हैं। ऐसी स्थिति में उनके द्वारा केवल कर्मकाण्डीय अर्थ की ही व्याख्या होती है वैदिक शब्दों के सामान्य जीवन से सम्बद्ध व्यापक पक्षों की नहीं।

उदाहरणार्थ हम शुक्ल यजुर्वेद के कात्यायन श्रोत सूत्र के विनियोग पर दृष्टिपात कर सकते हैं। वहाँ प्रथम अध्याय के प्रथम मन्त्र या कण्डिका को विनियोग के लिये पांच खण्डों या मन्त्रों में विभाजित किया गया है। उस दृष्टि से प्रथम खण्ड है **इषे त्वा** जिसका विनियोग का. श्रौ. (४.२.१-३) के अनुसार दर्श याग में गौओं के दोहन से पहले बछड़ों को उनसे दूर करने केलिये शाखा (पलाश या शमी शाखा) को काटने के लिये किया जाता है। तदनुसार मन्त्रार्थ होगा हे शाखा ! मैं अन्न के लिये तुझे काटता हूँ। इसी प्रकार **ऊर्जे त्वा** का अर्थ होगा हे शाखा ! मैं इसके लिये तुझे साफ करता हूँ। इन दोनों विनियोगों में एक बात तो यह विचारणीय है कि त्वा का सम्बन्ध शाखा से कैसे हो गया और अचेतन शाखा को क्यों सम्बोधित किया गया है। स्पष्ट है कि त्वा के शाखा से सम्बन्ध का आधार श. ब्रा. (१.७.१.२) है। अचेतन शाखा को इसलिये सम्बोधित किया गया है क्योंकि उसके मूल में अधिष्ठात्री देवता है जो अदृश्य है परन्तु चेतन है। **"शाखादीनामचेतनत्वेऽपि तदभिमानिनीनां देवतानां सत्त्वादेवतात्वम् ।"**

जब उसी शाखा के द्वारा बछड़ों को गौओं से दूर हाँका जाता है तो मन्त्र-खण्ड **वायव स्थ** बोलने का विधान है। यहाँ भी पिछले विनियोग के समान ही बछड़ों को देव मानकर सम्बोधित करके कहा गया है—हे बछड़ों, तुम (अपनी माताओं से अलग होने के लिये) गतिशील हो जाओ। इस प्रसंग में बछड़ों को सम्बोधित **वायव स्थ** का बछड़ों से सम्बन्ध भी दुरुह है। वास्तव में श. ब्रा. द्वारा ही इस विनियोग की पुष्टि होती है। सम्भवतया इसी कारण सूत्रग्रन्थों द्वारा ब्राह्मण ग्रन्थों की प्रामाणिकता स्वीकार करने हेतु ही उन्हें **मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्** जैसे वाक्यों के द्वारा वेद की उच्छित पदवी पर बैठाया गया है। यजुर्वेद के इस प्रथम मन्त्र के आगे के खण्डों में भी यही प्रवृत्ति लक्षित होती है। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द के भाष्य में यह मन्त्र सविता सर्वप्रेरक परमेश्वर को अन्तःकरण सहित सभी इन्द्रियों की श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्ति करने, वृष्टि-अन्न प्रदान करने, पाप चोरी आदि दुष्प्रवृत्तियों से बचाने और पशुओं की रक्षा करने की प्रार्थना की गई है।

विनियोग के अनुसार (का. श्रौ. ४.२.१५.१६) द्वितीय मन्त्र के शब्द **द्यौरसि पृथिव्यसि** के द्वारा दरवा (हाँडी) को ग्रहण करता है। उरवा के प्रसंग में इन शब्दों के विनियोग के आधार पर बताते हुए का. श्रौ. का अनुसरण करते हुए भाष्यकार महीधर का कहना है कि जिस हाँडी में दूध डाला जाना है, उसे सम्बोधित करके कहा गया है कि हे हाँडी, मिट्टी और जल से बनी हुई तू द्यौः है अर्थात् जल का कारण बनी हुई वृष्टि को देने वाले, द्युरुष है। उसी प्रकार पृथ्वी से प्राप्त मिट्टी के द्वारा बनी होने के कारण तू पृथ्वीरूप है। (हे स्थालि, मृज्जलाभ्यां निष्पना त्वं द्यौरसि जलहेतुवृष्टिप्रदद्युलोकरूपासि। तथा पृथिव्यसि पृथिव्याः सकाशादुद्भृतया मृदा निष्पन्नत्वात् पृथिवीरूपत्वम्)।

इसके विपरीत यहाँ वसु यज्ञ के प्रसंग में व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द द्यौः को विज्ञान प्रकाश हेतु बताते हैं क्योंकि यज्ञ विज्ञानरूप है, यज्ञ का अपना विज्ञान है। यज्ञ में शुद्ध उत्तम घृतादि पदार्थों की आहुतियाँ ऊपर अन्तरिक्ष में जाकर मेघ बनाकर वृष्टि में सहायक होती हैं। इस वृष्टि विज्ञान का प्रकाशक होने के कारण यज्ञ को द्यौः कहा गया है। इसी प्रकार यज्ञ पृथिवी है। फैलने वाला है, (प्रथ प्रख्याने-प्रसिद्ध होगा, फैलना) जिस प्रकार पृथ्वी दूर तक फैली हुई है उसी प्रकार यज्ञ की सुगन्ध वायु के द्वारा दूर-दूर तक फैल जाती है। (वायुना सह विस्तृतो भवति)।

श्रौतसूत्र वेदार्थ में कितने सहायक हैं, यह जानने के लिये एक उदाहरण अश्वमेघ के प्रसंग में कात्यायन श्रौतसूत्र (२०.६.१४) द्वारा विनियुक्त निम्नलिखित मन्त्र की समीक्षा भी अप्रासंगिक न होगी : — **ता उभौ चतुरः पदः**

सम्प्रसारयाव स्वर्गे लोके प्रोर्णुवाथां वृषा वाजी रेतोधा रेतो दधातु ॥ वा. सं. २३.२०

स्वर्गे लोके प्रोर्णुवाथां मन्त्र के द्वारा घोड़े और उसके साथ लेटी हुई रानी को वस्त्र से आच्छादित करता है। (अधीवासेन प्रच्छादयति स्वर्गे लोक इति) आगे मन्त्र के अवशिष्टांश का विनियोग का. श्रौ. (२०.६.१६) द्वारा रानी के द्वारा घोड़े के लिंग को अपनी योनि में डालने के लिये निर्दिष्ट है (अश्वशिश्नमुपस्थे कुम्ते वृषा वाजीति)। स्वर्ग लोक क्या है? यह बताने के लिये श. ब्रा. (१३.२८.५) का निम्नलिखित वाक्य उद्धृत किया गया है—**एष वै स्वर्गो लोको यत्र पशुं संज्ञपयन्ति** यह स्थान ही स्वर्ग लोक है जहाँ पशु का वध किया जाता है।

मन्त्र—विनियोग के विषय में ब्राह्मण ग्रन्थों और श्रौतसूत्रों में प्रायः इस वाक्य का उल्लेख होता है।—

एतद्वै यज्ञस्य समृद्धं यद् रूपसमृद्धं यत्कर्म क्रियमाणमृग्यजुर्वाऽभिवदति। (गोपथ ब्रा. १.१.१६)

अर्थात् यज्ञ की समृद्धि उसके इस रूप से है कि किये जाने वाले कर्म में विनियुक्त मन्त्र का अर्थ उसके अनुकूल होता है।

परन्तु यह विचारणीय है कि क्या सर्वत्र मन्त्र-विनियोग में इसका पालन हुआ है? उपरिलिखित उदाहरणों में ही ऐसा प्रतीत होता है कि कर्मकाण्ड में बहुत बार मन्त्र के एक या अधिक शब्दों की ध्वनि के आधार पर भी विनियोग कर दिया गया हो। हम दोनों चारों पाँवों को फैलायें मन्त्रांश से यह स्पष्ट नहीं कि किनके चार पाँव अभिप्रेत हैं। यदि यहाँ यह कहा जाये कि पूर्व मन्त्र से पता चलता है कि चार पाँव रानी और अश्व के हैं तो उस मन्त्र के अर्थ में भी यह व्यक्त नहीं है। यह प्रतीत होता है कि निर्दिष्ट प्रसंग में विनियोग की प्रेरणा सम्प्रसारयाव शब्द से मिली होगी। स्वर्ग लोक से कर्मकाण्ड में क्या अभिप्रेत है, यह पहले ही बताया जा चुका है। जहाँ तक घोड़े के लिंग को रानी की योनि में डालने का प्रश्न है, वह भी मन्त्र के शब्दों से स्फुट नहीं है। यह स्मरणीय है कि घोड़ा मरा हुआ है और उसके लिंग में से वीर्य निकलना सम्भव ही नहीं।

वास्तव में राष्ट्रं वा अश्वमेधः के अनुसार यहाँ दूसरे ही अर्थ की संगति होती है जो महर्षि दयानन्द के भाष्य में स्पष्ट है। तदनुसार राजा और प्रजा दोनों मिलकर चार प्राप्तव्य लक्ष्यों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) को प्राप्त करने और उनका सभी जनों में विस्तार करने की इच्छा प्रकट करते हैं, जिससे कि विज्ञानवान्, दुष्टों का शक्तिबन्धक (वृषः) प्रजा का सुख और बल (वीर्य रेतः) धारण करे। (भावार्थ—यदि राजप्रजे पितापुत्रवद्वर्तेयातां तर्हि धर्मार्थकाममोक्षफलसिद्धिं यथावत् प्राप्नुयातां यथा राजा प्रजासुखबलेवर्धयेत्तथा प्रजा अपि राज्ञः सुखबले उन्नयेत्)। वास्तव में प्रकृष्ट पवित्र वेदमन्त्र का यही भाव है, कोई अश्लील भाव नहीं।

इससे स्पष्ट है कि श्रौतसूत्र केवल विनियोगपरक मन्त्रव्याख्या में सहायक हो सकते हैं, मन्त्र के सत्यार्थ को स्पष्ट करने में नहीं। ऐसे ही मन्त्रस्थ किसी एक या अधिक शब्दों द्वारा संकेतित मिथ्या विनियोग गृह्य सूत्रों में बहुत हुए हैं। ऐसे विनियोगों के आधार पर कर्मकाण्डियों की निन्दा आदित्य दर्शन ने पाकयज्ञविवृत्ति में निम्नलिखित श्लोकों में की है—

इहैतेच्छज्ञन्दसाः प्रायः सर्वे वेदमधीयते।
पदमप्येकमेतस्मान्न बुध्यन्ते कदाचन॥
पाठमात्रेण वेदस्य मन्यमानाः कृतार्थताम्।
गर्जन्ति श्रोत्रिया गेहे निष्फलं शरदभ्रवत्॥
अर्थेन किं नो वेदस्य वदन्ति इति ते मिथः।
अर्थानसमासज्ञानर्थज्ञान् विहसन्ति च॥

(पं. मधुसूदन कौल द्वारा लौगाक्षिगृह्यसूत्र की भूमिका [पृ. ७-८] में पाण्डुलिपि से उद्धृत)

यह कथन उन पण्डितों के विषय में है जो मन्त्रगत शब्द और कर्म की क्रिया का साम्य देखकर विनियोग कर देते हैं। वे मन्त्रार्थ का महत्व नहीं समझते, उस ओर ध्यान नहीं देते हैं।

विश्वनीड, ई-९३७, सरस्वती विहार, दिल्ली-३४

जनज्ञान के सदस्यों से

जनज्ञान का वार्षिक शुल्क समाप्ति का पत्र मिलते ही शीघ्र शुल्क एक सौ रुपये भेजने का यत्न करें।

डाक व्यय बढ़ जाने से वार्षिक शुल्क की वी. पी. भेजने में अब २५ रुपये लगते हैं। अतः मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट अथवा केवल दिल्ली के चैक द्वारा "जनज्ञान" के नाम शुल्क भेजें। दिल्ली से बाहर के चैक पर बैंक चार्ज लगभग ४० रुपये व्यर्थ पड़ जाता है।

पत्र व्यवहार में अपना सदस्य नं. ...... अवश्य लिखें तथा कार्ड पर उत्तर भी अवश्य ही देने की कृपा करें। हमारे यहां से भेजे पत्रों में सदस्य नं. आपके पते के साथ लिखा होता है। धन्यवाद

— सम्पादक

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है के उद्घोषक

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

□डॉ. हरिसिंह पाल

भारत वर्ष सदा वीरों और देशभक्तों की कर्मस्थली रही है। इस पावन भारतभूमि पर एक से बढ़कर एक संत-महात्माओं के अतिरिक्त महापुरुष तथा रणबांकुरों ने जन्म लेकर भारत माँ का मान बढ़ाया है। उन्हीं महापुरुषों में से एक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का नाम भारत के इतिहास में शीर्ष पर आता है। तिलक जी देशभक्तों के शिरोमणि थे। असल में तिलक जी ने ही सर्वप्रथम हम भारतवासियों को स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाया था तो जिसका मर्म सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानंद ने समझाया था। तिलक जी के कहे गये यह अमर शब्द थे कि "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।" जब हम इस राज्य की महत्ता पर विचार करें तो पायेंगे यह अमर वाक्य कितना जन-चेतना की लहर दौड़ाने वाला साबित हुआ। साथ ही आज के वातावरण में भी हर पहलू पर परखने पर कितना सही उतरा है, उनके द्वारा भारत-माता की सेवा बेमिसाल व निःस्वार्थ सदियों तक याद की जाती रहेगी।

भारतभूमि में जन्मे ऐसे महापुरुष **लोकमान्य वालगंगाधर तिलक का जन्म महाराष्ट्र में रत्नागिरी जिले में चिखल नामक गांव में सन् १८५६ में २३ जुलाई को हुआ था।** उनके पिताजी का नाम गंगाधर तथा माता जी का नाम पार्वती बाई था। उनके पिता अध्यापक के साथ समाजसेवी लेखक भी थे। इसी प्रकार उनकी माता भी परम ईश्वरभक्त थीं। तिलक को अपने माता पिता से बहुत से गुण तो विरासत में मिले। तिलक जी को वचपन में ही पिता ने स्वयं संस्कृत, मराठी और गणित का अध्ययन कराया था। इससे बाल्य अवस्था में ही तिलक इन तीनों विषयों में अपनी श्रेष्ठता की छाप हमेशा पाठशाला में छोड़ते थे। आपको गणित विषय में कुशल पांडित्य प्राप्त था। तिलक जी कैसे भी कठिन से कठिन सवालों का मुंह जवानी जवाब दे देते थे। तिलक जी के मौखिक प्रश्नों के उतर देख सुन शिक्षकगण आश्चर्यचकित हो जाते थे। आप प्रश्नपत्र में सर्वप्रथम कठिनतम सवालों के जवाब लिखा करते थे। जब वे छोटे ही थे तभी उन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। दस वर्ष की आयु में माता जी का देहान्त और जब वह सोलह वर्ष की आयु के थे तब उनके पिताजी ने अपना शरीर त्याग दिया। माता-पिता के अभाव में भी तिलक ने अपने साहस को बनाये रखा और अध्ययन भी जारी रखा। आपने बी. ए. की डिग्री प्राप्त की। उसके बाद संस्कृत का गूढ़ज्ञान प्राप्त कर संस्कृत में अपनी विद्वता की एक अलग छाप छोड़ी। आप लगनशील व्यक्तित्व के धनी थे। आप कार्य करने में विश्वास रखते थे। वह जो कहते थे वह कर दिखाते थे। उन्होंने देशप्रेम और परिश्रम की शिक्षा अपने पिताजी से तथा दीन-दुखियों, समाज सेवा-धर्म संस्कार अपनी माताजी से ग्रहण किये थे। इस कारण तिलक जी बड़े परिश्रमी और प्रखर राष्ट्रभक्त थे। आपकी नस-नस में देश-प्रेम कूट-कूट कर भरा था। भारत मां के पैरों में पड़ी गुलामी की जंजीर को तोड़ने के लिये **अंगेजी सरकार को ललकारते हुये उन्होने घोषणा की थी—"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।"**

इस नारे ने समस्त भारतवर्ष में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए राष्ट्र के जन-गण में स्वतंत्रता के प्रति लगन को जगाया। जब स्वतंत्रता के अधिकार की लहर चारों तरफ फैली तो उसी समय लोकमान्य तिलक जी ने देश के लिए अपने आपको पूरी तरह से राष्ट्रसेवा में लगा दिया। उन्होंने पत्रकारिता को भी स्वातंत्र्य आंदोलन को गति प्रदान करने का माध्यम बनाया।

भारत माँ को आजाद कराने के लिए अंग्रेजी सरकार के जुल्मों के खिलाफ वे हमेशा अपनी आवाज उठाते रहे जिससे आपको अनेक बार जेल जाना पड़ा और भयंकर यातनाएं भी सहनी पड़ीं। आपने सन् १८९३ में बम्बई में हिन्दू-मुसलमानों का दंगा हुआ तो महाराष्ट्र में हिन्दुत्व की चेतना जागृत की जिससे गणपति उत्सव और शिवाजी जयन्ती उत्सवों ने राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया। इससे समूचे महाराष्ट्र में जन चेतना की जागृति और चैतन्य का सृजन हुआ। इससे प्रभावित होकर पुणे के चाफेकर बन्धुओं ने विशेष उत्साह प्रदर्शित किया। इन्होंने २२ जून १८९७ में विक्टोरिया के राज्यारोहण समारोह के अवसर पर पुणे के अंग्रेज प्लेग अफसर को मार डाला। बाद में इसी हत्याकाण्ड में चाफेकर बन्धुओं को फांसी दी गई। तिलक जी ने फांसी का खुलकर विरोध किया। नवयुवकों को देशसेवा में आगे आने तथा स्वतंत्रता प्रचार हेतु अपने ही समाचार पत्रों का सम्पादन भी किया। आपकी लेखनी इतनी सशक्त थी कि अंग्रेज सरकार आपके पत्र 'केसरी' में छपे लेखों से सदा परेशान रहती थी। सरकार की उनके पत्र केसरी पर कटु दृष्टि पड़ी-क्योंकि उन दिनों तीन नाम प्रमुख थे बाल-पाल-लाल। महाराष्ट्र के बाल—लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और पाल बंगाल के शेर विपिनचन्द्र पाल तथा लाल पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय। यह तीनों नेता स्वतंत्रता यज्ञ में आहुति देने पर तुले थे। इनके नाम सुनकर अंग्रेजी सरकार कांपती थी। एक घटना स्मरणीय है जिसे समझ आ जाता है कि अंग्रेजी सरकार

(शेष पृष्ठ २१ पर)

२३ जुलाई जिनका जन्मदिवस है

महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद

❑वचनेश त्रिपाठी 'साहित्येन्दु'

मध्य प्रदेश की रियासत अलीराजपुर की झाबुआ तहसील के भावरा ग्राम का चौदह वर्ष का किशोर बिना माता-पिता को बताए एक रात घर छोड़कर मुम्बई जानेवाली रेलगाड़ी में जा बैठा। उसे यह भी पता न था कि वह गाड़ी कहां जाएगी। यह नाराज होकर घर से भागा था, क्योंकि उसके पिता पं. सीताराम तिवारी ने बिना पूछे रियासत के बाग से आम तोड़ने पर उसकी खूब पिटाई की थी। उस बाग की रखवाली आठ रुपए महीने के वेतन पर उस किशोर के पिता ही करते थे। देशी बारूद खरीदकर खिलौने में भरकर 'तोप' चलाना उस किशोर का प्रिय खेल था। वह उन चुराए गए आमों को बेचकर मिलने वाले पैसों से देशी बारूद खरीदना चाहता था। किन्तु पिता की निगाह उन आमों पर पड़ीं तो उन्होंने अपने पुत्र को इतना मारा कि मां व्याकुल हो उठी। अनन्तर उस बालक को द्वार से बाहर ठेलकर द्वार बंद कर लिया और माता जगरानी देवी से कहा 'खबरदार ! दरवाजा मत खोलना वरना तुम्हें भी मार दूंगा।'

वह किशोर रात १०-११ बजे तक इस आशा से द्वार के बाहर अंधेरे में खड़ा प्रतीक्षा करता रहा कि अभी पिताजी उसे बाहर आकर मनाएंगे और अंदर ले जाएंगे। किन्तु देर रात तक भी द्वार बंद ही रहा तो वह वहां से दूर गांव में अपने एक रिश्तेदार मनोहरलाल द्विवेदी के घर चला गया और दूसरी रात जब उसी रिश्तेदार की पत्नी को यह कहते सुना कि इसे इसके घर क्यों नहीं भेज आते, तो भोर होते ही वह उस घर को भी छोड़कर दूर के एक रेलवे स्टेशन गोहद जा पहुंचा। जहां खड़ी रेलगाड़ी में वह बिना टिकट बैठ गया। रेल में बैठे-बैठे उसे नींद आ गयी और काफी समय बाद जब नींद खुली तो उसे पता चला वह मुम्बई पहुंच गया है। वहां उसने एक होटल में बर्तन मांजकर और बंदरगाह पर जहाज में दूध के डिब्बे ढोकर कुछ माह बिताए। इसके पश्चात खिन्न होकर काशी चला आया। जहां संस्कृत पाठशाला में भर्ती होकर 'लघु सिद्धान्त कौमुदी' और 'अमर कोष' जैसे संस्कृत ग्रन्थ रटने लगा।

वहां ब्राह्मण छात्रों को कुछ धर्म-सत्रों में एक समय निःशुल्क भोजन मिल जाता था। रात के भोजन के बजाए मंदिरों में संध्या-आरती में प्रसाद-पाकर ही काम चलाना पड़ता था। उसी बीच गांधी जी का 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' चला तो जोश में आकर वह १३-१४ वर्षीय छात्र भी उसमें कूद पड़ा। जब उसे खरेघाट की अदालत में पेश किया गया तो देखा कि उसके हाथ इतने छोटे थे कि वे बंद हथकड़ियों में से बाहर निकल जाते थे।

अदालत में पारसी दंडाधिकारी ने उसे फटकारते हुए कहा-अभी हाथ भर का तो है नहीं, चला है आंदोलन करने। दंडाधिकारी ने उससे पूछा -तुम्हारा नाम क्या है? उसने उत्तर दिया "आजाद"। दंडाधिकारी ने फिर पूछा-तुम्हारे बाप का नाम? उत्तर मिला "स्वाधीनता"। जब तीसरा प्रश्न हुआ घर कहां है, जवाब मिला "जेलखाना"। दंडाधिकारी ने इन उत्तरों से क्रुद्ध होकर उस किशोर छात्र को पन्द्रह बेतों की सजा सुना दी। काशी के केन्द्रीय कारागार में आजाद के सब कपड़े उतारकर लकड़ी की एक चौखट केसाथ हाथ-पांव बांधकर पानी में भीगे बेतों से निर्ममता से प्रहार किए गए थे। पहले ही प्रहार से पीठ और नितम्बों से खून छलछला आया। फिर भी आजाद हर प्रहार पर वंदेमातरम और इंकलाब के नारे लगाता रहा।

आगे चलकर यही छात्र चन्द्रशेखर आजाद के नाम से काकोरी कांड से लेकर, सांडर्स वध कांड और असेम्बली बम कांड आदि अनेक मामलों में अपनी सक्रिय साहसिक भूमिका निभाते हुए इलाहाबाद के कम्पनी बाग में २७ फरवरी, १९३१ को शहीद हुआ। दंडाधिकारी को प्रथम बार अपना कल्पित नाम आजाद बताकर यह महान क्रांति सेनानी सदा के लिए 'आजाद' नाम से अमर हो गया और आजाद अक्सर कहा भी करते थे कि

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।
आजाद हैं हम और आजाद ही रहेंगे।

जब मुक्ति से वापस ही लौटना पड़ता है, तो मुक्ति के लिए श्रम करना व्यर्थ क्यों नहीं?

"मुक्ति जन्म मरण के सदृश नहीं, क्योंकि जब तक ३६००० (छत्तीस सहस्त्र) बार उत्पत्ति और प्रलय का जितना समय होता है, उतने समय पर्यन्त जीवों को मुक्ति के आनन्द में रहना, दुःख का न होना, क्या छोटी बात है? जब आज खाते पीते हो, कल (फिर) भूख लगने लगती है, पुनः इसका उपाय क्यों करते हैं? जब क्षुधा, तृषा, क्षुद्र धन, राज्य, प्रतिष्ठा, स्त्री सन्तान आदि के लिए उपाय करना आवश्यक है तो मुक्ति के लिए क्यों न करना? जैसे मरना अवश्य है तो भी जीवन का उपाय किया जाता है, वैसे ही मुक्ति से लौटकर जन्म में आना है, तथापि उसका उपाय करना अत्यावश्यक है।" —महर्षि दयानन्द

विश्व में यज्ञ क्रांति और दयानन्द

❑ आचार्य आर्यनरेश

आज से लगभग १२५ वर्ष पूर्व वैदिक वैज्ञानिक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेद मंत्रों का प्रमाण देते हुए सम्पूर्ण विश्व में यह घोषणा की थी कि वेद गडरिये के गीत नहीं अपितु विज्ञान के गीत हैं। अत: जो नादान लोग इसके सूक्ष्म वैज्ञानिक रहस्यों को नहीं समझ सके वे ही वास्तव में गडरियों के समान हैं। जिस मि. मैक्समूलर ने यह उपरोक्त बात कही थी जब उसने महर्षि देव दयानन्द का वेदभाष्य पढ़ा तो उसे अपनी भूल को सुधारते हुए यह लिखना पड़ा कि महर्षि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में वेदों के वैज्ञानिक स्वरूप को दर्शाया है। ऐसा तभी हो सकता है जबकि कोई व्यक्ति स्वयं भी वैज्ञानिक हो तथा सूक्ष्म वैज्ञानिक रहस्यों को समझता हो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती वर्तमान संसार के पहले ऐसे वैज्ञानिक थे जिन्होंने आज से १२५ वर्ष पूर्व वैदिक यज्ञ के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा की वात की। उन्होंने जहां यज्ञों के द्वारा वर्षा का समय-समय पर होना संभव बताया वहां यज्ञ-हवन के द्वारा शरीर के रोगों तथा प्राणी मात्र के कल्याण हेतु उसे सर्वाधिक उपयोगी भी बताया। जिस विषय में महा-वैज्ञानिक 'दयानन्द' यजुर्वेद का संस्कृत तथा हिन्दी में भाष्य करते हुए लिखते हैं कि **"वृष्टिश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम्"** यजुर्वेद १८-९, अर्थात् हम यज्ञ-अग्निहोत्र के द्वारा वृष्टि को सामर्थ्ययुक्त बनायें। इसी आधार पर अनेकों बार आर्य लोग भारत में विभिन्न स्थानों पर वर्षा करवा चुके हैं। आगे महर्षि दयानन्द वेदभाष्य में लिखते हैं—**"आपश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम"** यजुर्वेद १८-९, अर्थात् हम यज्ञ व यज्ञ की भस्म के द्वारा जलों को अधिक उपयोगी व पवित्र सामर्थ्य वाला बनाएं। **'पृथिवि च में यज्ञेन कल्पन्ताम'** यजुर्वेद १८-१२ अर्थात् हम अपनी भूमि को यज्ञ एवं उसकी भस्म केद्वारा अधिक उपजाऊ व निरोगधारी व उपज देने के सामर्थ्यवाली बनाएं। **इसी विधि से उत्तरी अमेरिका की होमोथेरेपी ऐसोसिसेशन की प्रवन्धिका श्रीमती होजेस ने १८८९-९० में अलबामा प्रांत में ओपेलिका शहर के उत्तरी भाग में १७ एकड़ भूमि को यज्ञ के द्वारा उर्वरा बनाया। यह एक ऐसी भूमि थी जिसे वहां के वैज्ञानिकों ने भी बंजर जानकर छोड़ दिया था। इस भूमि से यज्ञ के द्वारा जीवन लेवा हानिकारक रासायनिक कृषि की अपेक्षा ९६१ प्रतिशत अधिक उपज मिली।** अग्निहोत्र कृ. क्रांति पृष्ठ २२ से २६ यजुर्वेद १२-६८ के **'वपतेह बीजम् गिरा च'** में महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि श्रेष्ठ पैदावार हेतु बीज को भूमि में डालने से पूर्व यज्ञ की आहुति से व भस्म से संस्करित कर लें। यजुर्वेद १८-९ में **'कृषिश्न में यज्ञेन कल्पन्ताम'** में कहा गया है किहम कृषि को यज्ञ के द्वारा उत्तम बनाएं और फिर यजुर्वेद ६-२१ के **'पृथिवीं भस्मना पृण'** मन्त्रार्थ में बताया गया है कि जिस भूमि में बीज डालना हो उसे भी यज्ञ की भस्म से उपजाऊ बना लें। अगले यजुर्वेद के ही मंत्र -**व्रीहश्च में भवाश्च मे.. ..मृदगाश्च में....गोधूमाश्च में मंसूराश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम'** अर्थात् उपरोक्त सभी जो, तिल, मूंग, माष, गेहूं और मसुर आदि की खेती को यज्ञ के द्वारा उत्तम बनायें। इसी यजुर्वेद १८-४ के **'कृष्ट पच्याश्च में आकृष्ट पच्याश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम'** में लिखते हैं कि **खेती हल से करने योग्य हो अथवा विना हल के करने योग्य हो दोनों ही प्रकार की खेती यज्ञ से अधिक उत्तम व लाभकारी होती है।**

इसी बात को ध्यान में रखते हुए आज से लगभग २४ वर्ष पूर्व मनोहर के प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जी को जब मैंने दैनिक यज्ञ का संकल्प करवाया तो उनके द्वारा उस भस्म को 'कीनू' के पौधे में डालने अथवा एक विशेष पौधे के ही पास बैठकर यज्ञ करने से उस के फल का आकार, इसका स्वाद व पौधों की वृद्धि अन्य पौधों से बहुत उत्तम थी। स्थानीय कृषि अनुसंधान विभाग वाले भी यह देखकर आश्चर्यचकित थे। इसके पश्चात् हमने अनेकों लोगों को दैनिक यज्ञ करने का व्रत देकर उसकी भस्म का कृषि में प्रयोग करना बताया।

आज भारत, अमरीका, जर्मनी, पोलैण्ड, चिली व पीरू में कृषक इस यज्ञ-विज्ञान के द्वारा कृषि से घर के चमत्कारी लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए यजुर्वेद १२-६७ के **'सीरा पुजन्ति'**मंत्र में कहा गया है कि हमारे हल चलाने वाले किसान दूरदर्शी हों जो कि इस यज्ञ-विज्ञान को समझ कर कृषि में पूर्ण लाभ उठा सकें।

महर्षि देव दयानद के इस कृषि में यज्ञविज्ञान के रहस्योद्घाटन के पश्चात 'प्रभाकर मराडकर' महाराष्ट्र निवासी ने (जो कि स्वयं एक 'कीटनाशक' कम्पनी में कार्यरत हैं) बिना कीटनाशक और रासायनिक खाद के केवल यज्ञ के अनुष्ठान और उसकी भस्म से ही चमत्कारी खेती की। वहां अधिक वर्षा से भी ज्वार नष्ट न हुई। अग्निहोत्र वाली ज्वार साधारण दूसरी से १५ दिन पहले हुई। यह एक एकड़ में ११ क्विंटल हुई जब कि रासायनिक खाद वाले खेत में केवल ७ क्विंटल।

इसी प्रकार से महर्षि दयानन्द द्वारा दिए गये वैदिक-यज्ञ से ललितपुर (उत्तर प्रदेश) के श्री ए. प्रसाद

मिश्र ने केले पर परीक्षण किया जो कि चमत्कारी था। यज्ञ की भस्म से केले संख्या में कहीं अधिक और दूसरे केलों से बहुत मीठे थे। इनके पेड़ों पर ५०० केले लगे, इसी प्रकार से नासिक निवासी श्री निवृत्ति ना. ताम्बडे ने यज्ञ के द्वारा नारियलों के पेड़ों और सब्जियों में भी चमत्कारी वृद्धि की। ठीक इसी तरह से ही यज्ञ के अनुष्ठान और उसकी भस्म से श्री प्रतापसिंह मैना ग्राम लालू खेड़ी तहसील बैरसियां जिला भोपाल (मध्य प्रदेश) को भी सोयाबीन चना, मक्का व मसूर में चमत्कारी फसल प्राप्त हुई। यह फसल बीज रहित व वजन में अधिक थी।

कहते है कि 'जादू वही सच्चा जो कि सिर चढ़ कर बोले' इसी कहावत के अनुसार कानपुर में 'चन्द्रशेखर आजाद' कृषि विश्वविद्यालय के कृषि-विशेषज्ञ श्री डॉ. रामाश्रय मिश्र जी ने कानपुर में ही जोनिया ऊसर भूमि जहां कि अग्निहोत्र नगर की स्थापना होनी थी, उस बजर प्रायः तथा भवन निर्माण में भी अयोग्य भूमि को यज्ञ, उसकी भस्म व भस्म को पानी में मिलाकर १५ दिन तक खेती पर उसका छिड़काव करने से उसे उर्वरा बना दिया। आज वहां लगभग सब कुछ पैदा हो सकता है। यज्ञ विज्ञान के द्वारा की गयी खेती से उन्हें गेहूं की फसल पर विशेष सफलता मिली। यहां यज्ञ की खेती दूसरी साधारण गेहूं की खेती से ३८७ किलो अधिक हुई। कृषि में यज्ञ विज्ञान द्वारा यह भी पाया गया कि इसमें ९५ प्रतिशत बीज का अंकुरण हुआ। पौधों की ऊंचाई ७५ सेमी रही। पकने की अवधि १३२ रही। कल्लों की संख्या ६ रही और प्रति पौधा उपज ७.४० ग्राम रहा। ठीक इसी प्रकार से महाराष्ट्र निवासी डॉ. भुजवल जी ने पूसा विश्वविद्यालय में वैदिक यज्ञ विज्ञान कृषि से अंगूरों की खेती पर अद्‌भुत चमत्कार पाया। यह प्रयोग महाराष्ट्र के पुंडलीक खोड़े के बगीचे में नासिका जिले के पिपल गांव (बवंत) में किया गया। इस चमत्कार में यज्ञ से—

१. अंगूर की खेती से पांच मास पहले अंकुरित हुई।
२. गुच्छे का वजन .४५ कि. ग्राम (उसके समान) क्वालिटी टी. एस. एल ४ प्रतिशत अधिक।
३. साधारण खेती में ३० प्रतिशत नुकसान और बहुत बीमारियां लगीं जबकि वैदिक-यज्ञ-विज्ञान' से न कोई बीमारी लगी और न ही नुकसान ही हुआ। इसके साथ-साथ यज्ञ वाले अंगूरों का रंग सुनहरा लिए हुए पीला था जबकि साधारण रासायनिक खेती के अंगूरों का रंग हरापन लिए हुए पीला था।

यज्ञ विज्ञान जहां भूमि को विना रासायनिक जहर से अधिक उपजाऊ, फसलों व फलों व सब्जियों को अधिक वजनदार और गुणकारी बनाता है, वहां यज्ञ की भस्म अन्नों को सुरक्षित संग्रह भंडार क्षमता भी प्रदान करती है। वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा कृषि विशेषज्ञ श्री रामाश्रय जी ने कृषि विश्वविद्यालय कानपुर में यह पाया कि यज्ञ की भस्म डालकर रखे गये अन्न जहां कीड़ों से मुक्त रहे वहां कैंसर जैसी बीमारी फैलाने वाले पेस्टीसाईड्स की दुर्गन्ध से भी बचे रहे और उनका वजन भी कम नहीं हुआ। परीक्षणों द्वारा यह भी पता चला कि अग्निहोत्र भस्म और बी.एस.सी (१० प्रतिशत) पाउडर के कीटरोधक गुण एक समान थे।

इतना ध्यान में रहना चाहिए कि यदि हमें वैदिक यज्ञ-विज्ञान से कृषि में पूर्ण लाभ उठाना है तो हमें प्रातः सायं सूर्योदय व सूर्यास्त के समय गाय के घृत से ही उसमें चावल व अन्य रोगनाशक सामग्री डालकर यज्ञ करना चाहिए। कृषि हेतु विशेष फल पाने के लिए हमें समिधाओं के स्थान पर गाय या बैल के गोबर से बने समिधा के आकार के बने कण्डों पर आहुति डालनी चाहिए और एक आहुति महावैज्ञानिक देव दयानन्द द्वारा रचित संस्कारविधि ग्रन्थ-संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में दिये गए 'पिरामिड' टाईप के हवन कुण्ड में ही देनी चाहिए। जो कि तांबे का बना हुआ होगा तो पूर्ण लाभ होगा। यज्ञ करते समय यह कदापि न भूलना चाहिए कि हवन में बोले गये मंत्रों की ध्वनियां भी अनेकों कृमियों से वातावरण को बचाकर उसे कृषि हेतु अधिक योग्य बनाती हैं। अतः यजुर्वेद के १८-१ मंत्र में इसका विधान है।

ठीक इसी प्रकार से ही कृषि के साथ-साथ महावैज्ञानिक देव दयानन्द स्वकृत यजुर्वेद भाष्य १८वें अध्याय में लिखते हैं कि हम शरीर के सब अंगों व आयु को भी 'यज्ञ' के द्वारा सामर्थ्यवान अर्थात् निरोग और दीर्घ आयु युक्त बनायें। 'आयु यज्ञेन कल्पन्ताम्' इस विज्ञान के आधार पर कि यज्ञ रोगों को भी ठीक करता है। ठीक इसी तरह से भारत के ही नहीं अपितु विदेश के लोगों ने भी यज्ञ द्वारा सुंदर स्वास्थ्य पाया है।

अतः धर्म, धन, व जीवन को बचाने तथा तनाव, रासायनिक खादों से उत्पन्न कैंसर जैसे रोगों व मृत्युदायक पैस्टीसाईड्स (रासायनिक कीटनाशकों) के विनाश से बचने हेतु प्रतिदिन महा-वैज्ञानिक देव दयानन्द द्वारा बताये गये वैदिक यज्ञ को प्रतिदिन करने का संकल्प करें। वेद मंत्रों के उच्चारण से उनके याद होने पर जहां आप का सत्य सनातन धर्म बचेगा वहां रासायनिक खादों व कीटनाशक छिड़कावों में बर्बाद होने वाले धन तथा उनसे होने वाले रोगों से बचकर आप अपने बहुत सारे धन को भी बचा सकेंगे। इतना ही नहीं अपितु यज्ञ की सुंदर सुगन्ध व मंत्रों की मधुर शान्त ध्वनि से 'मनो यज्ञेन कल्पन्ताम' अपने मन को भी तनाव मुक्त करके जीवन का पूर्ण आनंद प्राप्त कर सकेंगे।

आर्य शिखर, वेदसदन, महर्षि दयानंद मार्ग, डोडर
(राजगढ़) सिरमौर, हिमाचल

भौतिक-अमरता (धारा-३)

❑ डॉ. ज्ञानचन्द्र

मानव मन की माया विचित्र है। अशिव संकल्प और अशुभ लिप्साओं से कुहुकाच्छादित हुआ मानव अपनी मंद और अभद्र सीमाओं के बाहर नहीं जा पाता। 'शिवसंकल्प' युक्त मन में ही मानसोपरि विज्ञान का परम प्रकाश झलकायित होता है। अतः आप आर्यसमाजी हों या सनातनी, दार्शनिक हों या वैयाकरण, साहित्यिक हों या चिन्तक—वेदार्थ में प्रवेश तब तक संभव ही नहीं है जब तक ज्योतिषां ज्योति मनस्तत्व शुद्ध, निष्कलुष व अकलंक न हो जाए।

वेद स्पष्ट ही मानव को देव के, अग्नि के तेजस्वी और ऊर्जस्वी स्वरूप में स्वरूपान्तरित कर देने के पक्षधर हैं। मिथ्यात्व के इन्द्रजाल से उबारकर अनस्तित्व की भ्रांति मिटाकर सतत्व की परम-तथ्यात्मकता में लाकर वेद हमें पूरी तरह तमस् मुक्तकर शुभ्र-स्वर्णिम प्रभु-प्रकाश में अभिसिंचित कर देना चाहते हैं।

स्व-चिंतक व स्व-लिप्त अहंकार से मुक्त होकर पारमात्मिक प्रभा में अवगाहित होते ही 'मृत्यु' एक दुःस्वप्न की तरह विलीन हो जाती है। असत्, तम व मृत्यु-तीनों ईश्वर विरोधी विभ्रांतियां हैं जो तभी तक सत्याभास देती हैं जब तक साधक वृषभाग्नि को अपने भीतर पूरी तरह प्रज्वलित और परिमुक्त करके स्वयं भी साक्षात स्वयं के उद्गम और विकास को नहीं जान लेता। स्वयं के लिए जातवेदस् बन कर मानव अपनी इसी भौतिक पदार्थ के द्वारा बनी पादार्थिक देह के कणों को मृत्यु की, विनाश की संभावना तक से मुक्त कर सकेगा। प्रथम परिणाम के रूप में रोग मुक्ति, मल-मूत्र का अभाव, भूख, नींद, थकान की पूरी तरह अनावश्यक्ता तथा सतत आत्मतृप्ति का परमानन्द इस प्रकार के सिद्ध का स्वाभाविक लक्षण होता है।

आज से १०० वर्ष पूर्व बड़ालूर तमिलनाडु के स्वामी रामलिंगम् सदेह वातावरण में विलीन हुए-ऐसा ग्रामीणों ने प्रत्यक्ष देखा। उनकी देह तक नहीं बची। जिस कक्ष में वे लुप्त हुए थे वह आज भी वैसा का वैसा वहां स्थित है। मृत्यु से प्रायः २-३ वर्ष पूर्व स्वामी रामलिंगम की देह की छाया तक भूमि पर पड़नी बंद हो गई थी। किसी विशिष्ट प्रकार की प्रक्रिया से सूर्य की किरणें उनके शरीर पर न रुककर टकराकर वापिस हो जाती थीं अतः छाया पड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता। देह में एक प्रकार की पारदर्शिता भी विकसित हो गई थी।

स्वामी रामलिंगम की किदवन्ती की परीक्षा करने का कोई साधन हमारे पास नहीं है। परन्तु उनके ग्राम व आसपास के इलाके में उनकी कथा एक ही रूप में सर्वत्र प्रचलित है। 'निराकार-प्रेमिल-ज्योतिरूप' परमात्मा के उपासक रामलिंगम स्वामी भौतिक देह के अमरत्व के प्रबल प्रमाण हैं। लेख के अन्त करने से पूर्व हम अमरता सम्बन्धी कुछ वेद मंत्रों का संदर्भ प्रस्तुत कर रहे हैं। सहृदय व खोजी पाठक इस भौतिक-अमरता प्रश्न पर अध्ययन व मनन करें तो बहुत श्रेयस्कर व उपकारी साथ ही उपयोगी बात होगी।

'ऋत तत्व का प्रथम अभिव्यक्त प्रजापति ब्रह्मात्मा के लिए पदार्थ रूप अन्न को तैयार करता रहा। पुनः जिसने क्रमिक लोकों को अभिव्यक्त करके धारण किया। वह प्रजानाथ कभी किसी को क्षत नहीं करता। उस सूक्ष्म पदार्थ से मैं मृत्यु को अतिक्रमण करता हूँ।'

—ऋ. ४/३५/१

'जो प्राण देने वाले प्राणों का दाता है। जिसके लिए घृतवान् (शुद्ध चैतन्यवान्) लोक चैतन्य-रस प्रदान करते हैं, जिसकी सभी दिशाएं जीवन-ज्योति से पूर्ण हैं, उस अमृत-पदार्थ से मैं मृत्यु को तरता हूँ।' —ऋ. ४/३५/५

उन व्रतयुक्त कर्मों को करता हुआ मैं मृत्यु रहित शाश्वत प्राण से युक्त संसार में भ्रमण करता हूँ। इससे आत्म रूप स्वभाव, जीवन रूप प्राण व अस्तित्व रूप तन्तुमय स्नायुजाल श्रेष्ठ और समर्थ बनते हैं तथा सैकड़ों कार्य करने वाले बनकर प्रकाश व प्रभाओं को धारण करते हैं तथा समर्पण करके ऊर्जावान् होते हैं।

—ऋ. ५/१/७

तेरे निकट से भी निकट, तेरे दूर और सब ओर तेरी प्राणोर्जा को दृढ़ बांधता हूँ। तू इसी विश्वलोक में निवास कर। अपने पूर्वजों के पास न जा तथा पूर्वगामी पितरों का अनुगमन न कर और यहीं रह। —ऋ. ३०/१

हे पुरुष अपने संपूर्ण मन सहित इहलोक में निवास कर। यमदूत का अनुगमन न कर। इस जीवन-नगरी में ही सदा रह। —ऋ. ५/३०/६

(हे साधक) डर मत। तू अब कभी नहीं मरेगा। जरापन से तुझे मुक्त करता हूँ। तेरे अंगों से सब प्रकार के ज्वर व क्षयवृत्ति को निकाल देता हूँ। —ऋ. ५/३०/८

यह अग्निरूप चैतन्य समीप रखने योग्य है। तेरे

लिए यहां दिव्य सविता उदित हो। मृत्यु जो गहरा, काला तथा अंधकाररूप है, उस मृत्यु से तुम पार हो जाओ।

—ऋ. ५/३०/११

तेरा प्राण कभी नष्ट न हो, तेरा अपान कभी भी आवृत न हो। जीवन ऊर्जा के अधिपति सूर्य तुझे अपनी जीवनदायक रश्मियों से प्रतिरोधक बनाएं।

—ऋ. ५/३०/१५

सहस्त्रों शक्तियों से युक्त सैकड़ों वीर्य सामर्थ्यों से युक्त, सैकड़ों समर्पित हवन क्रियाओं से इसे मृत्यु से लौटा लाया हूँ। —अथर्व. ३/११/३

जीवितों की प्राण शक्ति, प्राणशक्ति सदा के लिए प्राप्त कर। यहां सदा जीवित रह, मर कभी नहीं।

—अथर्वः ३/३१/९

'मृत्यु की परिस्थिति को हटाते हुए, इसी आयु को दीर्घ व श्रेष्ठ बनाते हुए, योगासन करते हुए, मृत्यु को हटा दो। जीवन जीते हुए ही अपने हृदय में पूर्ण समर्पण को प्रज्वलित रख सकोगे।' —अथर्वः १२/२/३०

मानसिक अमरत्व, प्राणों का सातत्य, चेतना की व्यापकता व सघनता तथा परिपूर्ण रूप से समर्पित ईश्वरर्पण वृत्ति द्वारा अमरता एक स्वाभाविक प्रघटन है कोई चमत्कारिक वैचित्र्य नहीं। (श्री अरविन्द चेतना समाज)

स्पष्ट ही यह नया अनुसंधान है तथा कुछ विचित्र भी। इस पर यदि पाठकगण परिचर्चा प्रारंभ करें तो उचित होगा। जनज्ञान के माध्यम का प्रयोग करें। —संपादक

(पृष्ठ १६ का शेष)

तिलक से कितना डरती थी—मुजफ्फरपुर में ३० अप्रैल १९०८ की रात्रि में खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने बम विस्फोट किए। इस विषय पर दैनिक 'केसरी' के मई व जून के चार अंकों में प्रकाशित लेखों की 'राजद्रोहात्मक' ठहराकर एक अंग्रेज न्यायाधीश ने लोकमान्य तिलक को छह साल की सजा सुनाई। इससे स्पष्ट होता था कि सन् १९०८ का यह मुकदमा केसरी में प्रकाशित लेखों के विरूद्ध था। स्वराज्य स्थापना हेतु साधक को साधना यानि साधन की आवश्यकता होती है। तिलक जी का राजनीतिक सूत्र था कि समय परखकर सही साधन का उपयोग किया जाये। आप अवसर के अनुरूप हिंसा मार्ग अपनाने से भी न हिचकते। उन्होंने समय-समय पर सशस्त्र क्रांति की 'शक्य शक्यता' अजमाई। पर वह कानून की हद का पालन करते हुए राजनीति के लाभदायी मार्ग को अपनाते थे। वह कहा करते थे राजकरना कोई साधुओं का खेल नहीं है। अतः वह शस्त्राचार को अनैतिक नहीं मानते थे। दूसरी तरफ वह उतावलेपन में या अविचार से शस्त्र का प्रयोग करने वालों को अवश्य ही रोकते थे। अंग्रेज सरकार के गुप्तचर विभाग के अधिकारियों द्वारा तिलक जी पर बराबर नजर रखी जाती थी। १९०७-१९०८ में तिलक जी के कुछ गतिविधियों के सबूत अंग्रेजी सरकार के हाथ लगे जिनमें बम-विस्फोट तथा बम निर्माण में कार्यरत लोगों से उनका सम्पर्क होने का सूत्र मिला। न्यायालय ने यह आरोप सिद्ध करने हेतु यही आवश्यकसबूत मानकर २४ जून १९०८ को तिलक जी को गिरफ्तार किया। उस दिन सरकार के पास यह आरोप सिद्ध करने हेतु पर्याप्त और निश्चत सबूत नहीं थे। लेकिन पुणे तथा अन्य शहरों में घटी घटनाओं को देखते हुए सरकार ने लोकमान्य को बंदी बनाना ही बेहतर समझा था।

२ जून १९०८ को पुणे में तीन स्थानों पर बम विस्फोट हुए। इससे पूर्व १६ मई १९०८ के दिन हुए बम विस्फोट के पश्चात् १९ मई के केसरी में छपे अग्रलेख का शीर्षकथा—"दुहेरी इसारण" इसी प्रकार तिलक जी अपने लेखों में और हिम्मत के साथ कहने से न चूकते थे। अंग्रेजी सरकार ने उनको अनेकों बार कारावास का दण्ड तो दिया परन्तु तिलक जी को वह देशसेवा के कार्यों से विचलित नही कर सकी। आपने कारावास के दौरान गीता का उत्तम भाष्य लिखा जो आगे चलकर प्रकाशित हुआ। आप स्वतंत्रता के अमर पुजारी थे। एक चट्टान की तरह अडिग होकर जनता के सामने स्वतंत्रता के अधिकार की बात उठाते हुए जगह-जगह भ्रमण करते रहे। आप १९१७-१८ में मथुरा भी पधारे थे। उन्होंने हिन्दुस्तान की जनता में देशप्रेम की चेतना की लहर दौड़ाई और भारत मां को स्वतंत्रत कराने में अपना पूर्ण सहयोग दिया। आप पूर्ण स्वराज्य का अखण्ड शंखनाद करके १ अगस्त १९२० को महाप्रयाण कर गए। वास्तव में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जी का जीवन सदैव हर राष्ट्रभक्त को प्रेरणा देता रहेगा।

आकाशवाणी भवन, नई दिल्ली।

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिन्दी का प्रचार प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें। —संपादक

प्रार्थना–प्रदीप

❒ नित्यानन्द

३

ओं भूभुर्वःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

हे सकल संसार के उत्पादक, सच्चिदानन्दस्वरूप परमेश्वर ! इस गहन और बीहड़ संसार में अपने पथ को खोजने के लिये तुमने बुद्धिरूपी प्रदीप हमें दिया है। पर जीवन में अनेक समय उपस्थित होते हैं, जिस समय कर्तव्य क्या है। यह कुछ सूझ नहीं पड़ता है। सब जगह अन्धकार और अन्धकार दिखाई देता है। ऐसे कठिन समयों में तुम्हारा दिव्य प्रकाश ही हमें मार्ग दिखा सकता है।

प्रभु ! तुम सविता हो, प्राणि-प्राणि के हृदय में विराज कर तुम प्रतिक्षण प्रेरणा देते हो, और निर्भ्रान्तरूप से पथ-प्रदर्शन करते हो। न केवल प्राणिजगत् में अपितु संसार के जर्रे-जर्रे में जो-जो गति, चेष्टा और हरकत दिखाई देती है उन सबके तुम्हीं प्रवर्तक हो।

हे सर्वप्रेरक प्रभु ! तुम्हारी प्रेरणा का प्रवाह आदि काल से चल रहा है। पर हमारी वीणा बेसुरी के लिए तुम्हारी प्रेरणा पाने में हम असमर्थ हैं और इसीलिये सब संशय और उलझन है। हे प्रकाशपुंज प्रभु! तुम्हारे साथ समस्वर होने के लिए हम अपने हृदय का द्वार तुम्हारी ओर खोलते हैं; अपने सम्पूर्ण विचार, चिन्तन और प्रेम तुम्हें अर्पित करते हैं; और तुम्हारे वरणीय प्रकाश को अपनी आत्मा में समाने का प्रयास करते हैं। हे ज्योतिर्मय प्रभु ! प्रकाश बरसने दें, अपनी ज्योतिर्मय किरणों से मेरी अन्तरात्मा के कोने-कोने को आलोकित होने दें।

हे ज्योतिर्मय प्रभु ! अन्तरात्मा में धारण किया हुआ तुम्हारा विशुद्ध तेज इस बीहड़ संसार में मार्ग दिखाने के लिए निर्भ्रान्त प्रकाश बनता है। जो तुम्हारे दिव्य प्रकाश को धारण करता है वह तुम्हारे हृदय के एक-एक स्पन्दन को सुनता है। जिस सुर और ध्वनि को तुम छेड़ते हो प्रकाश परिपूर्ण आत्मा उससे प्रतिध्वनि हो उठता है। यह अनन्त आनन्दमय स्थिति है। कर्म और अकर्म की यहां उलझन नहीं। धर्म और अधर्म की उलझन नहीं। यहां आशय है, न भय, न भ्रान्ति है।

हे दिव्य ज्योतिर्मय सम्पन्न प्रभु ! हमारी यही विनय है कि हमारी आत्मा तुम्हारे विशुद्ध प्रकाश से परिपूर्ण हो, प्रत्येक प्रवृत्ति के लिए तुमसे प्रेरणा प्राप्त हो और हमारे जीवन रथ का संचालन स्वयं तुम्हारे अमृतमय हाथों से हो।

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्ति!!!

४

ओं त्वं हिनः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ अधा ते सुम्नमीमहे॥

हे सकल संसार के उत्पन्न करनेवाले परम सुख-दायक परमेश्वर ! तुम्हीं हम सबके असली पिता हो। तुमसे बढ़कर हमारा कोई रक्षक तथा पालक नहीं। हमारे जन्म देने वाले बहुत समर्थ पिता भी हमारी रक्षा करने में असमर्थ हो जाते हैं, उस समय तुम्हीं हम सबकी पुत्रों के समान रक्षा तथा पालना करते हो। हमारी पालना के लिए तुमने अपनी रक्षक भुजाएं, सब जगह फैलाई हुई हैं। सैकड़ों संकटों से घिरे होने पर, जब बचने की कोई आशा नहीं होती, उस समय भी तुम्हारी प्रेम भरी भुजाएं हमें विपत्तियों से उबारती हैं। पिता ! तुम्हारा प्रेम अनन्त है।

हे जगत्पिता परमेश्वर ! तुम्हीं हम सबकी माता हो। तुम्हारे स्नेह तथा दया का कोई अन्त नहीं। तुम सर्वान्तर्यामी हो। हमारे प्रत्येक दोष और अवगुणों को तुम जानते हो। परन्तु फिर भी स्नेहमयी माता के समान तुम हमसे प्यार करते हो। हमारे दोषों तथा अवगुणों को जानकर तो कोई भी हमें अपने पास बिठलाना पसन्द नहीं कर सकता। परन्तु तुम हमारे हृदय की सब कलुष भावनाओं को जानते हुए भी, माता जैसे मैले कुचैले और धूलि से लिपटे अपने बच्चों को अपनी गोद में बिठलाती है, पुचकारती है और प्यार करती है, उसी प्रकार तुम भी हमें अपनी अमृतमयी गोद में बिठलाते हो, हमसे प्यार करते हो, शक्ति और सान्त्वना देते हो। हे जगजननी! तुम धन्य हो ! हे हम सबके पालन करने वाले असली पिता, तुम धन्य हो!! तुम्हारे सिवाय हमारे लिए स्तुत्य कौन है? हम सब अपना प्रेम तुम्हें अर्पण करते हैं, तुम्हारी महिमा के गीत गाते हैं और कृतार्थ होते हैं। हे परम पिता परमेश्वरं ! पुत्र की तरह तुम्हारी आज्ञाओं का पालन करना ही हमारा परम कर्तव्य है। इस सृष्टि रूपी महाकाव्य द्वारा तुम्हारी आज्ञाओं को हम जानें और उनका पालन करते हुए तुम्हें प्रसन्न करें। तुम्हारी प्रीति, तुम्हारी सुमति और तुम्हारे आशीर्वादों को प्राप्त करने के लिए, हम सदा सत्य का ही चिन्तन करें, सत्य का ही आचरण करें, और तुम्हारे सब अमृत—पुत्रों से प्रीति करें।

हे हम सबके पिता! हम अबोध बालक हैं। अपने भले बुरे का हमें सम्यक् ज्ञान नहीं। हे पिता! तुम्हीं जानते

हो कि हम बच्चों का कल्याण् किसमें है। इसलिए हम तो तुमसे कल्याण की याचना करते हैं तुमसे तुम्हारी प्रीति और सुमति मांगते हैं। हम सब तुम्हारे पुत्र हैं। हमारे लिए जो कुछ शुभ है, वह हमें दो। तुम सदा हमारा कल्याण ही करते हो, हमें यह श्रद्धा तथा अटल विश्वास हो।

हे पालक पिता ! हे जगजननी! तुम्हारी सुखद और स्नेह-भरी गोद में हमारी सब कामनाएँ पूर्ण हों, हम निर्भय हों, समृद्ध हों।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः!! शान्तिः!!!

५

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्!
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥

(युवकों तथा विद्यार्थियों के लिये उपयोगी प्रार्थना)

हे सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मन्! इस संसार के सम्पूर्ण पदार्थों को तुमने हम सबके सुख, वृद्धि तथा उन्नति के लिये रचा है। तुम्हारे दान तथा उपकारों का कोई अन्त नहीं है। तुम्हीं हमारे सच्चे पिता, माता तथा सखा हो। हे प्रभो ! तुम्हारी कृपा तथा करुणा का स्मरण करते हुये हम सब श्रद्धा और भक्तिभाव से तुम्हारे चरणों में प्रणाम करते हैं।

हे सब प्रकार के बलों के स्वामिन् ! हमें बल दो। हमारा शरीर स्वस्थ हो, सुन्दर हो और बलिष्ठ हो। हमारे प्रत्येक अंग में शक्ति हो। हमारा जीवन नियमित हो, जिससे कि हम सौ वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त करें। हे परमात्मन्! हम सौ वर्ष तक सुनते रहें सौ वर्ष तक देखते रहें, सौ वर्ष तक उत्तम-उत्तम कार्य करते रहें और सौ वर्ष तक तुम्हारे गुणगान गाते रहें। हे सर्वज्ञ परमेश्वर! बाल्यकाल का समय अत्यन्त कीमती है। हम इसे खेल-कूद में यों ही न गंवा दें। इस समय की शिक्षा, परिश्रम और पुरुषार्थ पर ही हमारा उज्ज्वल भविष्य आश्रित है। इसलिए हम अपने समय का सदुपयोग करें खूब शिक्षा प्राप्त करें और अत्यधिक पुरुषार्थ करें। हम कभी आलस्य और प्रमाद न करें। विद्या की प्राप्ति में हे परमात्मन्! हम कभी सन्तोष न मानें। अनेक प्रकार के ज्ञान के संचय द्वारा हम अपने मन को उन्नत, पवित्र तथा विकसित बनावें।

हे शुद्ध पवित्र परमात्मन्! हम सबकेसाथ प्रीतिपूर्वक वर्ताव करें। हम किसी से ईर्ष्या तथा द्वेष न करें। हमारे व्यवहार में स्वार्थ तथा छल कपट न हो। यह समझते हुये कि सत्य से बढ़कर कोई पुण्य नहीं और असत्य से बढ़कर कोई पाप नहीं, हम सदा सत्य ही बोलें। कितनी ही मुसीबत और संकट क्यों न आवें हम कभी-भी सत्य को न छोड़ें। हम वीर, तेजस्वी तथा निर्भय हों। हे प्रभो ! हममें विनय, सरलता तथा सादगी हो। माता, पिता तथा गुरुजनों का हम सदा कहना मानें तथा उन्हें सब प्रकार से सदा प्रसन्न रखें। हे प्रभो ! हमारी वाणी में मिठास हो, हमारे उठने बैठने में मिठास हो, हमारे व्यवहार में मिठास हो, हमारे सम्पूर्ण जीवन में मिठास हो, जिससे हम सबके प्यारे बनें। हे परमात्मन् ! सबसे प्रेम करने से तथा सबके प्यारे बनने से तुम हमसे अत्यधिक प्रसन्न होते हो और हम पर आनन्द की वर्षा करते हो।

हे प्रभो! तुमसे यही विनय है किहमारा जीवन पवित्र और ज्योतिर्मय हो, जिससे हम तुम्हारा प्रेम, तुम्हारी सफलता और तुम्हारे आनन्द को प्राप्त कर सकें।

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

६

तुम्हारे व्रत में दीक्षित हों

हे सब प्रजाओं में रमण करने वाले प्रजापति परमात्मन्! तुम्हीं हम सबके वास्तव में पालक तथा पोषक हो। तुम्हारी शरण में पहुँचकर भक्तजन निर्भय हो जाते हैं। तुम्हारी शरण में पहुँचने से ही हमारी सब कामनाएँ पूर्ण होती हैं। तुम्हारी शरण के सामने संसार के सब सुख, सब आश्रय और सब शरणें अत्यन्त तुच्छ हैं। इसलिए हे प्रभो ! हम सब तुम्हारी शरण में उपस्थित होते हैं।

हे जगज्जननी ! तुम्हारी सुखद गोद में स्थान पाने के लिए हम तुम्हारे व्रतों का पालन करें। दिन रात परोपकार किये जाना तुम्हारा महाव्रत है। आठों पहर, हर घड़ी और हर पल तुम हमारे न समझने पर भी, हम पर उपकार कर रहे हो। तुम्हारे रचे हुए पदार्थ भी परोपकार के व्रत का निर्देश कर रहे हैं। सूर्य और चन्द्र प्राणिमात्र के भले के लिए बिना कुछ चाहते हुए, दिनरात प्रकाश किए जाते हैं। विविध प्रकार के फूल बिना स्वार्थ के अपनी मीठी सुगन्ध से सब स्थानों को सुरभित किए जाते हैं। वर्षा की नन्हीं-नन्हीं बूदें नाना प्रकार की औषधि और वनस्पति की उत्पत्ति के लिए पृथ्वी पर अपनी आहुतियाँ दे रही हैं। यह विस्तृत पृथ्वी हे प्रभो ! तुम्हारी यज्ञस्थली है। यहाँ हर पदार्थ पर-उपकार में लगा है। परोपकार करना तुम्हारा व्रत है।

हे परमपिता परमात्मन्! इस यज्ञस्थली में हम ही एक ऐसे हैं। जो तुम्हारे व्रत का भंग करते हैं। हमारे प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ छिपा है। हम जो भी कार्य करते हैं स्वार्थ के लिए, अपने स्वार्थ की इन कलुषित भावनाओं से हम तुम्हारे यज्ञ को दूपित करते हैं।

हे प्रभो ! तुम्हारी शरण और कल्याण के चाहनेवाले

हम सब दृढ़संकल्प के साथ परोपकार के तुम्हारे व्रत में दीक्षित हों। तुम्हारे व्रत का पालन करने वाले तुम्हारी सर्वशक्तिमान् शरण में पहुँच जाते हैं, जहाँ किसी प्रकार के भय अथवा संकट का प्रवेश ही नहीं। तुम्हारी शरण तो एक आनन्द और मंगल का मूल है। हे परमात्मन्! तुम्हारी शरण और तुम्हारा अमूल्य प्रेम पानेवाले के लिए तुम्हारे व्रत के पालन की जरूरत है। इसलिए हमारी बार-बार यही प्रार्थना है कि हमारी स्वार्थ की तुच्छ भावनाओं को दूर कीजिए। हम सब प्राणियों के साथ प्रेम करें। सबको मित्र की दृष्टि से देखें। सबके भले में हम अपना भला समझें। हमारे हृदय उदार, विशाल तथा सहानुभूतिपूर्ण हों, जिससे कि हम प्रत्येक कार्य को पवित्र और परोपकार की भावना से कर सकें। हे सब गुणों के उत्पादक प्रभु ! तुम्हारी कृपा और तुम्हारे उपकारों के सामने हम सब नतमस्तक हो बार-बार प्रणाम करते हैं। अपनी शरण में हमें स्थान दो, हमारी यही विनय है।

ओ३म! शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

७

दृते दृंहमा ज्योक्तेसंदृशि जीव्यासम्। ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्॥

हे सर्वशक्तिमान्, परमदृढ़ परमेश्वर! मुझे अपने समान दृढ़ तथा शक्तिमान् बनाओ। हे जगदीश्वर! तुमसे पाया हुआ जीवन मैं तुम्हारी देख-रेख में बिताना चाहता हूँ। मुझे यह सदा स्मरण हो कि तुम मुझे देखते हो, तुम्हारी स्मृति जागृत रखते हुये और तुम्हें निरन्तर अपने सामने अनुभव करते हुये मैं पूर्ण आयु व्यतीत करूं। प्रत्येक क्रिया और चेष्टा करते हुये मुझे यह अनुभव हो कि तुम मुझे देख रहे हो।

हे परमात्मन् ! तुम्हारी देख-रेख में जीने से काम, क्रोध, लोभ, मोह, शोक आदि कोई भी विकार जो आयु को क्षीण करते हैं, अपना कुप्रभाव नहीं डाल सकते। आयु को क्षीण करनेवाले इन कुप्रभावों से बचने से दीर्घ जीवन स्वयं ही प्राप्त हो जाता है। इसलिये मेरी तो यही चाहना है कि प्रतिक्षण तुम्हारी देख-रेख का अनुभव करते हुये, अपने कर्तव्य कर्म करता हुआ मैं जी सकूँ।

हे परमात्मन्! तुम मेरे प्राणों के प्राण तथा जीवनसार हो। परन्तु फिर भी सांसारिक झमेलों में उलझकर मैं तुम्हें बहुधा भूल जाता हूँ। कभी अहंकारवश और कभी निर्बलतावश, कभी सुख में और कभी दुःख में, मुझसे तुम ओझल हो जाते हो। तुम्हें भूलकर मैं पाप का आचरण करता हूँ, प्रलोभनों और कलुष भावनाओं के जाल में फँसता हूँ। अपने आप को दीन-हीन तथा दुःखी अनुभव करता हूँ। इसलिये हे प्रभो ! मेरी तो यही प्रार्थना है कि मुझे दृढ़ बनाओ, मुझे श्रद्धा तथा अटल विश्वास दो, जिससे कि मैं तुम्हें कभी भूलूँ नहीं, तुम्हारी सर्वव्यापकता का भाव मेरे अन्तःकरण में सदा जागृत रहे। हे सर्वशक्तिमान् प्रभु ! तुम्हारी अध्यक्षता में रहना और दीन हीन होना संभव नहीं। तुम्हारी कृपा से मेरी सब कामनाएं प्रतिक्षण पूर्ण होती रहती हैं। मेरी तो तुमसे यही याचना है कि मैं तुमसे कभी बिमुख न होऊँ, मैं सदा यह अनुभव करूं कि तुम सब जगह व्याप रहे हो, सदैव तुम्हारी प्रेममयी दृष्टि और करुणा भरा हाथ अपने ऊपर देखूँ। अपने कर्तव्य पालन द्वारा तुम्हारी प्रसन्नता और प्रेम प्राप्त कर सकूँ।

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

सत्यार्थ प्रकाश रखो अपने पास

❑ खुशहालचन्द्र आर्य

है यह अमूल्य निधि महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश,
जिससे होता है अज्ञान, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का विनाश।
जब से हुआ यह शिक्षाप्रद, ज्ञान पुञ्ज ग्रन्थ प्रकाशित,
वेद जो ईश्वरीय ज्ञान है, उसका विश्व में कर रहा है प्रकाश॥
है यह अमूल्य निधि सत्यार्थ प्रकाश १

इस महान् ग्रन्थ में है प्रेरक, जीवनोपयोगी चौदह समुल्लास,
जिनको पढ़ने से होती है सद्ज्ञान की वृद्धि, मन में बढ़ता है उल्लास।
है यह चारों वेदों के सार का विशाल अति उत्तम संग्रह,
इसमें मिलते हैं हीरे, मोती, जवाहरात, करने से सतत् प्रयास॥
है यह अमूल्य निधि सत्यार्थ प्रकाश २

जो भी उलझने, समस्याएं आपके जीवन में आवें,
ढूंढो इसमें मिलेगा समाधान, इसलिए पढ़ने का निकालो अवकाश।
महर्षि जी का है यह सबसे विशेष अमूल्य ग्रन्थ,
इसमें लिख दी जीवन की सभी बातें जो होती हैं खास-खास॥
है यह अमूल्य निधि सत्यार्थ प्रकाश ३

इसके पढ़ने से कितनों के जीवन बदले, बने पुरुष महान्,
वैसे उदाहरण तो अनेकों हैं, पर गुरुदत्त, श्रद्धानन्द और बिस्मिल हैं खास।
इसको सब पढ़ें, समझें और आचरण करें इसमें लिखे अनुसार,
तब पूरा विश्व बन जायेगा स्वर्गधाम और हो जायेगा सभी दुष्टों का ह्रास।
है यह अमूल्य निधि सत्यार्थ प्रकाश ४

१८० महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७

आर्यसमाज की विचारधारा (२)

□ स्व. पं. क्षितीश वेदालंकार

राजनैतिक विचारधारा

जहाँ तक आधुनिक राजनीति का सम्वन्ध है, उसका आपाततः आर्यसमाज से सीधा सम्बन्ध नहीं है। परन्तु राजनीति भी जीवन का आवश्यक अंग है इसलिए न कभी वेदों ने उसकी उपेक्षा की, न स्मृतियों ने और न ही आर्यसमाज ने। वेद और स्मृतियाँ आदि यद्यपि धर्मशास्त्र हैं राजनीति शास्त्र नहीं, परन्तु वैदिक धर्म ने धर्म को जो व्यापक रूप दिया है उसमें राजनीति भी समाविष्ट हो जाती है। क्योंकि **"धर्मो धारयते प्रजाः"**—प्रजा का जिससे धारण होता है, वही धर्म है, प्रजा का धारण क्या कभी उसकी रक्षा-व्यवस्था के बिना और न्याय-व्यवस्था के बिना सम्भव है? ऋषि दयानन्द राजनैतिक नेता (पोलिटिकल लीडर) भले ही न हों, किन्तु राजनैतिक तत्त्ववेत्ता (पोलिटिकल फिलास्फर) अवश्य थे। इसीलिए उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में एक पूरा समुल्लास (छठा) राजनीति के ही अर्पण किया है। वे राजनीति के बजाय राजधर्म शब्द का प्रयोग करते हैं।

आर्यसमाज स्पष्टतः न एकतन्त्र का, न बहुतन्त्र का, नहीं दलतन्त्र का, प्रत्युत लोकतन्त्र (डेमोक्रेसी) का पक्षपाती है। आर्यसमाज का संविधान इसका साक्षी है। धार्मिक क्षेत्र में जैसे गुरुडम है, वैसे ही राजनैतिक क्षेत्र में एकतन्त्र या अधिनायक तन्त्र (डिक्टेटरशिप) है। दोनों समान रूप से दूषित हैं। आर्यसमाज इन दोनों का समर्थककभी नहीं हो सकता। परन्तु राजतन्त्र (मोनार्सी) का वह उतना विरोधी नहीं है। राजनीति शास्त्र की परिभाषाओं की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि आर्यसमाज संसदीय लोकतन्त्र का पक्षपाती है। यदि इंग्लैंड में राजा के रहने पर भी संसदीय लोकतन्त्र में बाधा नहीं पड़ती तो भारत में भी नहीं पड़ सकती। परन्तु वह राजा वंश-परम्परा से नहीं होना चाहिए, प्रत्युत उसका भी लोकतन्त्रीय निर्वाचन-पद्धति से निर्वाचन होना चाहिए। आर्यसमाज का स्वप्न चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने का है, परन्तु यहाँ 'साम्राज्य' शब्द से घबराने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि चक्रवर्ती साम्राज्य से आर्यसमाज को जो कुछ अभिप्रेत है, वह लगभग वही है जिसे राजनीति-विशारदों ने 'विश्व-साम्राज्य' का नाम दिया है। संयुक्त राष्ट्र-संघ की कल्पना उसी विचार का परिणाम है। आचार्य विनोबा भावे 'जय जगत्' के नारे से वही बात कहना चाहते हैं। संन्यासी के विश्व प्रेम की भावना उसी में चरितार्थ होती है और **'सर्वे सन्तु निरामयाः'** की वैदिक भावना तभी कृतकार्य हो सकती है।

आधुनिक भारतीय राजनीति के संदर्भ में एक बात की ओर ध्यान दिलाना अत्यन्त आवश्यक है। अहिंसा के आदर्श से अनुप्राणित भारत सरकार कभी-कभी ऐसे मानसिक व्यामोह का परिचय देती है जो राष्ट्र-रक्षा के लिए सर्वथा घातक होता है। जहाँ हिंसा का प्रयोग परम कर्त्तव्य होता है वहाँ तो वह अहिंसा की दुहाई देती है, और जहाँ केवल सामान्य सद्बुद्धि और सूझ-बूझ से काम चल सकता है वहाँ वह हिंसा का आश्रय ले बैठती है। 'यथायोग्य व्यवहार' केवल धर्म का ही निर्देशक सूत्र नहीं है, प्रत्युत राजनीति का भी निर्देशक सूत्र है। देश पर आक्रमण करने वाले आततायियों और आतंकवादियों के साथ, राष्ट्रद्रोही पंचमाँगियों के साथ और भ्रष्टाचारी अधिकारियों केसाथ दया की नीति बरतना उसी राजनैतिक व्यामोह का परिणाम है। **"दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः दण्ड एवाभिरक्षति, दण्डः जागर्ति दण्डं धर्म विदुर्बुधाः।"**— मनुस्मृति का यह ऐसा वचन है जिसका पालन न करने से राष्ट्र की अपरिमित क्षति होती है। अदण्ड्य को दण्ड देना और दण्ड्य को दण्ड न देना स्वयं दण्डनीय अपराध है। जो राजा इस बात का ध्यान नहीं रखता वह प्रजा की रक्षा करने में समर्थ नहीं होता। साधुओं का परित्राण और असाधुओं का विनाश—दोनों समान रूप से आवश्यक हैं। राजनीति का यही सार है।

आर्थिक विचारधारा

जिस प्रकार आर्यसमाज राजनीति में स्वराज्य का, संस्कृति में स्वभाषा का, धर्म में स्वधर्म (वेद) का समर्थक है, वैसे ही अर्थनीति में स्वदेशी का समर्थक है। यदि विदेशी राज्य, विदेशी भाषा, और विदेशी धर्म अवाञ्छनीय हैं तो विदेशी वस्तुएँ भी अवाञ्छनीय हैं। आर्यसमाज की यह भावना विदेशियों के साथ शत्रुता के कारण नहीं है, परन्तु प्रत्येक क्षेत्र में 'स्व' का समर्थन ही आर्यसमाज का राष्ट्रवाद है। स्वदेश से ही

अगर विदेशी वस्तुओं का आदर नहीं होगा तो और कहाँ होगा? अंग्रेजों की दासता ने भारतीयों की मनोवृत्ति ऐसी बना दी कि आज बड़े-से-बड़े राष्ट्रीय नेता भी राष्ट्रीयता के इस निर्मल स्वरूप को समझने में असमर्थ हैं और विदेशी भाषा और विदेशी वस्तुओं का प्रयोग करते हुए उनके मन में तनिक भी राष्ट्रीय अपमान की अनुभूति नहीं होती।

आर्यसमाज उद्योगीकरण का विरोधी नहीं है। ऋषि दयानन्द ने अपने पट्ट शिष्य, क्रान्तिकारियों के पितामह श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा को भारत में (ब्यावर में) सबसे पहली कपड़ा-मिल का मैनेजर बनने की अनुमति दी थी और बाद में विज्ञान के अध्ययन के लिए उन्हें विदेश भेजा था। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने ऋषि दयानन्द के परामर्श से, विदेश जाने वाले भारतीय छात्रों को जहाँ क्रान्ति के मन्त्र से अभिमन्त्रित किया था वहाँ उनके लिए विज्ञान पढ़ने के निमित्त अन्य सुविधाओं की भी व्यवस्था की थी। जर्मनी के विशेषज्ञों से ऋषि दयानन्द ने इस विषय में पत्र-व्यवहार भी किया था कि वे भारतीय छात्रों को विज्ञान और शिल्प सिखाने की व्यवस्था करें। परन्तु देश का उद्योगीकरण करने की तीव्र इच्छा होते हुए भी, ऋषि दयानन्द का उद्देश्य केवल यही नहीं था कि देश में बड़े-बड़े कल-कारखाने स्थापित हों, प्रत्युत छोटे उद्योगों और कुटीर-उद्योगों के भी वे पक्षपाती थे, क्योंकि इनके बिना न ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुधर सकती है और न ही स्वदेशी वस्तुओं का विकास हो सकता है। जहाँ तक हम समझते हैं, ऋषि दयानन्द विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के पक्षपाती थे और उद्योगों के पूँजीपतियों के कुछ हाथों में समस्त आर्थिक शक्ति दे देना उनकी कल्पना के विरुद्ध था। स्वदेशी और विकेन्द्रीकरण का समर्थक होते हुए भी प्रत्येक उद्योग और व्यवसाय के राष्ट्रीयकरण का ऋषि दयानन्द समर्थन करते, इसमें हमें सन्देह है। पूँजी किसी एक स्थान पर संचित नहीं होनी चाहिए, तो समस्त पूँजी का मालिक सरकार को ही बना देना क्या पूँजी का एक स्थान पर ही सन्निवेश नहीं है? ऐसा करने से जहाँ लोगों में उत्पादन बढ़ाने की प्रेरणा समाप्त हो जाएगी वहाँ सरकार में भी तानाशाही की प्रवृत्ति बढ़ेगी। समाजवादी अर्थव्यवस्था इस सीमा तक तो उपयोगी है कि राष्ट्र की सम्पत्ति किसी व्यक्ति के उपभोग के बजाय समस्त समाज के उपभोग में आवे, किन्तु जब इस सिद्धान्त को भी अति तक पहुँचाया जाता है तब व्यक्ति समाप्त हो जाता है और केवल समाज रह जाता है। परन्तु क्या व्यक्ति के समाप्त हो जाने पर समाज टिक सकेगा? समाज भी तो आखिर व्यक्तियों का समुदाय ही है। इसीलिए, आदर्श अर्थव्यवस्था वहीं हो सकती है जिसमें "सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने वाले" व्यक्तियों का स्थान हो।

जिस तरह शारीरिक स्वास्थ्य के लिए रक्त-संचार (सर्कुलेसन ऑफ ब्लड) का होना आवश्यक है, उसी प्रकार समाज के आर्थिक स्वास्थ्य के लिए धन का संचार होना आवश्यक है। किसी एक स्थान पर पूँजी का जमा हो जाना अपने-आप में दोषी नहीं है, परन्तु यदि उस पूँजी की निकासी न हो तो उसमें वैसी ही सडाँध पैदा हो जाएगी जैसी एक स्थान पर एकत्रित तालाब के उस पानी में, जिसमें कहीं पानी की निकासी की गुंजायश न हो। यहीं हमें महात्मा गांधी का 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धान्त याद आता है, अर्थात् हरेक पूँजीपति यह समझे कि मेरे पास विद्यमान सारी सम्पत्ति मेरे निज के या परिवार के उपयोग के लिए नहीं है, अपितु सारे समाज के उपयोग के लिए है और यह सारी सम्पति समाज की है, समाज ने मुझे उस सम्पत्ति का केवल 'ट्रस्टी' (न्यासी) बनने का ही अधिकार दिया है, अर्थात् समाज मेरी इस योग्यता को समझता है कि मैं सम्पत्ति को बढ़ाने के उपाय जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि समाज के हित के लिए उस सम्पत्ति का सदुपयोग कैसे किया जाय। जब समाज ने मुझ पर इतना विश्वास किया है तब मैं समाज के साथ विश्वासघात क्यों करूँ? यदि कोई पूँजीपति अपने पास एकत्रित पूँजी का केवल अपने लिए उपयोग करता है तब वह समाजद्रोही है और कृतघ्नता के पाप का भागी है। **"शत हस्त समाहर, सहस्र हस्त संकिर"**—सौ हाथों से कमा और हजार हाथों से दे—यही वैदिक आदर्श है।

आर्यसमाज ने अपनी ओर से किसी भी विषय में कोई नई स्थापना नहीं की, केवल वेद-प्रतिपादित सिद्धान्तों को ही बुद्धि-संगत ढंग से उजागर करने का प्रयत्न किया है। किसी भी विषय में वेद जो कुछ कहता है वही आर्यसमाज को मान्य है और वेद का सिद्धान्त किसी जाति-विशेष या देश-विशेष या काल-विशेष के लिए नहीं, वह सब जातियों, सब देशों और सब कालों के लिए है, इसलिए उसी का अनुगमन करने से विश्व का कल्याण हो सकता है।

o—o—o

अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या

❑ स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक

(प्रथम पटल) मन्त्र तथा मन्त्रविद्या का स्वरूप

मन्त्रविद्या को लोग जादू कहते हैं। जादू शब्द फारसी भाषा का है। *(हिन्दी में इसे दीर्घान्त माना गया है)* वहाँ इसका अर्थ किन्हीं ऐसे गुप्त प्रयोगों का नाम है जिनसे बाजीगरी के खेल तमाशे आश्चर्यजनक अद्भुत अमानुषी कौतुहल करिश्मे वशीकरण और हिंसा-परघात किया जाता है। हमारी धारणा है कि इसका मुख्यार्थ हिंसा अर्थात् परघात है। जादू शब्द वेद के "यातु" शब्द का रूपान्तर या अपभ्रंश है। वेद के "यातु" शब्द का अर्थ हिंसा है **"यातयति वधकर्मा"** (निघ. २/१९) से बना है। तान्त्रिक परिभाषा में जादू के प्रयोगों को इन्द्रजाल या ऐन्द्रजालिक प्रयोग कहते हैं। "इन्द्रजाल" तथा "बृहद् इन्द्रजाल" आदि तन्त्रग्रन्थों में उक्त गुप्त बातों और हिंसापरकप्रयोगों का विस्तार से वर्णन किया है, इनका मूल भी वेद में है। अथर्ववेद में शत्रुसेना के वधार्थ इन्द्रजाल रचने का वर्णन आता है। वहां विद्युत् आदि पदार्थों द्वारा ऐन्द्रजालिक विधियों से शत्रु-सेना को क्षुब्ध, भयभीत, पीड़ित और हिंसित करने का विधान है। *(**बृहद्धि जालं बृहतः शक्रस्य वाजिनीवतः। तेन शत्रूनभि सर्वान् न्युब्ज यथा न मुच्यातै कतमश्चनैषाम्॥ मृत्योराषमा पद्यन्तां क्षुधं सेदिं वधं भयम्। इन्द्रश्चाक्षुजालाभ्यां सर्व सेनाममूं हतम्॥ अथर्व.** ८/८/६/१८)* तन्त्रग्रन्थों में रोग दूर करने, सर्प आदि के विष उतारने के भी वर्णन हैं। ऐसे गुप्त प्रयोगों को मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र नाम से कहा जाता है। वेद के गुप्त प्रयोग वैज्ञानिक हैं। परन्तु तन्त्र ग्रन्थों में कहे बहुधा कल्पित और अवैज्ञानिक हैं, इस विषय में श्री रामदास गौड़ की सम्मति पढ़ने योग्य है। वे अपने लिखे "हिन्दुत्व" नामक एक ग्रन्थ में तन्त्र प्रकरण में लिखते हैं कि "तन्त्रोक्त मारणोच्चाटन वशीकरणादि आभिचारिक क्रिया का प्रसंग अथर्व संहिता में पाया जाता है सही, किन्तु तन्त्र के अन्यान्य प्रधान लक्षण नहीं मिलते। ऐसी दशा में तन्त्र को हम अथर्व-संहितामूलक नहीं कह सकते।" (हिन्दुत्व)।

मन्त्र का मनोविज्ञान के साथ तन्त्र का सूक्ष्म भौतिक विज्ञान के साथ और यन्त्र का सूक्ष्म तथा स्थूल भौतिक विज्ञान के साथ सम्बन्ध है। कला मशीन आदि को यन्त्र कहते हैं, यन्त्र में अमानुषी गुप्त शक्ति होती है, सैकड़ों और सहस्रों मनुष्यों का काम अल्पकाल में ही यन्त्र द्वारा हो जाता है। रेलगाड़ी प्रथम-प्रथम जब चलने को थी तो कहा जाता था कि एक गाड़ी ऐसी चलेगी जो बिना बैलों के या घोड़ों के हजारों मनुष्यों को अपने में बिठाकर ले जावेगी, लोग इसे जादू की बात समझते थे। एवं सिनेमा के चित्र दिखाने वाली लालटेन को अभी भी मैजिक लालटेन या जादू की लालटेन कहते हैं। कलाएं, मशीनें स्थूल भौतिक विज्ञान हैं और अदृष्टरूप शक्ति सूक्ष्म भौतिक विज्ञान है। पृथ्वी जैसे भारी गोले का नियन्त्रण भी यन्त्र द्वारा ही हुआ है **"सविता यन्त्रैः पृथिवीमरभ्णदस्कम्भने"** (ऋ. १०/१४९/१) अर्थात् सूर्य ने यन्त्रों-अदृष्ट शक्तियों द्वारा पृथिवी को निरालम्ब आकाश में सम्भाला हुआ है। तन्त्र शब्द के फैलने वाले प्रयोग अभीष्ट हैं जो पृथिवी, जल और वायु में बिछाये फैलाए जा सकते हैं। जो कि विषैली ओषधियों विद्युत की लहरों द्वारा रचे जाते हैं। वे दृष्ट हों—अस्त्रों (बम) के रूप में या अदृष्ट हों—वायव्य रूप (गैस के रूप)। मन्त्र कहते हैं गुप्त भाषण और मनन करने योग्य सिद्धान्त को, क्योंकि **"मन्त्रि गुप्त भाषणे"** (चुरादि.) से मन्त्र शब्द बना है। तथा **"मन्त्रः मननात्"** (निरुक्त ७/१२) इससे गुप्त भाषण और रहस्य का नाम मन्त्र हो सकता है। उसका क्षेत्र अधिकारी तक परिमित रहने से वह मन्त्र कहलाया या अधिकारी वा जनसाधारण तक न पहुंचने और उसे न समझ सकने के कारण वह मन्त्र या जादू के नाम से कहा जाता है। उस ऐसे आदेश (सजेशन) का नाम भी मन्त्र है जिसके उच्चारणमात्र से किसी पात्र पर प्रभाव पड़ जावे। वह उसके कहने के अनुसार काम करने लगे क्योंकि वाणी का नाम भी मन्त्र है **"वाग्वै मन्त्रः"** (श. ६/४/१/७) इससे वाग्विद्या और विचार-विद्या का नाम मन्त्र है। वाणी ऐसी परिमित उचित और गम्भीर बोली जावे कि जिससे दूसरे पर तुरन्त प्रभाव पड़े। इस प्रकार विचार करे या दूसरे को विचार दे कि जिससे अपने तथा दूसरे की काया पलट जावे। इस प्रकार के सहसा प्रभावकारी अनुष्ठान या प्रयोग को मन्त्रविद्या कहते हैं। इसके विभाग हम पांच कर सकते हैं। जिनका कि अथर्ववेद के साथ सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है जो कि संकल्प या आवेश (सेल्फ हिप्टोनिज्म या मैग्नेटिज्म), अभिमर्श (*अज्ञानी जन इसे झाड़ फूंक के नाम से कहते हैं*) और मार्जन (मैस्मेरिज्म), आदेश (हिप्टोनिक सजेशन), मणिबन्धन (*इसी का अशुद्धरूप गण्डा ताबीज नक्श डोरा धागा आदि चला हुआ है*), कृत्या और

अभिचार (*इसी को भ्रान्ति से लोगों ने टोना, टोटका, मूठ मारना आदि रूप दिया हुआ है*)। इन पांच बातों के द्वारा शारीरिक रोगों का हटाना, उन्माद-भूतोन्माद आदि मानसिक दोषों को दूर करना, दारिद्र्य (दुर्गति अकर्मण्यता), अलक्ष्मी (अशोभा) को भगाना, निराशा को हटाना, ईर्ष्या आदि मानस पाप का शमन करना, अशान्ति को दूर करना, दुष्ट स्वप्न के प्रभाव को मिटाना, वीरता आदि गुणों का आवेश करना, यातुधान-नाशन अर्थात् हिंसाकारक प्रयोगों और वस्तुओं एवं प्राणियों को नष्ट करना, शत्रु का घात करना, अपने अन्दर के रोगों और दोषों को हटाकर स्वास्थ्य तथा अच्छे गुणों को लाना आदि विषयों का वर्णन अथर्ववेद में है। इन प्रकरणों को यथावत् न समझकर लोगों ने अथर्ववेद में तान्त्रिक मन्त्र जादू को सिद्ध किया। उपर्युक्त मन्त्रविद्या की पांचों बातों का स्वरूप तथा अथर्ववेद के प्रकरणों को हम क्रमशः अर्थ और व्याख्या एवं विवरणों के सहित विभाजित करके पाठकों की सेवा में उपस्थित करते हैं। इनमें संकल्प और आवेश की विद्या सर्वश्रेष्ठ है तथा इसका अपने साथ सम्बन्ध है। इसके द्वारा अपना सुधार और अपनी शक्तियों का विकास करना सर्वोत्तम है। पुनः दूसरों के प्रति अन्य विद्याओं या प्रयोगों का होना सम्भव तथा उचित है। अतः प्रथम संकल्प और आवेश की विद्या का वर्णन करते हैं।

(द्वितीय पटल) संकल्प और आवेश

प्रवल तथा साधिकार इच्छा का नाम संकल्प है और उसका पुनः पुनः आवर्तन आवेश कहलाता है। मनोविज्ञान का सर्व-प्रथम आधार क्षेत्र संकल्प और आवेश है। मन की सर्व प्रथम गति संकल्प है अपितु संकल्प ही मन का सार और उसके विकास का कारण है। वेद में संकल्प अर्थात् इच्छा या कामना को मनुष्य के आन्तरिक जीवन की मूर्ति और बाह्य जीवन की पूर्ति बतलाया है।

कामस्तदग्रे संमवर्तत मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्। स काम कामेन वृहतासयोनी रायस्पोषं यजमानाय धेहि॥

(अथ. १९/५२/१)

अर्थ—(कामः) इच्छा-संकल्प **(अग्रे)** प्रथम **(समवर्तत)** वर्तमान होता है **(तत्-यत्)** वह जो कि **(मनसः)** मन का **(प्रथमं रेतः)** प्रथम सार **(आसीत्)** है। **(स काम)** वह तू संकल्प! **(वृहता कामेन)** पुनः उद्यत हुए उठे हुए संकल्प के साथ "वृहू उद्यमने वृहू इत्येके" (तुदादि.) **(सयोनिः)** समानस्थानी-समान क्षेत्र—एक हुवा हुआ मिला हुआ **(यजमानाय)** शरीर-यज्ञ के याजक आत्मा या जीव के लिए **"इन्द्रो वै यजमानः"** (श. ९/५/२/१६) **(रायस्पोषम्)** ऐश्वर्य पुष्टि को-अभ्युदय को **(धेहि)** धारण करा।

मन्त्र में बतलाया है कि संकल्प मन का सार है संकल्प ही मनोविकास का कारण और आधार है, मन में प्रथम संकल्प होता है पुनः वह उद्यमरूप संकल्प अर्थात् साधिकार संकल्प बन अभीष्टभाव को मन में आवर्तित कर के संगृहीत करता है, इस प्रकार पुनः पुनः आवर्त्तन के अभ्यास से मन आन्दोलित हो विद्युत् की भांति अपनी पूर्ण शक्ति को अभीष्ट भाव की ओर प्रेरित करके उसे आकर्षित कर लेता है। जिस प्रकार विद्युत् की दो तरंगें होती हैं, उसकी शक्ति को व्यक्तरूप में लाती हैं और पुनः विविध कार्य में उपयुक्त करती हैं एवं मन की भी दो तरंगें हैं वेद में उन्हें बोध और प्रतीबोध नाम से कहा है।

ऋषी बोधप्रतीबोधावस्वप्नो यश्च जागृविः। तौ ते प्राणस्य गोप्तारो दिवा नक्तं च जागृताम्॥ (अथ. ५/३०/१०)

इस मन्त्र का पूरा अर्थ हम आगे करने वाले हैं, यहां केवल यही बतलाना ध्येय है कि मन की दो तरंगे बोध और प्रतीबोध हैं, इनको लौकिक भाषा में संकल्प और विकल्प कहते हैं। बोध या संकल्प में स्वप्न अर्थात् विस्मृति या तिरोभाव नहीं होता। वह अभीष्ट भाव में लगा रहता है और प्रतीबोध अर्थात् विकल्प जागृत होता रहता है। वह अनभीष्ट को (जो अभीष्ट नहीं उसे) हटाता रहता है, उसे अभीष्ट से मिलने नहीं देता। इस प्रकार संकल्प (अभीष्ट प्राप्ति की इच्छा) विकल्प (अनभीष्ट निवारण की इच्छा) परस्पर मिलकर संकल्प से विकल्प और विकल्प से संकल्प बल पाकर मानसिक विद्युत् को उत्पन्न कर देते हैं, पुनः विशुद्ध अभीष्ट का आकर्षण और अनभीष्ट का निवारण करके कृतकार्य हो जाते हैं। जैसे विद्युत् की दो तरंगें प्रकाश और दाह को देने वाली हैं, एवं मन की ये संकल्प और विकल्प तरंगें मनुष्य के जीवन क्षेत्र में अभीष्ट गुणों को प्रकाशित और अनभीष्ट को दग्ध कर देती हैं। इसके द्वारा मनुष्य अपने अन्दर से पाप निर्बलता और त्रुटि को दूर कर सकता है तथा सद्गुणों बल और उत्साह का अपने में आवेश कर सकता है। अथर्ववेद में इस प्रकार दुर्गुणों के बहिष्करण और सद्गुणों के आवेश का प्रतिपादन बहुत स्थलों पर किया है। उनमें से कुछ हम इस ग्रन्थ में देते हैं।

पाप को हटाने का संकल्प :—

परोपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि। परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि संचर गृहेषु गोषु मे मनः॥ (अथ. ६/४५/१)

अर्थ—(मनस्पाप) ओ मन के पाप! तू **(परः-अपेहि)**

परे चला जा। (**किम्**) क्योंकि तू (**अशस्तानि**) निदिन्त बातों को (**शंससि**) पसन्द करता है (**परेहि**) दूर चला जा (**त्वा**) तुझे (**न**) नहीं (**कामये**) चाहता हूं। (**वृक्षान्**) वृक्षों को (**वनानि**) वनों को (**संचर**) प्राप्त हो (**मे**) मेरा (**मनः**) मन (**गृहेषु**) स्त्री पुत्रादियों में (**गोषु**) गौओं में रहे।

मन में पापभाव आने पर उसे हटाने के लिये यहां वेद ने दो उपाय या प्रयोग बतलाए हैं। एक तो प्रीतबोध या विकल्प अर्थात् अनभीष्ट पापभाव में दोषदृष्टि या घृणा को उत्पन्न करना उसके लिये नगर से बाहर किसी एकान्त शान्त जंगल और वन में जाकर घृणा उत्पन्न कर उस पाप भाव को वहां ऐसे त्याग देना जैसे हानिकारक किसी जन्तु को छोड़ आते हैं। उसके सम्बन्ध में पुनः पुनः दोषदृष्टि या घृणा का आवर्तन कर-कर के पूर्ण-रूपेण सदा के लिये त्याग देना। दूसरे मन में उस पापभाव के स्थान में घर के स्त्री पुत्रादि बन्धुओं के प्रति अपने कर्तव्य का विचार करके मन को उधर लगाए रखना यही मन की दूसरी शक्ति बोध या संकल्प है। इस प्रकार दोनों के परस्पर आवर्तन, अभ्यास और अनुष्ठान से हटाने योग्य दोष अवश्य दूर हो जावेगा। इसके लिये मानसिक पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये कि मैं इस दोष को हटा दूंगा, हटा कर रहूंगा, उसे हटाना कोई कठिन नहीं, हटाना तो मन का खेल है अवश्य हटा दूंगा।

आशा, उत्साह, और सफलता प्राप्ति का संकल्प :—

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः। गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनञ्जयो हिरण्यजित्॥ (अथर्व. ७/५२/८)

अर्थ—(**कृतम्**) कर्म (**मे**) मेरे (**दक्षिणे**) दक्षिण (**हस्ते**) हाथ में (**जयः**) विजय या सफलता (**मे**) मेरे (**सव्ये**) वाम हाथ में (**आहितः**) प्राप्त है। (**गोजित्**) मैं गौओं, इन्द्रियों और भूमि का विजेता (**अश्वजित्**) इन्द्रियवृत्तियों, शक्तियों और राष्ट्र का विजेता (**धनञ्जयः**) धन ऐश्वर्य और अभ्युदय का विजेता (**हिरण्यजित्**) सम्पत्ति यश शोभा का विजेता (**भूयासम्**) होऊं—बनूं।

प्रत्येक कार्य करते हुए मन में इस प्रकार आशा और उत्साह को बनाए रखना चाहिए कि कर्म करना और उसमें सफलता प्राप्त करना मेरे दाएं-बाएं हाथों का खेल है। न मैं कर्महीन हो सकता हूं और न उस कर्म में कभी विफल, किन्तु सदैव सफलता प्राप्त करना मेरा अधिकार है। मुझे धैर्य के साथ काम में लगे रहना है शीघ्र नहीं तो देर से कभी न कभी अन्त में सफलता अवश्य ही प्राप्त करना है।

यदि बारम्बार यत्न करने पर भी मनुष्य अपने मानसिक बल से दोषों को दूर न कर सके तथा उत्तम गुणों का आवेश करने में अपने को असमर्थ पावे तो फिर उसे अपने इष्ट-देव की शरण लेनी चाहिये। जगदीश्वर अन्तर्यामी परमात्मा आत्मा की भी आत्मा है, उसके प्रति अपने को समर्पित करके दोषों को दूर करने और गुणों को अन्दर प्रविष्ट करने की आत्मभाव से विश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए, सफलता अनिवार्य है जैसा कि वेद में दिया है।

त्रुटि, दोष, न्यूनता दूर करने के लिए संकल्प :—

अग्ने यन्मे तन्वा ऊनन्तन्म आपृण। (यजु. ३/१७)

अर्थ—(**अग्ने**) हे सर्वज्ञ परमात्मन्! (**मे तन्वा यद् ऊनम्**) मेरे तनु अर्थात् शरीर, इन्द्रियों और मन में जो न्यूनता त्रुटि निर्बलता असमर्थता या कमी हो (**तत्**) उसे मेरे अन्दर (**आपृण**) पूरा कर।

शक्तिप्राप्ति के लिये संकल्प :—

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि। बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजोमयि धेहि। मन्युरसि मन्युं मयि धेयि। सहोऽसि सहो मयि धेहि॥ (यजु. १९/९)

अर्थ—(**तेजोऽसि तेजो मयि धेहि**) हे परमात्मन्! तू तेजस्वरूप है मुझमें तेज धारण करा—भर (**वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि**) हे परमात्मन्! तू पराक्रमरूप है मुझ में पराक्रम डाल (**बलमसि बलं मयि धेहि**) हे परमात्मन्! तू बल स्वरूप है मुझ में भी बल दे (**ओजोऽसि—ओजो मयि धेहि**) हे परमात्मन्! तू ओजमय है मुझ में ओज धारण करा (**मन्युरसि मन्युं मयि धेहि**) हे परमात्मन्! तू प्रभावस्वरूप है मुझ में भी प्रभाव धारण करा (**सहोऽसि सहो मयि धेहि**) हे परमात्मन्! तू साहसस्वरूप है मुझ में भी साहस भर।

जैसे विद्यावान् के संग से विद्या, और तेजस्वी अग्नि के संग से तेज का लाभ होता है एवं पूर्ण तेजस्वी पूर्ण वीर्यवान् पूर्ण बलवान् पूर्ण ओजस्वी पूर्ण प्रभाववान् और पूर्ण साहसी परमात्मा के संग से तेज, वीर्य-बल, ओज, प्रभाव और साहस का प्राप्त होना अत्यन्त सम्भव तथा अनिवार्य है। जब तेज को प्राप्त करना हो तो परमात्मा को अपने बाहर भीतर सर्वत्र पूर्ण अनन्तरूप से व्याप्त तेजस्वी समझ तन्मय तल्लीन हो अपने अन्दर तेज का आवेश करना चाहिये, अपने को उसकेसंग से तेजस्वी होने का आन्तरिक प्रयत्न करना चाहिये, और अनुभव करना चाहिये कि मैं अनन्त तेजस्वरूप तेज के भण्डार में हूँ, तेजस्वी बन रहा हूं। इसी प्रकार वीर्य-प्राप्ति के लिए अनन्त वीर्यवान् बलप्राप्ति के लिये अनन्त बलवान् ओज प्राप्ति केलिये अनन्त ओजस्वी और साहस प्राप्ति के लिये अनन्त साहसी परमात्मा में

निमग्न हो वीर्य, बल, ओज, प्रभाव और साहस का आवेश अपने अन्दर करना चाहिये। इस प्रकार शान्तस्थान और शान्त समय में प्रातः सायं आवेश का अभ्यास करना चाहिये इससे अत्यन्त सफलता प्राप्त होती है। अवगुणों को दूर करने, सद्गुणों के आवेश करने की भांति रोगों को दूर करने स्वास्थ्य-बल का आवेश करने के लिए भी वेद का विधान है।

रोग दूर करने का संकल्प :—

अपेहि मनस्पतेपक्राम परश्चर। परो निर्ऋत्या आचक्ष्व बहुधा जीवतो मन॥ (अथर्व. २०/९६/२४)

अर्थ—(**मनसस्पते**) ओ मन को पतित करने वाले दु:ख देने वाले यक्ष्म अर्थात् रोग! तू (**अपेहि**) हट जा (**अपक्राम**) दूर होजा (**परश्चर**) परे चला जा (**जीवतः**) जीवनधारण करते हुए—जीते हुए के (**मनः**) मन को (**निर्ऋत्यै-निर्ऋत्याः**) आपदा से—दु:ख से (**बहुधा**) अनेक प्रकारों से अनेक उपायों उपचारों के सेवन द्वारा (**परः-आचक्ष्व**) दृष्टि से परे हो—तिरोहित हो जा—विलुप्त हो जा।

मन में संकल्प विकल्प के द्वारा जैसे दुर्भावों को दूर करने और सद्भावों को अन्दर आवेश करने की शक्ति है, एवं रोगों को दूर करने और स्वास्थ्य तथा बल का आवेश करने की भी शक्ति है। क्योंकि मन का स्थान हृदय है **"हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु"** (यजु. ३४/६) हृदय ही जीवनशक्ति का स्थान है वही प्राणशक्ति का केन्द्र है। मानसिक भावनाओं से परिपुष्ट प्राणों की गति होने से रोगों का बहिष्कार और स्वास्थ्य तथा बल का संचार शरीर में हो जाना अनिवार्य है। मन के संकल्प और विकल्प प्राण के रक्षक हैं। वेद में स्पष्ट कहा भी है **"ऋषी बोधप्रतीबोधावस्वप्नो यश्च जागृविः। तौ ते प्राणस्य गोप्तारौ दिवा नक्तं च जागृताम्"** (अथर्व. ५/३०/१०) इन संकल्प विकल्पों के द्वारा रोग दूर करने केप्रकार का संकेत ऊपर **"अपेहि मनसस्पते"** में किया है।

हाथों के बल को अपने अन्दर आवेश करने का संकल्पः—

हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद् यशो अदित्या यत् तन्वः सम्बभूव॥ (अथ. ३/२२/१)

अर्थ—(**हस्तिवर्चसम्**) हाथी का बल (**प्रथताम्**) मेरे शरीर में फैले—विस्तार पावे—प्रविष्ट हो (**यत्**) जो (**अदित्याः—तन्वः**) अखण्ड ईश्वरीय शक्ति के मानो शरीर से (**बृहद् यशः**) महान् यश या बड़ी शोभा बड़े सत्व के रूप में (**सम्बभूव**) प्रकट हुआ है।

हाथी के बल को अपने अन्दर आवेश करने के सम्बन्ध में मन्त्र का संकेत है। योगदर्शन में संयमप्रकरण में लिखा है **"बलेषु हस्तिबलादीनि"** (**योग। विभूतिपाद/२४**) हाथी के बल में संयम अर्थात् धारणा ध्यान समाधि करने से हाथी का बल प्राप्त होता है। हाथी को देखते हुए या उसकी अनुपस्थिति में हाथी की आकृति को मन में चित्रित करके उसके बल को अपने अन्दर लाने का आन्तरिक प्रयत्न करना चाहिए। हाथी अपनी सूंड से वृक्षों की डालों शाखाओं और टहनियों को तोड़ देता है, बहुतेरे वृक्षों को भी समूल उखाड़ फेंकता है। एक स्थान पर खड़ा हुआ भी अपने बल की मस्ती में झूमता रहता है इत्यादि बल की चेष्टाओं का अपने अन्दर आकर्षण करना और समझना कि मैं हाथी के उक्त बल को अपने शरीर में प्रविष्ट कर रहा हूं—मेरे शरीर में वह बल आ रहा है इस प्रकार मन से प्रतिदिन कुछ काल तक निरन्तर अभ्यास करने से अपूर्व लाभ प्राप्त होता है। इस विधि का अभ्यास शान्त बैठकर ध्यान द्वारा तथा व्यायाम करते हुए भी करना चाहिए। व्यायाम करते हुए वैसी ही हाथी—जैसी चेष्टाएं करना और अपने अंगों को बीच बीच में देखते जाना मानसिक प्रभाव डालकर हाथी—जैसी पुष्टि तथा बल लाने का अनुभव करना कि वे पुष्ट हो रहे हैं, उनमें बल आ रहा है।

जिस महानुभाव के मन में दोष नहीं और पूर्वोक्त प्रकार से मानसिक एवं आत्मिक बल भी प्राप्त कर लिया हो वह किसी दूरस्थ दूसरे व्यक्ति के सम्बन्ध में शुभ संकल्प करे तो उस के आत्मा में प्रभाव पड़ सकता है। बहुत बार देखा गया है कि शुद्ध मन से किए विचारों की सूचना या स्फुरणा के अनुसार अन्य व्यक्ति अनुकूल आचरण करने लगता है। किसी को मिलने या बुलाने की इच्छा होती है तो वह व्यक्ति तुरन्त मिल जाता है या आ जाता है। मन की निर्मलता, एकाग्रता और परस्पर गहरे प्रेम के कारण एक के विचारों का सन्देश (तार) तक दूसरे को पहुंच जाता है। अतएव महात्मा साधुजनों के अन्दर हार्दिक हितचिन्तनभाव और आशीर्वाद हमारे कल्याण करने वाले हो जाते हैं एवं सद्वैद्यों के स्वास्थ्यलाभ पहुंचाने के संकल्प और आश्वासन रोगी के रोगों को हटाने में सहायक बन जाते हैं, यह संकल्पशक्ति का विषय मनोविज्ञान के साथ सम्बन्ध रखता है इसे जादू नहीं कहा जा सकता है।

(तृतीय पटल) अभिमर्श और मार्जन

अभिमर्श शरीर में सनसनाहट उत्पन्न कर देने वाले स्पर्श का नाम है। जिस अंग में सनसनाहट उत्पन्न हो जाती है वहां के आन्तरिक तन्तुओं में विचित्र विद्युत की लहरों-जैसी गति उत्पन्न हो जाती है जो न केवल उस ही अंग पर प्रभाव डालती है किन्तु अन्यत्र भी उसका प्रभाव पड़ जाता है। हाँ, विशेष करके उस स्थान पर होता है। अभिमर्श से रोग तथा मानसिक दोष दूर किये जा सकते हैं। इस अभिमर्शविद्या को पाश्चात्य विद्वान् मेस्मरिज्म कहते हैं और अभिमर्श-क्रिया को पास करना कहते हैं। अभिमर्श के द्वारा चिकित्सा करने का अथर्ववेद में वर्णन है, हम यहाँ कुछ मन्त्रों के द्वारा इसको प्रदर्शित करते हैं।

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवतरः। अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥ हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी। अनामयित्नुभ्यां हस्तभ्यां ताभ्यां त्वाभिमृशामसि॥ (अथर्व. ४/१३/६,७)

अर्थ—हे प्यारे रोगी ! (अयं मे) यह मेरा (हस्तः) हाथ (भगवान्) भाग्यवान् यशस्वी भागधेयी फलवान् है (अयं मे भगवत्तरः) यह मेरा दूसरा हाथ अत्यधिक भाग्यवान् यशस्वी और फलवान् है (अयं मे विश्वभेषजः) यह मेरा हाथ समस्त रोगों का शमनकारक औषधरूप है (अयं शिवाभिमर्शनः) यह सुख शान्ति के स्पर्श वाला है। (हस्ताभ्यां दशशाखाभ्याम्) दशों अंगुलियों सहित हाथों से तथा (ताभ्यामनामयित्नुभ्यां हस्ताभ्याम्) उन आरोग्यकारक हाथों से (त्वाभिमृशामसि) मैं तुझे अभिमर्श करता हूँ-छूता हूँ। तथा (वाचः पुरोगवी जिह्वां) वाणी को अग्रसर करने वाली मेरी जिह्वा है उससे तुझे आदेश देता हूँ।

रोगी को खुली अंगुलियों वाले हाथों से अभिमर्श करने का विधान इन मंत्रों में है। अभिमर्श प्रभावकारी स्पर्श का नाम है और वह तब हो सकता है जब कि रोगी के अंग को स्पर्श करने में प्रयोजक के हाथ ढीले हों और अंगुलियों का स्पर्श अंग पर भार न डाले (किंचित ही स्पर्श हो) जो कि अंगुलियों के आगे सरकने से रोगी के उस अंग में या बाहर भीतर त्वचा में एक संस्पर्श (सनसनाहट) उत्पन्न कर दे, इस ऐसे स्पर्श का ही नाम अभिमर्श है। ऐसे संस्पर्श (सनसनाहट) से शरीर के तन्तुओं में लहरें चलने लगती हैं, वे आगे बढ़ती हुई नाड़ियों की गति को तीव्र कर देती हैं। इससे रोगी पर एक प्रभाव पड़ता है वह अपने अन्दर विद्युत जैसी स्फुरण अनुभव करता है। इस प्रकार आन्तरिक गतियां चालू हो जाने से रोगी का मल नीचे उतरने लगता है, अन्य दोष भी यथास्थान पर आने लगते हैं, रक्त में शुद्धि और मन में सुख शान्ति का अनुभव होता है तथा वह नींद में भी चला जाता है, ऐसा कुछ समय करने से रोगी को बड़ा लाभ होता है। माताओं के हाथों की लोरी से बच्चे आराम से सो जाते हैं। अभिमर्श दो प्रकार का होता है, एकतो गतिरूप दूसरा स्थानिक गतिरूप अभिमर्श अंगुलियां फैलाए हुए हाथों को धीरे-धीरे ऊपर से नीचे या आड़ी ओर सरकाने को कहते हैं यह रोगों या मानसिक दोषों को दूर करने में हितकर है। दूसरा स्थानिक अभिमर्श एक स्थान में ही पुनः स्पर्श करने का नाम है। यह बल सुख शान्ति या सद्भावों के भरने में उपयुक्त है। उक्त दो प्रयोजन अभिमर्श के हैं जो 'अयं मे हस्तो भगवान्' से ऊपर मन्त्र में वेद ने कहे हैं। **'दक्षं त उग्रमा भारिषं परा यचमं सुवामसि।"** (अथर्व. ४/१३/५) अर्थात् हे रोगी ! तू चिन्ता न कर मैं अपने हाथों द्वारा तेरे अन्दर से रोग को दूर करता हूँ और तुझमें बड़े भारी बल, स्वास्थ्य, सुख को भरता हूँ। यह तो हुआ हस्ताभिमर्श, अब अन्य किसी वस्तु के सम्बन्ध में भी विचार करते हैं जो कि मार्जन या पुरश्चरण कहलाता है जिसे साधारणजन झाड-फूंक के नाम से कहते हैं।

मार्जन या पुरश्चरण

मार्जन या पुरश्चरण में जहां तक वैज्ञानिक सम्बन्ध है वहां तक तो वह ठीक है और शेष केवल ढोंग तथा मिथ्या है। मार्जन या पुरश्चरण के साधन पदार्थ जल, वस्त्र, कूर्च आदि हैं। इनके द्वारा मार्जन या पुरश्चरण के एक दो उदाहरण संक्षेप में यहां देते हैं।

जल से—मस्तिष्क के चक्कर आने, अचेत हो जाने (बेहोशी) और सर्प काटे पर जल के छींटे देने से लाभ होता है। यह बात कोई मन्त्र-विद्या या जादू की नहीं है किन्तु वैज्ञानिक है और आयुर्वेद के साथ सम्बन्ध रखती है। प्रत्येक डॉक्टर और वैद्य इसके साक्षी हैं। जो लोग इसे मन्त्रविद्या या जादू कहते हैं वे भ्रम में हैं। ऐसे लोग किसी साधु या महात्मा के हाथों से बेहोश हुए को जल छिड़के जाने पर होश में आ जाना उसको मन्त्रविद्या या जादू समझते हैं। क्योंकि वे आयुर्वेद शास्त्र से अनभिज्ञ होते हैं उन्हें जल के गुणों, प्रभावों और जल चिकित्सा का ज्ञान नहीं। देखिये जल में मूर्च्छा अर्थात् बेहोशी आदि रोग हटाने के गुण आयुर्वेद में बतलाये हैं **"पानीयं श्रमनाशनं क्लमहरं मूर्च्छापिपासहम्।"** (भावप्रकाश निघण्टु)

वस्त्र से—जल में भीगे मोटे वस्त्र का स्पर्श आंखों और सिरदर्द तथा अचेतता को हितकर है। यहां तक तो ठीक है परन्तु किसी व्यक्ति को रूमाल मारकर जादू से

अचेत कर देना अवैज्ञानिक है। रूमाल में कोई अचेत कर देने वाली गंध लगा देने से ऐसा हो जाता है।

कूर्च से :—कोई-कोई रोग ऐसा होता है जो कि किन्हीं बालों के पुरश्चरण अर्थात् झाड़न, ब्रुश से दूर होते हैं। अतिप्राचीन काल से चमरमृग (चंवरी गौ) के पुच्छ की बालमंजरी का उपयोग चला आता है। उसके स्पर्श से त्वचा के दोष, कृमियों के संसर्ग से हुए रोग दूर होते हैं, शरीर में ओज बल प्राप्त होता है। स्वयं अथर्ववेद में कहा भी है **"यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीवर्हेण विवृहामसि"** (अथर्व. २/३३/७) कश्यप का अर्थ वैद्यक-शब्द-सिन्धु में मृग विशेष दिया है जो चमरमृग के लिए है **"कश्यपः मृगविशेषः"** (वैद्यकशब्दसिन्धुः) शरीर में पित्ति उछल आने पर जुलाहे के ताना संवारने वाले कूचे (ब्रुश) से पुनः पुनः अनुलोम स्पर्श से पित्ति दब जाती है। इसी प्रकार तृणों के पुरश्चरण झाडू से झाड़ने या स्पर्श से कई रोगों में लाभ होता है विशेषतः रक्तविकार केरोगों को। पर लोग इनको मन्त्र या जादू का प्रयोग समझते हैं। इनके द्वारा चिकित्सा करने वाले लोग अपना प्रभाव जमाने को कहते हैं कि हमने मन्त्र या जादू के बल से रोग को झाड़ दिया।

रोगों को दूसरों पर उतारने की समस्या

कुछ लोगों का कथन है कि मार्जन से रोगी के रोग को दूसरे प्राणी और वनस्पति आदि पर उतारा जा सकता है ऐसा अथर्ववेद में दिया है। इसके सम्बन्ध में हमारा कहना कि इस विषय के समझने में जनता में कुछ भ्रांति है, क्योंकि वैज्ञानिक तथा आयुर्वेदिक नियमों के अनुसार मानना तो ठीक है परन्तु प्रतिकूल कल्पना मिथ्या है। यह वैज्ञानिक या आयुर्वेदिक या जीवनसृष्टि का नियम है कि मनुष्य आदि प्राणियों के शरीर के अन्दर से निकला वायु जो कि उनके लिए दूषित समझा जाता है वह वनस्पतियों के लिए अनुकूल है एवं वनस्पतियों से निकला वायु जो उनके लिए दूषित है, वह मनुष्य आदियों के लिए अनुकूल है। यदि मनुष्य आदि के उक्त दूषित वायु को वनस्पतियां न लें और वनस्पतियों के दूषित वायु को मनुष्य आदि ग्रहण न करें तो दोनों का जीवन स्वस्थ नहीं रह सकता। यह बात केवल वायु तक ही नहीं उनके मलों के भी परस्पर ग्रहण करने का व्यवहार है। मनुष्य आदि के मल मूत्र आदि वनस्पतियों के लिये हितकर हैं। एवं वनस्पतियों के छाछ, गोंद, मद आदि दोष मनुष्य आदि के लिये हितकर हैं। इससे सिद्ध हुआ कि मनुष्य आदियों के दोषों रोगों को वनस्पतियां अपनाती हैं और वनस्पतियों के दोषों का मनुष्य आदि अपनाते हैं। जब यह है तब मनुष्य आदि के रोगों को वनस्पतियों पर अवतरण होता है या वनस्पतियां उन रोगों को आकर्षित करती हैं और वनस्पतियों के रोगों का अवतरण मनुष्य आदि पर होता है या मनुष्य आदि उन्हें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इसलिए मनुष्य आदि के रोगों का अवतरण वनस्पतियों पर होता है यह कोई मन्त्र या जादू की बात नहीं है। एवं मनुष्य आदि प्राणियों में भी परस्पर यही नियम है मनुष्यों के दोषों या रोगों को पशु पक्षी अपनाते हैं वे इनके लिए दोष या रोग नहीं किन्तु जीवन है। पशु पक्षियों के दोषों को मनुष्य अपनाते हैं उनके लिए वे दोष नहीं किन्तु औषधरूप हैं। हां इसमें भी प्रत्येक वनस्पति मनुष्य के रोगों और दोषों को अपनावे या प्रत्येक वनस्पति या पशु पक्षी के दोष को मनुष्य अपनावे ऐसा नहीं; किन्तु जिस वनस्पति को मनुष्यादि का जो दोष अनुकूल होता है वही उसे अपनाता है एवं जिस वनस्पति या पशु या पक्षी का जो दोष जिस किसी मनुष्य को अनुकूल होता है वही अपनाता है। जैसे मनुष्य के क्षय रोग के दोषों या क्षय रोग से दूषित वायु को वनस्पतियों में चील (चीड़) का वृक्ष और पशुओं में बकरी तथा बन्दर अधिक अपनाते हैं। ऐसे ही मनुष्य के कामला (पीलिये) दोष को दारूहल्दी के वृक्ष और हरिये तोते आदि पक्षी अपनाते हैं। इत्यादि बातें वैज्ञानिक आयुर्वेदिक और जीवनसृष्टि की विद्या के साथ सम्बन्ध रखती हैं कोई जादू नहीं है। यदि ऐसी बातें अथर्ववेद में आई हैं तो आश्चर्य ही क्या है। यहां हम उन दो-एक ऐसी बातों को दर्शाते भी हैं।

शुकेषु ते हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि। अथो हारिद्रवेषु ते हरिमाणं नि दध्मसि॥ (अथर्व. १/२२/४)

अर्थ—(ते) हे रोगी! तेरे (हरिमाणाम्) हलीमक कामला रोग को (शुकेषु) शुकों-तोते-पक्षियों तथा (रोपणाकासु) सदा रोहण करने वाली हरी-भरी दूब के पौधों में (दध्मसि) धरते हैं (अथो) और (ते हरिमाणम्) तेरे हलीमक कामला रोग को (हारिद्रवेषु) हिरद्रु वृक्ष अर्थात् दारूहल्दी के वृक्ष के समूह में 'तस्य समूहः' —'अनुदात्तदेरम्' (अष्टा. ४/२/३७,४४) (निद्ध्मसि) निहित करते हैं विलुप्त करते हैं।

हलीमक कामला के रोगी केपास तोते रहने चाहिएं उसे हरी-हरी दूब घास में घुमाना, सैर कराना और बिठाना चाहिए। दारूहल्दी के जंगल में उसका निवास कुछ काल तक कराना अत्यन्त उपयोगी है। हरे रंग के तोते, हरी घास और दारूहल्दी के वृक्ष उसके हरियाले पीलिए कामले पाण्डु रंग का आकर्षण कर लेंगे ऐसा यहां

मन्त्र में सूचित किया है। आयुर्वेदिक निघण्टु में दूब को 'रूहा' कहा भी है, जो मन्त्र में दिए 'रोपणाका' का पर्याय है और इसे रक्तशुद्धि करने वाली जीवन देने वाली लिखा भी है **"नीलदूर्वा तु मधुरा तिक्ता रूचिप्रदा। संजीवनी च तुवरा रक्तशुद्धिकरी मता।"** हिरद्रु अर्थात् दारूहल्दी को राजनिघण्टु में अंग कान्ति करनेवाली अर्थात् रक्तशोधक रक्तवर्धक पाण्डुता या पीलापन और हरापन नष्ट करने वाली बताया है। **हरिद्रुः शीतलस्तिक्तो मंगल्यः पित्तवान्तिजित्। करो बल्यो नानात्वग्दोपनाशनः'** (राजनिघण्टु ९/२७) इस प्रकार हलीमक कामला रोग वाले रोगी को हरिया (हरियाले) तोतों 'हरीदूब के स्थलों और दारूहल्दी के वृक्षों में निवास भ्रमण आदि द्वारा स्वस्थ करना कोई मन्त्र जादू से रोग को उन पर उतारना नहीं कहा जा सकता, किन्तु उक्तरोग को आकर्षित करना रोगी के शरीर से बाहर निकालना उनका गुण है। तथा **मुंञ्च शीर्षक्तया उत कास एनं परूष्परूराविवेशा यो अस्य। यो अभ्रजा वातजा यश्च शुष्मो वनस्पतीन्त्सचतां पर्वतांश्च॥** (अथ. १/१२/३)

अर्थ—(शीर्षक्तयाः) उन्माद आदि शिरोरोग से (उत) तथा (यः) जो (वातजाः) वातप्रकोप से उत्पन्न वातिक (शुष्मः) शोषक पित्तप्रकोप से उत्पन्न पैत्तिक (च) और (यः) जो (अभ्रजाः) घनरूप कफप्रकोप से उत्पन्न श्लैष्मिक (कासः) खांसी रोग-क्षयरूप खांसी रोग (यः) जो (अस्य) इस रोगी के (परूष्परूः) जोड़ जोड़ में (आविवेश) घुसा हुआ है या घुस बैठता है, उससे (एनम्) इस रोगी को (मुश्च) छुड़ा। वह रोगी (वनस्तीन्) वनस्पतियों को (च) और (पर्वतान्) पर्वतें को (सचताम्) सेवन करें "पच सेचने सेवने च" (भ्वादिः)।

मन्त्र में बतलाया है कि उन्माद आदि शिरारोग का रोगी और क्षय खांसी वाला रोगी वनों पर्वतों का सेवन करे। आजकल उक्त रोगों के रोगियों को डॉक्टर लोग वनों-पर्वतों में रहने की अनुमति देते भी हैं और वे वहां रह कर स्वस्थ हो जाते हैं यही बात वेद ने कही है। यह भी मन्त्र या जादू की बात कोई नहीं है।

विशेष—हमने उक्त अर्थ में 'सचताम्' क्रिया का कर्ता रोगी को बनाया है और वास्तव में रोगी ही उसका कर्ता है वह वनस्पतियों-वनों, पर्वतों को सेवन करता है प्रत्यक्ष भी ऐसा ही है। परन्तु सायणानुसार जो कोई भी रोग वातिक पैत्तिक श्लैष्मिक हो वह वनस्पतियों और पर्वतों को प्राप्त हो-उनके अन्दर घुस जावे उनमें उतर जावे। ऐसा अन्वय और अर्थ करने में मन्त्र का 'शीर्षक्ति' और 'कास' रोग को पृथक् पढ़ना निरर्थक हो जाता है क्योंकि ये दोनों रोग भी आ जाते हैं। **"इदानीं वातपित्तश्लेष्मविकारजनितानां सर्वेषामपि व्याधीनां अस्मात्पुरूषादन्यत्रावस्थानं प्रार्थयते यो अभ्रजा इति"** अतः 'यो अभ्रजा' आदि विशेषण कास रोग के हैं उसके साथ अन्वय करना चाहिए पुनः अब दो रोग ही रहे 'शीर्षक्ति' (उन्माद आदि शिरारोग) और 'कास' (क्षय खांसी) फिर 'मुश्च' क्रिया का 'एनम्' पद रोगी वाचक शेष रह जाता है, उसके रोग से छूटने की विधि यह है कि वह रोगी वनस्पतियों वनों पर्वतों का सेवन करे उनमें रहे। यह शुद्धार्थ हुआ। कदाचित् मान लिया जावे कि रोग उन वनस्पतियों और पर्वतों को प्राप्त हो। इसका भी वही तात्पर्य होगा जो हम मन्त्रार्थ में तथा उससे पूर्व बतला आए हैं कि वन के वनस्पतियों और पर्वत अर्थात् पर्वतीय ओषधियों में उक्त रोगों के दोषों के खींचने की शक्ति है। परन्तु एक बात यहां पर्वत शब्द के साथ होने से रोग का अवतरण पर्वत पर घटाना दुष्कर ही नहीं किन्तु असम्भव भी है क्योंकि वह निर्जीव जड़ है। पर्वत पर रोग का उतरना ऐसा समझना चाहिए जैसे पृथिवी जल वायु पर रोग को उतारना हो। उक्त पृथिवी वायु आदि में तो हर समय प्राणियों के रोग उतरते रहते ही हैं इसमें मन्त्र या जादू के यत्न की आवश्यकता ही क्या है। तात्स्थ्योपाधि से 'पर्वतीय-औषधियां' अर्थ लेने में बात एक ही है जैसा कि पूर्व बतलाया जा चुका है परन्तु यहां तो वही अर्थ शुद्ध है जो हमने किया है। इसलिए मन्त्र या जादू की बात यहां कुछ भी नहीं है केवल वही आयुर्वेदिक सिद्धान्त की बात है। क्रमशः....

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आदि मनुज से सुन्दरतम तुम,
आदि 'प्राण' से सुन्दर प्राण।
तुम 'मानव' थे युग मानव या,
मानवता के ही अभियान।
तुम अद्भुत थे मंजुल कवि की
शाश्वत वीणा के अनुरूप।
तुम में झांक रहा था ऋषिवर !
सतयुग का अभिनव प्रारूप !
बीच भंवर जग नाव पड़ी थी, तुम ही खोज सके पतवार।
हे युग-स्त्रष्टा ! हे युग द्रष्टा ! हे युग-गौरव ! युग आधार !!

—राकेशरानी

वृद्धावस्था और स्वास्थ्य

❑ हरशरण गोयल

मन स्वस्थ-तन स्वस्थ। सदैव प्रसन्नता का भाव बनाए रखें चाहे मन में कितनी पीड़ा हो। हर क्षण प्रसन्न चित्त रहने का प्रयास करने से आन्तरिक पीड़ा कम होने लगती है। तभी कहा जाता है मुस्कराते रहिए। सोच सदैव सकारात्मक रहे जैसे ही नकारात्मक या पोच विचार आएँ उनसे छुटकारा तत्काल पाकर सोच पर मन को ले आएँ। गम खाएँ, कम खाएँ और नम जाएँ।

खान पान— प्रभात में शैय्या पर बैठे-बैठे बिना कुल्ला किए ताँबे के पात्र में रखा जल एक लीटर तक पी जाएँ। नाश्ते में पपीता लें। नींबू, शहद और पानी लें। अंकुरित गेहूँ, चना, मूँग, मोठ आदि लें। कच्ची मूँगफली, किशमिश, मुनक्का भी ले सकते हैं। पेट नरम और पाँव गरम। आँवले का प्रयोग सूखे या ताजे-रोज करें। दोपहर भोजन में चपाती, दलिया, सलाद, छाछ, गुड़ आदि लें। चावल न लें तो अच्छा अन्यथा थोड़ा लें वह भी चपाती के बाद। भोजन पूर्व द्राक्षासव दो चम्मच पानी के साथ लेने से भूख अच्छी तेज होगी। रात्रि को त्रिफला चूर्ण लेकर दूध लिया जा सकता है। प्रातःकालीन सैर और हल्का व्यायाम नित्य। दिन में हंसना, गुनगुनाना और मुस्कराना कम से कम चार बार। मुँह में पानी भर कर गाल फुला कर ठंडे जल से आँखों पर छपके मारें दो तीन बार। मानसिक तनाव से बचे रहें। करने वाला कोई और है तो फिर निराश क्यों? सेवा, सिमरन, स्वाध्याय, सत्संग, सहयोग, समर्पण और संतोष जीवन में अवश्य अपनाओ। आवश्यकताएँ न्यूनतम रखें। अपेक्षा, आशा, ईर्ष्या, द्वेष, आसक्ति से अपने को बचाए रखें। समाज सेवा में अधिक समय दें। पैंशन प्राप्तकर्ताओं के लिए, प्रभु प्रदत्त वरदान है कि वे जीवन को आनन्दपूर्वक ईश्वर भजन करते व्यतीत कर सकते हैं। जीवन भर कमाने में मन लगा रहा अब दो प्राणियों के लिए पर्याप्त धनराशि मिल रही है मृत्यु पर्यन्त तो क्यों लोभ, लालच, तनाव, निराशा में फंसे हो।

परिवार में निर्लिप्तता—न्यूनतम हस्तक्षेप। आत्मनिरीक्षण करें। दायित्व से न बचें। समाज के लिए तन, मन और धन से काम आओ। न कुछ लाए थे न साथ जायेगा। संतुलित स्वभाव रखें, न परनिन्दा करें, न सुनें। मानसिक रूप से अन्तिम यात्रा के लिए तैयार रहें, कष्ट कम होगा। कम बोलें, क्रोध न करें। सुख-दुख में समान भाव। प्रभाव-अभाव से दूर। अपनी प्रशंसा केपुल न बाँधें। क्या थे, क्या हो गए? क्या होंगे अभी ! प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाएँ। परिस्थितियों से अपने को उनकेअनुरूप ढालना सीखें। परिस्थिति नहीं बदल सकते तो अपने को बदल लो। हर प्राणी में परमात्मा के दर्शन करके उसके भले में लगे रहो। असुविधा न होने दें। अधिकार न जमाएँ। बच्चों के साथ बच्चे बनकर हँसो, उछलो, खेलो, शिक्षा दो, समय व्यतीत करो। कष्ट सहने की आदत डालो। अपना हर कार्य-बिस्तर उठाना, सफाई करना, स्नानादि की तैयारी, कपड़े धोना, पानी लेकर पीना स्वयं करें कहने से करना सरल होता है। हठधर्मिता से बचें। स्वयं को व्यस्त रखें अन्यथा खाली दिमाग शैतान का घर। अच्छा पढ़ें, अच्छा सुनें, अच्छा बोलें। शाकाहारी भोजन लें, मोटापा न होने दें। आराम करें आलस्य नहीं। गहरे श्वास लें। पैदल अधिक चलें, पानी अधिक पीएँ। प्रभु में श्रद्धा और विश्वास रक्खें। संतुलित आहार लें। भोजन खूब चबाकर करें। चिकनाई, चीनी, नमक का न्यूनतम प्रयोग करें। मैदे की बनी वस्तुएँ और तली चीजें न लें। कर्ज, मर्ज़ और फर्ज के प्रति लापरवाही न बरतें। ध्यान, आराधना के लिए समय अवश्य दें। बुरा स्वभाव, बुरी संगत, बुरा स्वास्थ्य, घटिया साथी इनसे बचो। समय थोड़ा रह गया है अतः सावधानीपूर्वक इसका सदुपयोग करो। बच्चों को साथ लेकर आधा घण्टा मन्दिर में रहो। संस्कार पड़ेंगे। संसार से भागने से नहीं संसार में जागने से कल्याण होगा। घृणा किसी से भी कभी भी कहीं भी नहीं करनी चाहिए।

निर्मल मन जन सोइ मोहि पावा।
मोहि छल छिद्र कपट नहीं भावा॥

झूठा, अभिमानी, दम्भी अनेक रोगों से ग्रसित रहता है। 'बिना विचारे यदि काम होगा, कभी न अच्छा परिणाम होगा।'

तनाव मुक्ति—गहरा श्वास लें, ठंडा पानी पिएँ, प्रभु विग्रह में मन लगाएं, चर्चा करने लगें, गुनगुनाने लगें, परिस्थिति को भूल जाएँ, टहलना शुरू कर दें, श्वसन में लेट जाएँ, संगीत सुनें, पढ़ना प्रारंभ करें, नाम जप करने लगें। भौतिक साधनों की चकाचौंध से बचकर भारतीय

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

पेट के रोग व चिकित्सा

❒ कविराज कृष्णगोपाल

यह मानी हुई बात है कि पेट की खराबी बहुत से रोगों की जड़ है। यदि पेट के सम्बन्ध में लोगों को ठीक ज्ञान हो तो लाखों लोगों के दु:ख दूर हो सकते हैं। आजकल स्कूलों, कॉलेजों, पाठशालाओं एव गुरुकुलों में सारे संसार के पहाड़ों, नदियों तथा समुद्रों आदि का ज्ञान तो दिया जाता है, पर दु:ख से कहना पड़ता है कि विद्यार्थियों को शरीर की बनावट या भीतर की हड्डियों तथा रक्त-संचार आदि और खान-पान के नियमों का ज्ञान नहीं करवाया जाता। इसलिए बड़े-बड़े पढ़े-लिखे लोग भी अनेक मोटी-मोटी भूलें करके सैकड़ों रोगों से पीड़ित हो जाते हैं।

हम आगे शरीर के सबसे आवश्यक अंग पेट और उसके विभिन्न भागों तथा उनमें होने वाले रोगों का वर्णन करेंगे। यदि उनके स्वरूप और उपचार को पाठक समझ लें तो अनेक दु:खों से बच जायेंगे।

आमाशय का वर्णन—आमाशय (मेदा) एक मशक की तरह की थैली है, जो पेट के ऊपर की ओर बाएं भाग में वक्षों पर मध्यस्थ मांसपेशी के नीचे रहती है। इसकी लम्बाई १२ या १३ इंच और चौड़ाई ४ इंच के लगभग होती है। इसमें दो छेद होते हैं—एक ऊपर को अन्न-प्रणाली से जुड़ा रहता है और दूसरा छेद मलाशय के निचले सिरे में होता है जो आंतों के साथ जुड़ा होता है।

आमाशय का कार्य—मुख द्वारा जो भोजन पेट में जाता है, वह पहले आधे घंटे तक इसमें पड़ा रहता है और उसके बाद पचना आरम्भ होता है। इसके भीतर छोटी-छोटी गांठें होती हैं जो रस छोड़ती हैं और भोजन पचने में सहायता देती हैं। जिस प्रकार चक्की के दो पाटों में अनाज पिसता है अथवा सिल और बट्टे पर दालें पिस जाती हैं, उसी प्रकार उसकी दीवारें आपस में हर समय मिलकर क्रिया करती रहती हैं। यह पाचन-क्रिया ४-५ घंटे तक होती रहती है। ज्यों-ज्यों भोजन पचता जाता है, त्यों-त्यों आंतों में आता जाता है। ६-७ घंटे पीछे आमाशय खाली हो जाता है। आमाशय शरीर में स्वास्थ्यरक्षा का आवश्यक अंग है। जो इसकी ओर से असावधान रहते हैं और खानपान का ध्यान नहीं रखते उनका आमाशय खराब होकर कई रोग उत्पन्न कर देता है।

आमाशय सोज (Stomach-Swelling)

इसमें मेदे के मुख (कौड़ी) के स्थान पर सूजन हो जाती है और कौड़ी-प्रदेश में पीड़ा, जी मचलाना, उल्टी आदि लक्षण हो जाते हैं।

कारण—तीक्ष्ण पदार्थ, तेज मसाले, कच्चे तथा सड़े हुए फल व पदार्थों के खाने, मद्यादि के सेवन एवं अधिक चाय, कॉफी, केक के प्रयोग से आमाशय की झिल्ली में सूजन हो जाती है। इस सूजन से कौड़ी वाले स्थान पर पीड़ा, भारीपन तथा जलन होती है और भूख भी मारी जाती है। जिह्वा मैली तथा सफेद हो जाती है, प्यास लगती है और डकार भी बहुत आते हैं।

चिकित्सा—ऐसी अवस्था में २५० ग्राम के लगभग पानी में एक चम्मच लवण डालकर पीकर उल्टी कर लेनी चाहिए। उल्टी आ जाने से आंमाशय स्वच्छ हो जाता है और आराम आ जाता है। उल्टी आने के पीछे सोडावाटर (खारी बोतल) नमक डालकर अथवा शहद पानी में मिलाकर व अर्क सौंफ पीने से लाभ होता है। इसमें नशादर (नौशादर) चाट लेने से भी आराम आ जाता है। यदि तब भी लाभ न हो और कई दिनों की असावधानता से रोग बढ़ गया हो तो बाकायदा इसकी चिकित्सा करवानी चाहिए। खान-पान में सावधानी बहुत आवश्यक है। यदि उपचार के समय मिर्च, मसाले, शराब आदि न छोड़ी जावे तो लाभ नहीं हो सकता। तले हुए मीठे व नमकीन पदार्थ कुछ दिन के लिए बिल्कुल छोड़ देने चाहिएं। फुलका (रोटी) खूब फूला हुआ खुश्क खाना चाहिए। सब्जियां भी यदि बिना तड़के के भाप की उबली हुई खाई जाएं तो शीघ्र पच जाती हैं। यदि वैसे न भी खानी हों तो बिना घी के सब्जियां प्रयोग करें। दालें न खायें तो अच्छा है। मूंग या मसूर की दाल भी बिना घी के ले सकते हैं। इस प्रकार परहेज़ से मेदे के कौड़ी प्रदेश की सूजन हट जाती है और पीड़ा भी शांत हो जाती है।

अम्लपित्त (Acid Dyspepsia)

खाने-पीने की भूल से मेदे में एक और रोग उत्पन्न हो जाता है जिसका नाम अम्लपित्त है। यह बीमारी सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू, पान-मसाला, अधिक खटाई और तेज लाल मिर्च, हरी मिर्च व तेज मसाले, शराब, गरिष्ठ (भारी) भोजन, बहुत मिठाई, अधिक मांस, मछली, अण्डे पकौड़े, समोसे, पूरी आदि तले हुए पदार्थ, अधिक चाय और कॉफी आदि उष्णवीर्य (गर्म तासीर) के पदार्थों के सेवन से होती है। कइयों को पुराने आमवात (गठिया) रोग से भी हो जाती हैं जिन लोगों की पाचनशक्ति कम होती है उन्हें यह रोग शीघ्र लग जाता है। जो लोग व्यायाम, भ्रमण व कोई अन्य शारीरिक काम, खेलें आदि करते रहते हैं, उनका आमाशय बलवान् होता है, तब यह रोग उन पर प्रभाव नहीं करता। जो लोग गरिष्ठ भोजन

करते हैं और शरीर से व्यायाम वा खेल नहीं करते उन्हें यह अम्लपित्त शीघ्र ही घेर लेता है।

लक्षण—भोजन के एक-दो घंटे पीछे छाती में कुछ दाह (जलन), धुआँ उठना, खट्टी डकार लग जाती हैं। जब कष्ट बढ़ जावे तो डकारों के साथ एक प्रकार का पीला व हरे रंग का खट्टा पानी, जिसे 'पित्त' कहते हैं, आने लगता है। कभी-कभी जी मचलाता व पित्त की खट्टी उल्टी भी आ जाती है। मुख का स्वाद कड़वा, खट्टा हो जाता है। भीतर बेचैनी सी उठती है और सिर में चक्कर से आने लगते हैं। पाचनशक्ति दुर्बल होकर मल भी दस्तों के रूप में वा कभी-कभी कच्चा-पक्का उतरता है। गले की नाली और घण्टी के नीचे ऐसी रुकावट सीप्रतीत होती है, जैसे नाली के मुख पर किसी ने डाट सा लगा दिया हो। यदि इस अवस्था में असावधानता की जावे तो यह रोग अधिक प्यास, अधिक पसीना, छाती व पीठ में दर्द, बेहोशी, प्रलाप, नेत्रों के आगे अंधेरापन आदि उत्पन्न करता है।

पथ्य-परहेज़—ऐसी अवस्था में रोगी को खान-पान का बहुत ध्यान रखना चाहिए। कैसी भी खटाई नहीं खानी चाहिए। बाहर और भीतर की खटाई मिलकर भयंकर रोग उत्पन्न कर देती है। प्याज, लहसुन, अण्डा, मांस, मछली, उड़द, तिल, दही, शुष्क मेवे आदि उष्णवीर्य पदार्थ छोड़ देने चाहिएं। नींबू की खटाई इसमें हानि नहीं पहुंचाती। पुराने चावल, जौ, गेहूं का दलिया, सूजी या आटे की खुष्क रोटी ठंडे शर्बत, बाथू, मीठा अनार, ककौड़ा, आंवला, मुलहठी आदि का प्रयोग करना चाहिए।

अग्निमांद्य (Dyspepsia)

यह आमाशय का तीसरा रोग है जिसे मंदाग्नि भी कहते हैं। इस रोग में अन्न पचाने की अग्नि मंद हो जाती है। इससे अजीर्ण (बदहजमी), दस्त पेट-दर्द, कम भूख वमन (उल्टी), जी मचलाना, भोजन की इच्छा न होना, मुख के स्वाद में परिवर्तन आदि लक्षण हो जाते हैं। यदि इसका शीघ्र इलाज न किया जाए तो जोड़ों के दर्द, अफारा, सिर में भारीपन हो जाता है। मन्दाग्नि में भोजन पूरी तरह नहीं पचता और शरीर में रुधिर कम हो जाने से विलोहितता (Anaemi) रोग हो जाता है।

चिकित्सा—ऐसी अवस्था में रोगी को चाहिए कि वह व्यायाम, भ्रमण (सैर करना) वा खेलें आरम्भ कर दे। खूब चबा-चबा कर समय पर सादा भोजन खाएं। सोडावाटर (खारी बोतल), गर्म पानी, दूध, मक्खन तथा शीघ्र प्रचने वाले हल्के फलों व आहारों का प्रयोग करें। तरीदार की अपेक्षा खुश्क भुर्जी के रूप में बनी हुई सब्जियाँ इसमें अधिक लाभ पहुचाती हैं। मांस, मछली, तली हुई नमकीन वा मिठाई सर्वथा निषिद्ध है। यदि ऊपर के उपायों से रोग शांत न हो तो उसकी लगकर चिकित्सा करवानी चाहिए, नहीं तो कई प्रकार के अन्य उपद्रव पैदा हो जाते हैं।

अजीर्ण (बदहज़मी Indigestion)

अजीर्ण का रोग आजकल बहुत है। लोगों की पाचन-शक्ति दुर्बल हो जाने से यह रोग वृद्धि पकड़ रहा है। जो कुछ हम खाते हैं उसी भोजन के जीर्ण होने से हमारे अन्दर पहले कच्चा रस बनता है, फिर इसी के पक जाने से क्रमशः रक्त, मांस, मेदा, हड्डी, मज्जा और वीर्य बनते हैं। सारे शरीर की शक्ति और स्वास्थ्य इन्हीं से ठीक रहता है। यदि खाया हुआ भोजन ही हजम न हो, तो चाहे हम बढ़िया भोजन क्यों न खावें, उससे शरीर में कोई पुष्टि नहीं आती। इसलिए अजीर्ण रोग की ओर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

कारण—अधिक शराब, सिगरेट, चाय, कॉफी, तेज मिर्च मसाले, बेमेल भोजन के खाने, अत्यधिक जल पीने, टट्टी, पेशाब और अपान वायु के वेगों को रोकने, बहुत जागने, ईर्ष्या, भय, क्रोध, शोक, चिन्ता और मानसिकतनाव से हमारी पाचनशक्ति दुर्बल हो जाती है। वह दुर्बल होकर भोजन को नहीं पचा पाती, यही अजीर्ण वा बदहजमी है।

लक्षण—इससे शरीर और हृदय में भारीपन, जी मचलाना, गालों और आंखों के नीचे सूजन, भोजन के पीछे बहुत डकारों का आना, सिर में चक्कर, प्यास अधिक लगना, बेहोशी, छाती और पीठ में कभी-कभी पीड़ा होना, पसीना अधिक आना, छाती में जलन, खट्टे डकार, कब्ज़, पेट में अफारा, वमन, थूक का अधिक आना, अपान वायु का रुकना, सिरदर्द, अंगों में पीड़ा, दिल की धड़कन का बढ़ना आदि लक्षण हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त जब अजीर्ण बहुत बढ़ जावे तो मृत्यु तक हो जाती है। जरूरी नहीं कि ऊपर लिखे लक्षण अजीर्ण की बीमारी में इकट्ठे ही हों। किसी समय थोड़े, कभी बहुत लक्षण इकट्ठे हो जाते हैं। इनसे हमें समझ लेना चाहिए कि अब हमारी पाचनशक्ति दुर्बल हो गई है। मेदे या कौड़ी-प्रदेश पर दबाने से पीड़ा होती है। यदि यह कष्ट अधिक हो जावे तो बिना दबाये भी शूल अनुभव होने लगता है।

चिकित्सा—जितना यह रोग भयंकर है, उतनी ही चिकित्सा सरल है। सबसे पहली चिकित्सा इसकी उपवास है। जब तक पूरी तरह से भूख न लगे तब तक कुछ नहीं खाना चाहिए। पानी में थोड़ा नींबू डालकर पीते जाना चाहिए। ग्रीष्म ऋतु में थोड़ी बर्फ, नींबू का रस और चीनी एक प्लेट में डालकर इसी को एक-एक चम्मच पीना चाहिए। यदि शीत ऋतु हो तो गर्म पानी पीना अच्छा है। लवण, सेंधा या काला, नींबू को लगाकर वैसे ही चूसना चाहिए। इस तरह कुछ दिन उपवास रखने से

मेदे की पाचनशक्ति बढ़ती है और भूख लग कर भोजन हजम हो जाता है। यदि विबंध (कब्ज) के कारण अजीर्ण हो तो बड़ी हरड़ बढ़िया लेकर, उसके बीज निकाल कर छिलका बारीक पीसकर २-३ ग्राम गर्म पानी से ले लें या दूध से ले लें। अथवा निशोथ कूट कर दो या तीन ग्राम गर्म पानी से लेवें। इससे शौच खुलकर आ जाता है और अजीर्णता शान्त हो जाती है। यदि खट्टी डकारें साथ आती हैं, तो गर्म पानी में नींबू अथवा लवण का चम्मच डालकर पीना भी लाभकारी है। सोडा-वाटर (खारी बोतल) पीने से भी ठीक हो जाती हैं। इस रोग को रोकने की मूल चिकित्सा तो सैर करना, खेलना, कूदना, व्यायाम या योगासन करना है। ऐसे लोगों से यह रोग कोसों दूर भागता है। अतः जो इस दुष्ट रोग से बचना चाहते हैं, उन्हें शरीर को किसी खेल या काम में अवश्य लगाना चाहिए।

पथ्यापथ्य—अजीर्ण में निम्नलिखित वस्तुओं को छोड़ देना चाहिए—सब प्रकार की दालें—उड़द, चना, अरहर, लोबिया, मलका मसर (मसूर) आदि, हर प्रकार का मांस, सरसों का साग, मटर, आलू, कचालू, अरबी, भिण्डी-तोरी, शकरकन्दी, सेम की फली, कचनार, तले हुए पदार्थ जैसे परौंठा, पूरी, कचौरी, समोसा, पकौड़ा, मट्ठी, खोवा (मावा), मैदा, बेसन की बनी हुई नमकीन व मिठाई, अधिक घी, मक्खन वा तेल, दही, केला, अमरूद, सिंघाड़े, देर-हजम फल आदि आदि।

('पेट के रोग और उनकी चिकित्सा' से साभार)

२४९, कादम्बरी अपार्ट. से. ९, रोहिणी, दिल्ली-८५

(पृष्ठ ३४ का शेष)

संस्कारो को अपनाओ।

कुछ दर्द निवारण उपाय

१. दो ग्राम ईसबगोल में मिश्री उतनी ही डालकर पानी के साथ खाने से पेचिस ठीक।
२. पपीता नित्य लेने से कब्ज व बवासीर दूर।
३. मसूढ़े में दर्द होने पर प्याज का टुकड़ा रखें।
४. प्रातः खाली पेट दो अखरोट की गिरी खाने से घुटने का दर्द दूर।
५. बालतोड़ के स्थान पर सोकर उठते ही अपना थूक या मेहंदी लगायें।
६. चक्कर आने पर चीनी नमक का घोल या शहद नींबू पानी लें।
७. गठिया रोग में मेथी का चूर्ण पानी के साथ लें। सुबह शाम नीबू रस का लगातार प्रयोग आँखों की रोशनी बढ़ाता है।
८. जाड़ों में तेल मालिश करने वालों को गर्मी में घमौरियाँ नहीं होतीं।
९. सिर में फुंसी/खुजली हो तो नींबू रस और सरसों का तेल समभाग में मलें।
१०. २ ग्राम सौंठ पाउडर और ८ ग्राम शहद मिलाकर देने से उलटी दस्त में लाभ।
११. गर्मी से नकसीर में हरा धनिया सुंघाएँ तथा पत्तियों को पीस कर सिर पर लेप करें।

के.सी. ६८८, कविनगर, गाजियाबाद

(पृष्ठ ६ का शेष)

ठीक है कि हमले की स्थित में अतिविशिष्ट व्यक्तियों तथा मौजूद दोनों सदनों के स्पीकर, प्रधानमंत्री और अन्य मंत्रियों को बंकर में ले जाया जाय, लेकिन साधारण सांसद की सुरक्षा के लिए किये जाने वाले उपायों की जानकारी केअभाव में गैरबराबरी के अहसास को सिरे से खारिज नहीं किया जा सकता। यदि ऐसा है, तो सांसदों के बीच इस तरह के फर्क का कोई औचित्य नजर नहीं आता, क्योंकि सांसदों के बीच से ही अध्यक्ष, प्रधानमंत्री, मंत्री और अन्य पदाधिकारी बनते हैं। पद प्राप्त करने के बाद उनका जीवन किस तरह अतिविशिष्ट हो जाता है, इसकी भी व्याख्या होनी चाहिए। दूसरी विचारणीय बात यह है कि १३ दिसम्बर के हमले के डेढ़ साल बाद बचाव के उपायों पर लिये गये निर्णय में इतनी देरी क्यों हुई? संभव है कि ऐसा प्रक्रिया की जटिलता के कारण हुआ हो। लेकिन इस देरी को कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है और ऐसे में तो और भी नहीं जब संभावित आतंकी हमले के मद्देनजर निर्णय लिये गये हैं। बहरहाल, देर से ही सही, समिति के निर्णयों को एक हद तक सार्थक कहा जा सकता है। जो जानकारी उपलब्ध है, उसके अनुसार कई तरह के ऐसे उपकरण लगाये जाएंगे जिनसे अनधिकृत प्रवेश की संभावना पूरी तरह रूक जाएगी। इनमें इलेक्ट्रानिक पहचान पत्र की व्यवस्था तो है ही, 'मैन ट्रैप्स' का उपाय दिलचस्प भी है। इसके तहत अगर किसी ने संसद भवन के अंदर अनधिकृत रूप से घुसने की कोशिश की, तो मैन ट्रैप्स के नीचे की जमीन खिसक जाएगी और वह व्यक्ति भूमिगत कक्ष में गिर जाएगा। जाहिर है ऐसे में सुरक्षाकर्मी उसे धर दबोचेंगे। यह तो हुई अतिविशिष्ट सुरक्षा की बात। लेकिन क्या आतंकी हमले से आमजन के जीवन को बचाने के उपायों पर भी विचार करने की जरूरत को खारिज किया जा सकता है? अगर सांसदों की सुरक्षा बेहद जरूरी है, तो इस पर होने वाले व्यय पर पैनी निगरानी रखना भी आवश्यक है।

(२७ जून "राष्ट्रीय सहारा" से साभार)

बौखलाए पोप ने मर्यादाएं तोड़ी

❑ विक्रमगणेश ओक

ईसाई धर्म भी अपने अनेकानेक पंथ उपपंथों में बंटा है। उन सबमें रोमन केथोलिक संख्या में सबसे बड़ा और प्रभावी पंथ है। इस पंथ का प्रमुख 'पोप' कहलाता है। विश्वभर के रोमन केथोलिकों का नेतृत्व करनेवाले वर्तमान पोप जॉन पाल द्वितीय के दर्शन-उपदेशों को ग्रहण करने सम्प्रदाय के लोग और धर्मकार्य-प्रसार संबंधी मार्गदर्शन प्राप्त करने बिशप वेटिकन सिटी जाया करते हैं। वेटिकन सिटी, इटली की राजधानी रोम का उत्तर-पश्चिमी भाग है। मात्र १०८ एकड़ की यह छोटी सी बस्ती एक स्वायत्त राष्ट्र है और पोप उसका वैधानिक शासक है। पोप के पद पर किसी उत्तराधिकार प्रणाली से नहीं एक विशिष्ट जनतांत्रिक प्रणाली से प्रतिष्ठापना होती है। टायबर नदी के किनारे बसे विश्व के इस सबसे छोटे राज्य-राष्ट्र का विधिवत राष्ट्रध्वज है जिस पर पोप का राजमुकुट अंकित है। वेटिकन राज्य की स्वतंत्र मुद्रा है, स्वतः की डाक सेवा है। उसकी अपनी न्यायव्यवस्था और 'वेटिकन बैंक' है। **वेटिकन का अपना रेडियो स्टेशन, टी. वी. स्टेशन भी हैं। जहां से विश्वभर की ३४ भाषाओं में प्रसारण किया जाता है। इनमें इंग्लिश तो है ही भारत केसंदर्भ में देखा जाए तो हिन्दी और तमिल भाषाओं में भी प्रसारण किया जाता है।** वेटिकन के एक स्वतंत्र स्वायत्त राष्ट्र होने के कारण उसके द्वारा विदेशों में राजदूतों की नियुक्ति भी की जाती है। राजदूत के रूप में राजनयिकों को नहीं तो पादरियों को भेजा जाता है। स्वयं पोप विश्वभर में प्रवास करते हैं और उनकी सुखद विदेश यात्राएं उनके अपने अधिकार के विशेष वोइंग विमान से होती हैं, जो इटली के 'अल इटालिया' एअर लाईन्स द्वारा उनकी सेवार्थ दिया गया है।

पोप एक राष्ट्र प्रमुख

स्पष्ट है कि पोप विश्व के रोमन केथोलिकों के सर्वोच्च धर्मगुरु तो हैं ही साथ में वेटिकन सिटी नामक वित्ते से स्वायत्त राष्ट्र केराष्ट्र प्रमुख भी हैं। प्रत्येक पद की अपनी मर्यादाएं होती हैं फिर भी पद पर आसीन व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार पद का प्रयोग करता है। **वर्तमान पोप जॉन पॉल द्वितीय को राजनीति में शायद विशेष दिलचस्पी है, इसीलिए उन्हें 'पोलिटिकल पोप' कहा जाता है।** अब तक तीन बार पोप का भारत आगमन हुआ है। १९६४ में पोप जॉन पॉल (षष्टम) युकेरिस्ट कांग्रेस के निमित्त आये थे। **वर्तमान पोप जॉन पॉल द्वितीय तथाकथित आध्यात्मिकप्रवास हेतु पहली बार १ फरवरी १९८६ को तो दूसरी बार १९९९ की दीवाली केअवसर पर भारत आये थे। वर्तमान पोप की दोनों ही भारत यात्राएं उनके वक्तव्यों के कारण विवादित रहीं। आज तक पोप महाशय एक सौ से अधिक बार विश्व के किसी देश या जाति से प्रकट क्षमायाचना कर चुके हैं।** वस्तुतः उनकी इस विशेषता के लिए उनका नाम गिनीज बुक में होना चाहिए। उल्लेखनीय है कि ५ नवम्बर १९९९ को पोप की भारत यात्रा से पहले अटकलें लगायी जा रही थीं कि वे भारत से भी माफी मांगेंगे। पर इस प्रकार की आशा करने वालों के हाथ निराशा ही लगी। कहा जा सकता है कि विगत दशक में पोप भारत सौहार्दता में जबरदस्त कमी आयी है।

अभी ३ जून को कुछ भारतीय बिशप पोप से भेंट हेतु वेटिकन में थे। धर्मगुरु होने के नाते भारत के ईसाई पादरी उनसे मार्गदर्शन ग्रहण करें, उसमें कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है। पर चूंकि पोप एक धर्मगुरु केसाथ ही वेटिकन राष्ट्र के राजनयिक प्रमुख हैं, इसलिए उसके दायित्वों और मर्यादाओं का ध्यान उन्हें रखना होगा। पर **यह मात्र खेदजनकही नहीं चिंतनीय विषय है कि पोप ने भारतीय बिशपों से कहा कि "यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत के कट्टरपंथी हिन्दू संगठनों के दवाव में आकर कुछ राज्य सरकारों ने अन्यायपूर्ण धर्मान्तरण-निरोधी कानून पारित कर दिए, लोगों के धार्मिक स्वतंत्रता के नैसर्गिक अधिकार पर रोक लगाई या अनुसूचित जाति के उन लोगों से सरकारी समर्थन वापस ले लिया, जिन्होंने ईसाइयत को अपना लिया।"** कहना होगा कि **पोप का यह कथन सर्वथा गैर जिम्मेदाराना और भारत की विधायिका ही नहीं तो न्यायपालिका का अपमान करनेवाला है।** पोप को यह ज्ञात होना चाहिए कि मध्यप्रदेश, उड़ीसा, अरूणाचल में धर्मस्वातंत्र्य कानून बहुत पहले बन चुके हैं और हर बार विधायिका के बने कानून को न्यायपालिका की अग्निपरीक्षा से गुजरना पड़ा है। इधर तमिलनाडु और गुजरात में इस विषय में बनाये गये अधिनियमों को भी न्यायालय में चुनौती दी गई है।

धर्म परिवर्तन का धंधा

भारतीय संविधान में धर्मप्रचार की स्वतंत्रता का अधिकार मान्य है। इसी का सहारा लेकर ईसाई मिशन धर्मपरिवर्तन का धंधा चलाने की चालबाजी करते रहे हैं। **१९६८ में मध्यप्रदेश में धर्म स्वतंत्रता अधिनियम बनाये जाने पर ईसाई मिशनों ने न्यायपालिका के द्वार खटखटाए**

थे। क्रमगत अग्रसर होते हुए यह प्रश्न भारत के सर्वोच्च न्यायालय में जब पहुंचा तब १७ जनवरी १९७७ को संविधान पीठ की ओर से मुख्य न्यायाधीश श्री राय ने उद्घोषित किया था कि "भारत के संविधान के अनुच्छेद २५ (१) के अनुसार अन्य को अपने धर्म में परिवर्तित करना बुनियादी अधिकार नहीं है। केवल मान्यताओं व शिक्षाओं द्वारा अपने धर्म को संचारित या प्रसारित करने का अधिकार है।" इस प्रकार भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट शब्दों में धर्म परिवर्तन कराना ही असंवैधानिक ठहरा दिया। न्यायालिका ने माना कि धर्म परिवर्तन कराना अन्य व्यक्ति के अनतःकरण की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप है और चूंकि अन्तःकरण की स्वतंत्रता भारत के समवेत नागरिकों को प्रत्याभूत है अतः एक को धर्म परिवर्तन कराने की स्वतंत्रता देना, दूसरे के अन्तःकरण की स्वतंत्रता पर ठेस पहुंचाना है।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इतने स्पष्ट शब्दों में व्याख्या करने के बाद ईसाई मिशनों को चाहिए था कि वे अशिक्षित भोले-भाले आदिवासियों के धर्मपरिवर्तन के अपने कुचक्र को चलाना बंद कर देते। पर दुर्भाग्य से उन्होंने ऐसा नहीं किया। पाश्चात्य किताबी मजहब फिर वह इस्लाम हो या ईसाइयत उनका एक दुराग्रह रहा है कि विश्व के सभी पंथ और उपासना पद्धतियां समान नहीं हैं। उनका अपना मत सर्वश्रेष्ठ है और उसमें भी सभी संप्रदाय समान नहीं हैं। इस्लामी मत के संदर्भ में यह बात तो पूर्व से ख्यात थी पर ईसाई मत के संदर्भ में इसी प्रकार की उद्घोषणा **वर्तमान पोप ने ही की और उन्होंने मात्र ईसाई मत को ही श्रेष्ठ नहीं बताया बल्कि ईसाईयों में भी केवल कैथोलिक मत एवं वेटिकन का प्रभुत्व मानने वाले, मतलब रोमन कैथोलिक ईसाईयों मात्र को ईश्वर से मुक्ति का वरदान होने का फतवा दे डाला।**

अजीत जोगी की विवशता

भारत के बिशपों से संवाद करते हुए पोप एक धर्मगुरु अवश्य थे पर साथ ही जिस वेटिकन में यह संवाद चल रहा था उस राष्ट्र, राज्य के वे प्रमुख भी थे। इसीलिए कहना होगा कि उन्होंने अपने दायित्वों और मर्यादाओं का ध्यान नहीं रखा। एक तो **भारत की विधायिका और न्यायपालिका के प्रति आपत्ति करने का किसी विदेशी को कोई अधिकार ही नहीं है फिर भी पोप को याने वेटिकन राष्ट्र प्रमुख को कोई शिकायत थी तो उन्हें चाहिए था कि राजनयिक विधि का अनुसरण करते हुए वे भारत शासन से संवाद करते।** श्री अजीत जोगी वर्तमान में छत्तीसगढ़ प्रान्त के मुख्यमंत्री हैं। ढाई वर्ष पूर्व छत्तीसगढ़ का क्षेत्र मध्यप्रदेश का एक भाग था और वहां मध्यप्रदेश के सारे कानून-विधि विधान लागू होते थे। उक्त भाग मध्यप्रदेश से पृथक किये जाने के अनंतर वैधानिक व्यवस्थाओं के अनुसार मध्यप्रदेश के लगभग पांच हजार अधिनियम नवनिर्मित छत्तीसगढ़ शासन ने स्वीकार कर लागू किये। जोगी एक राजनीतिक खिलाड़ी के रूप में ख्यात हैं तो ईसाई मिशनों के माध्यम से हिन्दू आदिवासियों का धर्मपरिवर्तन करने के भी उन पर आरोप लगते रहे हैं। जोगी को यदि कोई टक्कर दे रहे हैं तो वह हैं वनवासी कल्याण आश्रम के श्री दिलीपसिंह जूदेव केन्द्रीय पर्यावरण एवं वनमंत्री। जोगी मात्र एक चतुर राजनेता ही नहीं तो चतुर प्रशासक रह चुके हैं। वे इन्दौर में कलेक्टर रहे हैं। नौकरी का परित्याग कर वे राजनीति के अखाड़े में कूदे। **कहा जाता है कि जोगी जी ने भरसक कोशिश की कि १९६८ में लागू मध्यप्रदेश स्वातंत्र्य अधिनियम जो अंततः १७ जनवरी १९७७ को सर्वोच्च न्यायालय की अग्निपरीक्षा में भी खरा उतर चुका है, छत्तीसगढ़ में लागू नहीं हो। पर कुर्सी का समुचित ध्यान रखते हुए उन्होंने २७ अक्टूबर २००२ को उक्त अधिनियम को छत्तीसगढ़ में प्रभावी कर दिया।** मतलब न चाहते हुए भी उन्हें अपने ईसाई मिशनों की नाक में नकेल डालनी पड़ी। स्पष्ट है कि आज भी जनमत ईसाई मिशनों की धर्मान्तरण कारगुजारियों को कतई पसंद नहीं करता और उसे रोकने के लिए धर्म स्वातंत्र्य अधिनियमों को चाहता है।

धर्म स्वातंत्र्य विधेयक वर्तमान में कुछ प्रदेशों में है। वस्तुतः उसका केन्द्रीय स्तर पर पारित होना आवश्यक था। श्री ओमप्रकाश त्यागीजी ने भरपूर प्रयत्न किये। जनता शासनकाल में १९७२ में ततकालीन प्रधानमंत्री ने अपनी अरूणाचल यात्रा में केन्द्रीय स्तर पर वैसा आश्वासन भी दिया था। पर कहना होगा कि हिन्दू-हिन्दुत्व की लहर पर सवार होकर सत्तासिंहासन पर आसीन होनेवाली भाजपा ने सरासर धोखा दिया। भाजपानीति सरकार पोप के मर्यादातिक्रमण पर आज मौन साधे बैठी है। वस्तुतः उसे पोप के पास एक कड़ा विरोध-पत्र तो भेजना ही चाहिए था। जिन संगठनों के बल पर भाजपा सत्ता तक पहुंचती रही है वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् पोप के फतवे पर वक्तव्य देने से आगे नहीं बढ़ सके। छोटी-मोटी बातों पर धरना-प्रदर्शन पुतला फूंकने की राजनीति करनेवालों को चाहिए कि संसद पर उग्र प्रदर्शन कर पोप का विरोध करें और सरकार को इस विषय में कठोर पग उठाने को बाध्य करें।

संपादक "हिन्दू अस्मिता" नन्दनगर, मेन रोड, इन्दौर

खजाना अक्ल का

बहुत साल पहले की बात है। चारों ओर भीषण अकाल फैला हुआ था, लोग भूख-प्यास से दम तोड़ रहे थे। इन हालातों में एक इलाके के सरदार ने कबीले के निवासियों को एक ऐसी जगह ले जाने का फैसला किया, जहां पशुओं को चरानेके लिए हरे-भरे चरागाह थे, हालांकि वह जगह कबीले से बहुत दूर थी।

सरदार ने लोगों को तुरन्त ही सफर शुरू करने का हुक्म दिया, साथ ही यह हिदायत भी दी किबूढ़ों को साथ न लिया जाए ताकि उस लम्बे सफर में वे उन पर बोझ न बनें। कुछ लोगों ने जब इस हिदायत का विरोध किया तो अन्ततः सरदार ने चेतावनी दे डाली कि जो भी उसका हुक्म नहीं मानेंगे, उन्हें मौत की सजा दी जाएगी।

मन मारकर सबने सरदार का हुक्म मान लिया, पर एक नौजवान अपने बूढ़े बीमार पिता को यों ही मरने के लिए पीछे छोड़ने की हिम्मत नहीं कर सका। उसने चुपचाप अपने पिता को एक बोरे में बंद किया और अपने बाकी सामान के साथ उसे घोड़े पर रखकर काफिले केसाथ चल पड़ा। रात होने पर जहां कहीं भी पड़ाव होता, वह नौजवान अन्य लोगों से कुछ दूर एक तरफ ही अपना डेरा लगाता ताकि उसका पिता बोरे में से निकलकर अपने अकड़े हुए अंगों को फैलाकर कुछ देर आराम कर सके। कुछ दिनों बाद काफिला पहुंचा एक झील के किनारे। जब वे लोग झील में नहाने-धोने और पानी लेने केलिए गए तो देखा कि झील की गहराई में सोने का एक प्याला चमक रहा है। सरदार ने अगले ही क्षण प्याला निकालकर लाने का हुक्म दिया। प्याला निकालने के लिए भीतर गोता लगाना कुल मिलाकर जान से हाथ धोने वाली बात थी। कोई भी गोता लगाने का साहस नहीं कर पाया, पर आखिर सरदार का हुक्म जो था। उसे टालना यों भी मौत को बुलावा देना था।

एक-एक करके कई आदमी झील में गए और बाहर नहीं आए। फिर उस नौजवान की बारी आई। नौजवान ने सोचा कि मरने से पहले आखिरी बार अपने बूढ़े पिता से मिल लिया जाए। सो किसी बहाने से वह अपने पिता के पास गया और उन्हें सारी बात सुनाई। पिता ने ध्यान से कुछ क्षण झील की ओर देखा और फिर अपने बेटे से कहा, 'चिंता की कोई बात नहीं है, तुम्हें गोता लगाने की जरूरत ही नहीं। प्याला झील में नहीं है, झील के किनारे यह जो ऊंची पहाड़ी है, प्याला उसी की चोटी पर है। झील में केवल उसकी परछाई नजर आ रही है।' फिर क्या था, नौजवान पहाड़ी पर चढ़ा और मिनटों में प्याला ले आया। सरदार खुश होकर बोला, 'शाबाश! तुम्हें इसके लिए इनाम दिया जाएगा।' तभी वह चौंका—'लेकिन यह क्या, तुम्हारे कपड़े तो बिलकुल सूखे हैं? इसका मतलब है कि तुमने गोता लगाया ही नहीं। फिर यह प्याला कैसे ले आए? क्या कोई जादू कर दिखाया है तुमने?' नौजवान ने पहाड़ी और परछाई वाली सारी दास्तान कह सुनाई। सरदार ने उसकी अक्ल की दाद देते हुए उसकी पीठ ठोकी। सुबह हुई, काफिला आगे बढ़ा। कई दिन चलने के बाद लोगों ने देखा कि सामने लंबा-चौड़ा रेगिस्तान फैला हुआ है। आसपास कहीं भी पानी का निशान तक नहीं है। सरदार ने सभी लोगों को पानी की तलाश में चारों ओर जाने का आदेश दिया। लोग गए और निराश होकर लौट आए, पानी किसी को भी नहीं मिला। उस नौजवान ने यह सब देखा तो उसने अपने पिता के पास जाकर सारी बात बताई। पिता ने कहा, 'ऐसा करो, एकजवान गाय को खुला छोड़ दो। वह धरती को सूंघती हुई जिस जगह रुक जाए, उस जगह की खुदाई करो, वहां पानी जरूर मिलेगा।'

नौजवान ने ऐसा ही किया। एक गाय को खुला छोड़कर वह उसके पीछे चल पड़ा। गाय अपना सिर झुकाए इधर-उधर घूमने लगी। आखिर वह एकस्थान पर रुक कर धरती को सूंघती हुई जोर-जोर से सांस लेने लगी। नौजवान कुछ लोगों को वहां ले गया और वहां उनसे खुदाई करने को कहा। जमीन खोदते ही वहां से जल का फव्वारा फूट पड़ा। सरदार ने एक बार फिर नौजवान की प्रशंसा करते हुए कहा, 'अगर तुम नहीं होते तो आज हम सब प्यासे मर जाते। बोलो, इसके लिए तुम्हें क्या इनाम दिया जाए?'

नौजवान ने अपने दोनों हाथ जोड़कर सरदार से कहा, 'मालिक अक्ल के जिस खजाने की आप क़द्र करते हैं, मैं इतना ही चाहता हूं कि आप उसे ठुकराएं नहीं।'

सरदार ने कहा, 'ठुकराने की तो बात ही कहां है बच्चे, हम तो उसे गले से लगाने के लिए तैयार हैं।'

'तो जरा ठहरिए।' नौजवान तुरंत अपने डेरे की ओर चल दिया और कुछ ही देर में अपने बूढ़े पिता के साथ वह पुनः सरदार के सामने हाजिर हो गया। सब लोग चकित रह गए, सरदार भी आंखें फाड़े उन दोनों को देखने लगा। इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, नौजवान ने अपने पिता को आगे करते हुए कहा, 'यही है वह अक्ल का खजाना, सरदार! जिसे आप पीछे छोड़ आना चाहते थे। परन्तु मैंने अपनी जान की परवाह न करते हुए जिसे अपने साथ लाने का दुस्साहस किया। आप देख ही रहे हैं मालिक, मेरे पिता की अक्ल की बदौलत ही आज आप और हम सब जीवित हैं।' सरदार ने नौजवान और उसके पिता को गले से लगा लिया और गद्‌गद् होते हुए कहा—'एकको अक्ल और दूसरे के साहस की, मुझे और मेरे कबीले को हमेशा जरूरत रहेगी।'

—अरविन्द जैन

बालक शिवाजी की गोभक्ति

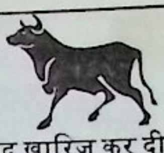

एक समय पुनः शिवाजी, जब वह १६ वर्ष के बालक थे, अपने पिता राजा शाहाजी के दर्शन के लिये पूना से बीजापुर गये। वहां पहुँचने पर राजा शाहाजी ने अपने पुत्र से शाही दरबार में चलने को कहा। शिवाजी बोले—पिताजी ! हम लोग हिन्दू हैं। इस राज्य के मार्गों पर आते-जाते हमारी आंखों के सामने गोमाता काटी जाती है। गोमांस का विक्रय होता है। यह घृणित दृश्य देखकर मेरा मन क्षुब्ध हो जाता है और जी चाहता है कि गो-हत्यारे की गर्दन उड़ा दें। हम क्षत्रिय जीते हुए यह गो-हत्या का दृश्य देखते हैं, इससे तो मरना अच्छा ! धिक्कार है हमारी क्षत्रियता को !! गो-वधिकों पर तत्काल शासन करना अथवा गोप्राण-रक्षण में आत्मार्पण करना-इन दो में से एक अवश्य होना चाहिये, किन्तु ऐसा करने में मुझे आपकी अप्रसन्नता का डर है, नहीं तो कसाई को देखते ही मैं उसका सिर उड़ा देता।

बालक शिवाजी के सच्चे हिन्दू अन्तःकरण की यह व्यथा सुल्तानपुर बीजापुर के कानों तक पहुंची। सुल्तान उस तेजस्वी बालक को देखने के लिए उत्सुक हुए। इसलिये उन्होंने कसाइयों को आज्ञा दी कि 'गोहत्या तथा मांस-विक्री का सब व्यापार शहर से दूर एक अलग मुहल्ले में हो। इसके विरूद्ध बर्ताव करने वाले अपराधी समझे जाएंगे।' इतना हो जाने पर शिवाजी अपने पिता केसाथ दरबार में जाने लगे।

सुल्तान ने यह हुक्म निकाल दिया था किन्तु कसाइयों ने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया। हुक्म तोड़ने वाले कुछ निकल आये। यह देखकर शिवाजी ने दरबार में आना-जाना फिर बंद कर दिया। पूछताछ होने पर शिवाजी ने सुल्तान को कारण बता दिया। इस पर सुल्तान ने दूसरा कड़ा हुक्म निकाला—'कसाई और कलालों की सब दुकानें शहर के दक्षिण एक कोस की दूरी पर होनी चाहिएं। यदि कोई बेचने वाला इस हुक्म को तोड़कर शहर में गोमांस या दारू बेचने आयेगा और उसे कोई हिन्दू मार देगा तो वह हिन्दू अपराधी नहीं समझा जाएगा और उसे किसी प्रकार का दण्ड नहीं मिलेगा।'

इतनी कड़ी आज्ञा होने पर भी एक दिन एक कसाई अभिमान और हठवश शहर में गोमांस बेचने के लिये आया। उसके पास ताजा मांस तैयार करने के लिए एक गाय भी थी। कहीं शिवाजी की दृष्टि उस पर पड़ गयी। देखते ही उन्होंने उस कसाई का सर तलवार से उड़ा दिया। जब मृत कसाई के रिश्तेदारों ने सुल्तान के सामने इस मामले को पेश किया तब पहले कसाई का ही गुनाह समझकर सुल्तान ने उसकी फरियाद खारिज कर दी और एक बार फिर कसाइयों को शहर में मांस बेचने से मना कर दिया गया। (साभार गोसम्पदा, जून २००३ से)

जीवन कलश

□ विजय गुप्त

जीवन कलश ज्ञान से भर दीजिए,
हे ईश, कल्याण इतना कर दीजिए,
तेरे सत्य को देखूँ वो नजर दीजिए,
तेरी महिमा को गाऊँ वो स्वर दीजिए॥ १ ॥
मेरा तन तेरी तान की वीणा बने,
हर शब्द इक अनमोल नगीना बने,
हर बूंद में चमक हो तेरे रूप की,
हे प्रभो हमारा ऐसा पसीना बने।
प्रेम से दूं दस्तक, झुकाऊँ मस्तक,
कोई तो अपना दर दीजिए,
तेरी महिमा को गाऊँ वो स्वर दीजिए॥ २ ॥
छेद ही छेद हैं हमारे तनों में,
भेद ही भेद हैं हमारे मनों में,
अपार शक्ति तेरी सिमटी हुई,
बिखरे-बिखरे इन धूल कणों में,
मुझको बांसुरी बना अधर अपने लगा,
उपकार प्रभो इतना कर दीजिए,
तेरी महिमा को गाऊँ वो स्वर दीजिए॥ ३ ॥
कहानी लिखी हुई बादलों में तेरी,
ताल हमने सुनी बिजलियों में तेरी,
फूल मुस्कान बिखरे तेरे प्यार के,
सुगंध सिमटी हुई कलियों में तेरी,
मुझको ढोलक बना, ताल अपनी लगा,
स्वर मेरा आप मधुर कीजिए,
तेरी महिमा को गाऊँ वो स्वर दीजिए॥ ४ ॥
वेदों में तेरा प्रकाश है,
उपनिषदों में तेरा ही विश्वास है,
जो भी ग्रन्थ उठाऊँ सदज्ञान से,
उनमें तेरी ही लय आज है,
मुझको घुंघरू बना, पांव अपने सजा,
चाहे ठोकर लगा, ताल अपनी दीजिए,
तेरी महिमा को गाऊँ वो स्वर दीजिए॥ ५ ॥

एफ-१/१३३, मदनगीर, डॉ. अम्बेडकर नगर, नई दिल्ली-६२

आम का खट्टा अचार

सामग्री : कच्चे आम के टुकड़े १ किलोग्राम, तिल का तेल १ कप, राई दाल १/२ टेबलस्पून, हल्दी पाउडर १ टेबलस्पून, लाल मिर्च पाउडर १ टेबलस्पून, नमक १२५ ग्राम, हींग पाउडर १/४ टी स्पून, तिल १ टेबलस्पून, मेथीदाना १ टी स्पून

विधि : १. आम के टुकड़ों को अच्छी तरह कपड़े से पोंछ लें।

२. तिल को सूखा भून लें और दरदरा पाउडर बना लें।

३. एक टेबलस्पून तेल कड़ाही में डालें और हींग और मेथीदाने को हल्की आँच पर तलें, ठंडाक रें और पाउडर बनाएं।

४. बाकी बचे सारे तेल को कड़ाही में डालें आर धुंआँ आने तक गर्म करें और फिर पूरी तरह ठंडा करें।

५. अब तेल में नमक, हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, राई दाल, तिल का पाउडर, हींग और मेथीदाने का पाउडर मिलाएँ और साथ में आम केटुकड़े भी डाल दें।

६. अचार को अच्छी तरह मिलाकर काँच के जार में रखें। यह अचार १० दिन में खाने के लिए तैयार हो जाएगा।

पंजाबी स्टाइल आम का खट्टा अचार

सामग्री : आम के छोटे टुकड़े २ किलोग्राम, नमक २२५ ग्राम, मोटी वाली सौंफ १०० ग्राम, मेथी दाना ५० ग्राम, कलौंजी २० ग्राम, हल्दी पाउडर ५० ग्राम, लाल मिर्च पाउडर ५० ग्राम, सरसों का तेल ४०० ग्राम।

विधि : १. सौंफ और मेथीदाने को थोड़ा ऐसे ही हल्की आँच पर भून लें और थोड़ा मोटा ही पीस लें।

२. २०० ग्राम सरसों के तेल में नमक, हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, कलौंजी, दरदरा सौंफ और मेथीदाने का पाउडर मिलाएँ और साथ में आम के टुकड़े डालकर अच्छी तरह मिलाएँ और काँच के जार में भर दें। ऊपर से बचा हुआ २०० ग्राम तेल भी डाल दें।

३. अचार के जार को ७-८ दिन धूम लगवाएँ। ध्यान रहे कि तेल अचार की तह से ऊपर आना चाहिए और बीच बीच में अचार को हिलाते जाएँ। १५ दिन में यह अचार खाने के लिए तैयार हो जाएगा। —**राज अग्रवाल**

अचार को खराब होने से बचाएँ

'क्या करूँ बहिन, मेरा अचार खराब हो गया!' ऐसा पड़ोस की महिलाओं तथा गृहिणियों से अक्सर सुनने को मिल ही जाता है।

अचार खराब हो गया है, इसका पता ऐसे चलता है— अचार की सुगन्ध में परिवर्तन आ जाए या सड़ान्ध आए, अचार पर फफूंद, कालापन या स्वाद खराब होना आदि।

अचार इन कारणों से खराब होते हैं

★ अचार डालते समय अच्छे किस्म के फल-सब्जी न हों या उनमें कुछ फल-सब्जी गले—सड़े या चोट खाए या बहुत घटिया किस्म के हों!

★ अचार डालने में सफाई न बरती गई हो। जैसे—फल-सब्जी पूरी तरह धोए न गए हों, हाथ या बर्तन गंदे इस्तेमाल किए गए हों।

★ मसाले मिलावटी हों या घटिया किस्म के हों। तेल, नमक, सिरका आदि परिरक्षी सही परिणाम में न डाले हों।

★ अचार उघड़े रखे हों या उनमें गंदे हाथ या झूठे चम्मच, कलछी आदि डाल दिए जाएँ। वरसात के मौसम में खुला रखा जाए या एक बार निकाला गया अचार दोबारा उसी बर्तन में डाल दिया जाए।

★ मसाले ज्यादा भून देने से या अधिक सिरका डाल देने से अचार का रंग काला पड़ जाता है।

★ घटिया किस्म के फल-सब्जी के कारण अचार का रंग फीका पड़ जाता है।

★ तेल शुद्ध और साफ न हो।

★ अचार में तेज सिरका, ज्यादा पकाए गए मसाले डालने से अचार का स्वाद कड़वा हो जाता है।

★ अतः अचार डालने और रखने में पूरी सफाई और सही विधि बरतें। अचार के उपयोग केसमय अचार निकालने में सावधानी और सफाई की जरूरत है। अचार जरूरत भर ही निकालें और निकाले गए अचार को वापिस मर्तबान में न डालें।

★ अचार में हाथ कभी न डालें। साफ और सूखी कलछी और चम्मच से ही अचार निकालें। यदि अचार में ऊपर फफूंद दिखाई दे तो उसे हटाकर जरा सा नमक फैला दें और तेल डाल दें। अचार तेल में डूबा रहना चाहिए। कभी-कभी आम आदि के अचार को धूप में रख देना चाहिए।

★ बरसात के मौसम में अचार का खासतौर पर ध्यान रखें। मर्तबान आदि का मुँह कपड़े से बाँध देना चाहिए और अचार को सप्ताह में एक-दो बार हिला देना चाहिए।

इस सब बातों पर अमल करके अचार खराब होने से बचाया जा सकता है। —**सुशीला सिंघवी**

प्रेरक प्रसंग

शहीद का अंतिम संदेश

❒ शिवकुमार गोयल

चटगाँव (पूर्वी बंगाल) के महान क्रांतिकारी मास्टर सूर्यसेन वर्षों तक शिक्षक रहे थे। वे छात्रों को अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के यज्ञ में आहुतियाँ देने की प्रेरणा दिया करते थे।

'चटगाँव-विद्रोह काण्ड' में गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया गया। उन्हें फांसी की सजा दी गई। फांसी दिए जाने से एक दिन पूर्व उनका एक मित्र भेंट करने आया ओर अंतिम सन्देश देने को कहा। मास्टर सूर्यसेन बोले 'प्रियवर, मृत्यु मेरे द्वार पर दस्तक दे रही है। मैं आज अत्यन्त सन्तुष्ट हूँ कि कल सबेरे मातृभूमि की स्वाधीनता के यज्ञ में प्राणों की छोटी सी आहुति देकर पुत्र-धर्म का पालन करने जा रहा हूँ।'

उन्होंने कुछ देर रुक कर कहा 'मेरा अंतिम संदेश यही है कि प्रत्येक देशवासी मातृभूमि की स्वाधीनता के यज्ञ में आहुति देने को तत्पर रहे।'

तीनों पुष्प समर्पित

श्री विनायक दामोदर सावरकर को सन् १९१० में लन्दन में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र रचने तथा हिन्दुस्तानी युवकों को अंग्रेजों की हत्या के लिए प्रेरित करने जैसे आरोप लगाकर वहाँ की जेल में बन्द कर दिया गया था। इधर हिन्दुस्तान में उनके बड़े भ्राता गणेश सावरकर तथा छोटे भ्राता नारायण सावरकर को भी जेल में डाल दिया गया था।

सावरकर बाल्यावस्था में ही काव्य-रचना करने लगे थे। तीनों भाइयों की मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए की गई गिरफ्तारी ने उन्हें छन्द रचने को प्रेरित किया। उन्होंने लिखा 'उसी पुष्प का जीवन सार्थक होता है जो देवता के चरणों में अर्पित कर दिया जाता है। गजेन्द्र की सूंड़ से भगवान् को अर्पित पुष्प जिस प्रकार अमर हो गए उसी प्रकार सावरकर वंश के हम तीनों पुष्प (भाई) मातृभूमि के चरणों में अर्पित होकर अपने वंश को सार्थक मानते हैं।'

सावरकर जी ने एक अन्य 'मृत्यु-पत्र' कविता में लिखा था—'मातृभूमि, तेरे कार्य में संलग्नता मुझे ईश्वर की, धर्म (न्याय) की साक्षात् सेवा की अनुभूति कराती है। मातृभूमि की स्वाधीनता के कार्य को मैं उसके प्रत्येक पुत्र का सर्वोपरि धर्म मानता हूँ। यदि हम तीनों भाई इस कार्य के लिए प्राणोत्सर्ग भी कर सके तो मैं अपने वंश की पूर्ण सार्थकता मानूंगा।'

साथ तुम्हारे देश खड़ा है

बढ़े चलो तुम वीर जवानो, साथ तुम्हारे देश खड़ा है।
अपनी फौलादी हिम्मत से, रुख तूफानों का भी मोड़ा॥
दुश्मन का हर चक्र-व्यूह तुमने रण-कौशल से तोड़ा॥
कर दिया सिद्ध फिर एकबार, सचमुच इस जग में लासानी।
पीछे मुड़कर देखा न कभी, आगे बढ़कर दी कुर्बानी॥
दुश्मन कैसे फिर टिके, कैसे न विजय रण में होती।
तुम में से जब हर एक वीर, बन महाकाल, रण बीच लड़ा है॥
आशीष भेजती माताएँ, बहनें चाहें, हो शीघ्र विजय।
पत्नियाँ यही बस मना रहीं, लौटे सुहाग पा करके जय॥
भारत माता का रोम-रोम, निज स्नेह लुटाता है तुम पर।
तुम पर न कोई आँच आए, बस यही कामना है घर-घर॥
सब की किस्मत में लिखा नहीं, माटी का कर्ज़ चुका जाए।
कर सके गर्व भारत माता, वह कार्य अनूठा कर जाए॥
रण बीच जूझने से बढ़कर, क्या होते वीरों के सपने?
निज रक्त-कणों की स्याही से, कर दो तुम हस्ताक्षर अपने॥
इस समय देश संकट में है, बाकी बातें हैं बेमानी।
दुश्मन को धूल चटानी है, देकर हर संभव कुर्बानी॥
जितने भी अलग-अलग दल हैं, उनसे इतना ही कहना है।
यह राजनीति का समय नहीं, इस समय एकजुट रहना है॥
इन आपस के झगड़ों को हम फुर्सत में मिल सुलझा लेंगे।
समय नहीं मतभेदों का, अभी मोड़ पर देश खड़ा है॥

—शशिकांत

बाल कविता

गुलाब

❒ अखिलेश 'आर्येन्दु'

सब में न्यारा, प्यारा-प्यारा
काँटों में हँसता दिन सारा
सब के दिल को लगता प्यारा
न्यारा-प्यारा गुलाब,
कितना अद्‌भुत इसका जीवन
काँटों में हँसकर देता सुगन्ध,
यह फूलों का राजा है, दिखने में नित ताजा है
घर, उपवन, वन इससे महकें, बच्चे बूढ़े पाकर चहकें
इससे इत्र बने निराला, महकाता है महफिल सारा
तुम भी गुलाब-सा बन जाओ, संघर्षों से न घबराओ।

६/९०, पश्चिम फ्रेन्ड्स इन्क्लेव, सुल्तानपुरी मार्ग,
नांगलोई, दिल्ली–४१

कौन है देश विभाजन का अपराधी? वीर सावरकर थे या सैक्युलरवादी

❑ श्री ओमप्रकाश

पिछले दिनों उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवानी ने वीर सावरकर के नाम पर अंदमान द्वीप के हवाई अड्डे का नामकरण क्या किया तभी से सेक्युलरवादी देशभक्तों तथा कम्युनिस्टों की छाती पर सांप लोट रहा था। तदनन्तर नई देहली के लोदी रोड पार्क में उन्हीं अद्वितीय क्रान्तिकारी की मानवाकार प्रतिमा का उद्घाटन हुआ। वह उनके लिए अधिक विषाद का कारण बन गया। उसके कुछ दिन बाद ही लोकसभा में उसी नरपंगुव, हिन्दू संगठक तथा हिन्दु राष्ट्रवाद की गुरु गंभीर गर्जना करने वाले स्वातन्त्र्य वीर सावरकर का मनोहर चित्र लोकसभा अध्यक्ष श्रीयुत मनोहर जोशी की प्रेरणा से क्या लगा कि तथाकथित अखण्ड भारत के नकली पक्षधरों तथा सैक्युलरवादियों की आंखों में किसी ने मिर्च सी भर दी। तभी से समाचारपत्रों द्वारा ये लोग शोर मचाते रहे लेकिन अब परिस्थिति यह हो गई है कि ये तो कम्बल को छोड़ दें पर कम्बल इन्हें नहीं छोड़ रहा। शायद इन्होंने सोचा हो कि अब सावरकर तो प्रत्युतर देने के लिये हैं नहीं अतः जैसे चाहो उन्हें बदनाम करो। जो बातें उनके जीवित रहते न उछाली गईं वह अब धड़ल्ले से प्रचारित की जा रही हैं। पर सावरकर जी न रहे हैं तो क्या उनकी विचारधारा तो प्रचारित और प्रसारित हो रही है। यही तथ्य इनसे रतजगा करा रहा है। आज भारत माँ के अंगभंग के लिये अंग्रेजों, जिन्ना, मुसलमानों तथा स्वयं को उत्तरदायी न मानते हुए सावरकर को पानी पी-पीकर कोस रहे हैं। सावरकर जी के विषय में अब तक जो कुछ अंग्रेजी तथा तथाकथित राष्ट्रवादी माध्यम में लिखा गया है उसका समुचित तथा सम्पुष्ट उत्तर दिया जा चुका है फिर भी कुछ बातें हैं जो आजकी पीढ़ी को बतानी आवश्यक हैं ताकि उन्हें सही-सही मार्गदर्शन मिल सके। आज के देशभक्तों की समस्या सावरकर नहीं बल्कि उनकी विचारधारा है।

यह प्रकट सत्य है कि कांग्रेस की स्थापना एक अंग्रेज श्री ह्यूम ने विशेष उद्देश्य से की थी और वह तथ्य उसने छिपाया भी नहीं। भारतीयों का स्वतंत्रता संघर्ष कहीं फिर से हिंसात्मक न हो जाए और हिन्दू मुस्लिम एकता जो १८५७ की क्रांति द्वारा प्रकट हुई थी वह सुदृढ़ न हो जाए। यही लक्ष्य उसका तथा समस्त अंग्रेजी राज्य के पक्षधरों का था। कांग्रेस उसके लिये एक सुरक्षा यंत्र थी। इसीलिये उन्नसवीं शताब्दी के आखरी दशक में मुसलमानों के लिये विशेष प्रेम तथा लगाव प्रदर्शन करना आरम्भ कर दिया। सबसे प्रथम उन्होंने बंगाल प्रान्त के विभाजन की प्रक्रिया आरम्भ की। इससे पहले एक भी मुस्लिम बहुमत का प्रान्त नहीं था पर बंगाल के हिन्दुत्वनिष्ठ क्रांतिकारियों ने अपने उत्कृष्ट साहस और बलिदान से उनका वह प्रयास निष्फल कर दिया। पर अंग्रेज कब चुप बैठने वाले थे उन्होंने सर आगा खान के नेतृत्व में एक शिष्ट मण्डल की व्यवस्था की। जिसमें मुसलमानों को पृथक निर्वाचन प्रणाली की मांग करने के लिये उत्साहित किया (यह बात लेडी मिन्टो ने अपनी डायरी में स्पष्ट शब्दों में लिखी है।) क्योंकि यह सब मिली भगत से संभव था। अतः वह मांग मान ली गई और भारत माँ के दुःखद और अनिष्टकारी अंगभंग की प्रक्रिया चालू हो गई। क्योंकि उस समय कांग्रेस का नेतृत्व अंग्रेजों के पिट्ठुओं के हाथ से निकलकर लाल-बाल-पाल जैसे उग्र राष्ट्रवादी नेताओं के हाथों में जा रहा था। अतः इस बात पर कांग्रेस में फूट पड़ गई। क्योंकि गांधी की भूमिका अफ्रीका में अंग्रेजों के अनुकूल नहीं बैठ रही थी अतः गांधी वापिस भारत आ गए ताकि यहां आकर अपनी प्रक्रिया आरम्भ कर सकें। अहिंसा तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता यही दो बातें गांधी जी की प्रिय मार्गदर्शक थीं तथा श्री ह्यूम का भी यही लक्ष्य था। अतः गांधी जी भारत सरकार की नौका में सवार होकर देशभक्ति का उद्घोष करने लगे। यहीं उनका 'लाल, बाल, पाल' से विरोध चालू हो गया। हालांकि १९१६ के कांग्रेस लीग पैक्ट के हक में कांग्रेस में काफी विरोध था पर किसी न किसी चालाकी से गांधी जी ने उसे पारित करा लिया। अपनी अफ्रीका में शानदार भूमिका के आधार पर १० वर्ष के लिये कांग्रेस से यह पैक्ट पास करा लिया। जो बात अंग्रेजों ने १९०९ में चालू की थी उस पर १९१६ में गांधी जी ने कांग्रेस की मोहर लगवा दी। श्री एन. सी. केलकर ने यह बात अपने एक लेख में लिखी थी जो पूना के साप्ताहिक **"मराठा"** में छपी थी। गांधी जी तब तक अंग्रेज विरोधी नहीं थे तथा "ईश्वर सम्राट की रक्षा करे" की धुन पर खड़े होकर अपनी भावना प्रकट करते थे। उसी समय प्रथम विश्व युद्ध में फौजी भरती भी खूब कराई थी। उससे पहले अफ्रीका के बोअर युद्ध में

उन्होंने एक स्वयंसेवक की हैसियत से अपने को उस युद्ध से संलग्न कहा था। इससे यह पता चलता है कि तब तक गांधी जी अहिंसावादी नहीं थे। गांधी जी ने पहले १९१८-१९ की सुधार योजना का समर्थन किया था। यह वह समय था जब हमारे पथ प्रदर्शक सावरकर आदि नेताओं ने अण्डमान की भयानक जेलों में दारूण कष्ट वर्षों झेले थे। उन्होंने बैलों की जगह लगकर तेल निकाला था। मूंज बांटी थी, जिससे उनके हाथों में छाले पड़ जाते थे। बैरिस्टरी की सनद लेने के लिये भी उन्होंने अंग्रेजी सरकार की दासवृत्ति नहीं स्वीकारी ऐसे सावरकर जी देशद्रोही और गांधी जी स्वातन्त्र्य सूत्रधार बना दिये गए।

प्रथम विश्व युद्ध के समाप्त होने पर अंग्रेजों ने जब स्वतंत्रता के स्थान पर जलियांवाला बाग का "तोहफा' दिया तो गांधी की आत्मा भी कांप उठी। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये अंग्रेजों का भरोसा त्यागकर मुस्लिम पोषक नीति जो लखनऊ पैक्ट के आधार पर चालू की थी, को अपना मार्गदर्शक बना लिया पर शायद उन्हें यह पता नहीं था कि अंग्रेज कभी भी हिन्दू मुस्लिम एकता को सिरे नहीं चढ़ने देंगे। अब तो यह भी मानने वाले अनेक हैं कि खिलाफत आन्दोलन भी अंग्रेजों ने ही भारत में चलवाया था और गांधी जी उसे हर प्रकार का समर्थन दे रहे थे जबकि कांग्रेस के अधिकतर नेता उसके पक्ष में नहीं थे। खिलाफत आन्दोलन ने केवल मुसलमानों की मतान्धता तथा भारत विरोधी एवं हिन्दू विरोधी विचारधारा को ही पुष्ट किया। जिसका परिणाम मालाबार की वीभत्स मारकाट तथा मुलतान, कोहाट तथा जगह-जगह पर हिन्दू मुस्लिम दंगों के रूप में सामने आया। इसके बाद जितने भी प्रयास हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये हुए वे सब एक तरफा थे। गांधी जी एक ओर तथा सारी मुस्लिम कौम और नेता सर सैयद अहमद खां, सर आगा खां, सर मोहम्मद इकबाल (जो पाकिस्तान के विचार के जन्मदाता थे) सर फजली हुसैन, अली बन्धु, श्री रहमन अली तथा अन्त में मि. जिन्ना इत्यादि दूसरी ओर थे। गांधी जी उनके द्वार पर जाकर गिड़गिड़ाते थे और वे सब अंग्रेजों की छत्रछाया में पलते हुए उन्हें तिरस्कारपूर्वक निराश कर देते थे। १९२२ से लेकर भारत के बंटवारे (१९४७) तक की यह मूर्खतापूर्ण कहानी है जो अभी भी ताजा है। अंग्रेजों से निराश होकर गांधी जी मुसलमानों को अपनी गोद में बैठाना चाहते थे जबकि मुसलमान नेता १९०९ में ही अंग्रेजों की गोद में बैठ गये थे क्योंकि जो कुछ भी मिलना है वह अंग्रेजों से ही मिलेगा यही उनकी सोच थी। गांधी जी के पास तो केवल बातें ही बातें हैं वे यही सोचने लगे थे।

जो मुस्लिम नेता कांग्रेस में थे जैसे डॉ. अंसारी, मौलाना आजाद इत्यादि वे सब समय आने पर मुसलमानों का ही पक्ष लेकर कांग्रेस की राह के रोड़े बन जाते थे। जैसे साम्प्रदायिक निर्णय तथा संघराज्य का अत्यधिक विरोध। अगर संघराज्य बन जाता (जो कि लार्ड लिनलिथगो चाहते थे) तो पाकिस्तान की मांग अपने आप ही मर जाती। मगर गांधी जी के मन मस्तिष्क में मुस्लिम प्रतिरोध का खाना ही शायद नहीं था। इसी बात को लेकर दिव्यात्मा भाई परमानंद जी गांधी जी से सेवाग्राम आश्रम जाकर मिले थे। गांधी जी कुछ-कुछ सहमत भी हो गए थे किन्तु नेहरू जी इत्यादि की सोच अलग थी अतः एक दिन पाकिस्तान दुःखद वास्तविकता बन गया।

एक बात जो बहुत कम लोग जानते हैं क्योंकि प्रेस में उसका यथेष्ठ प्रचार-प्रसार नहीं हुआ। वह यह है कि सन् १९२२ में प्रिन्स ऑफ वेल्ज का भारत आना। सरकार चाहती थी कि उनका भव्य स्वागत हो इसके लिये जन साधारण का सहयोग आवश्यक था। अतः सर तेजबहादुर सप्रु तथा पण्डित मदनमोहन मालवीय द्वारा गांधी वायसराय भेंट करायी गई। इसमें अंग्रेजों ने भव्य स्वागत होने तथा करने पर प्रांतीय स्वराज्य देने का प्रस्ताव किया। गांधी जी राजी भी हो गये पर एक शर्त के साथ कि मोहम्मद अली और शौकत अली भाईयों को छोड़ दिया जाए। जिनपर अमीर अफगानिस्तान के साथ भारत में मुस्लिम राज्य स्थापित करने का कथित षड़यंत्र रचने का अरोप लग रहा था। नेहरू जी को भी स्थानबद्ध किया हुआ था। सरकार राजी नहीं हुई और बात असफल हो गयी। जब इस बात की चर्चा नेताओं में फैली तो अली बन्धुओं ने इस बात के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी से शिकायत की। तब स्वामी जी ने भी बुरा मनाया तो अली बंधुओं ने उस तार की प्रतिलिपि स्वामी जी को दिखाई। वह तार गांधी जी की हस्तलिपि में था। मतलब अली बंधु षड़यंत्र गांधी नेहरू की सम्मति से कर रहे थे। जब गांधी जी नहीं माने तो अंग्रेजों ने वही कार्य मुसलमानों को तोड़कर कर लिया। देश में जगह-जगह साम्प्रदायिक दंगे कराए गये तथा भारत की स्वतंत्रता की राह बदल दी गई। परिणामतः निम्न बातें अमल में आयीं।

(१) चार मुस्लिम बहुमत के प्रान्त बनाये गए ताकि सत्ता संतुलन बन सके।

(२) तैंतीस प्रतिशत मुसलमानों को केन्द्र में प्रतिनिधित्व दिया गया। जबकि हिन्दू अल्पमत वाले प्रान्तों में हिन्दुओं को ऐसी कोई रियायत नहीं दी गयी।

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

पिता—पुत्र

बचपन में जिस प्रकार पिता बालक का पोषण करते हैं, उसका रख-रखाव, देखरेख करते हैं, ठीक इसी प्रकार वृद्धावस्था में पुत्र, पिता की देखरेख और सेवा सुश्रूषा करता है।

आज हम भले ही पश्चिमी देशों की होड़ करके फादर्स डे मनाने लगे हों और पिता का महत्व देखते हुए वर्ष में एक दिन उन्हें समर्पित करने लगे हों लेकिन हमारे तो शास्त्रों में भी पिता की महत्ता का तथ्यात्मक रूप से वर्णन किया गया गया है, जिसका अनुकरण किया जाए तो पाएंगे कि हर दिन पिता का है। पिता का अर्थ है पालन करने वाला, रक्षा करने वाला। इसीलिए हम सूर्य को भी पिता कहते हैं, गुरु को भी पिता कहते हैं। वे आदरणीय हैं।

धर्मशास्त्र में यह वाक्य भी लिखा है कि **'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति'**। जिसके पुत्र नहीं है, उसकी मुक्ति नहीं है। पुत्र की परिभाषा में यह भी लिखा है कि जो 'पुन' नामक नरक से रक्षा करे, वह पुत्र है। साथ ही यह भी कह दिया गया कि **'पुत्रासौ यत्र पितरो भवन्ति'** अर्थात् पुत्र ही अपने पिता का पिता बन जाता है। बचपन में जिस प्रकार पिता बालक का पोषण करते हैं, उसका रख-रखाव, देखरेख करते हैं, ठीक इसी प्रकार वृद्धावस्था में पुत्र, पिता की देखरेख और सेवा सुश्रूषा करता है। अशक्त पिता के दैनन्दिन कार्यों में भी सहयोग करता है, तो उनके खान-पान आदि चर्याओं के सुचारु रखने का निमित्त भी होता है। मेरे गुरु जी ने मुझे बताया कि किस प्रकार अपने अशक्त पिताजी की बीमारी में १९ दिन बिना पलक झपके वे सेवा में रहे। खान-पान से लेकर मल-मूत्र त्याग तक के सभी कार्य ठीक उसी प्रकार करते थे—जैसे पिता अपने पुत्र के लिए करता है। चूंकि गुरुजी के पिता भी उच्च कोटि के साधक रहे थे, उनको अपनी इस स्थिति पर असंतोष भी था। सभी को होता है, किन्तु पुत्र की सेवा के कारण व्यक्ति नारकीय परिस्थिति से बच जाता है। शायद इसी स्थिति को 'पुन' नरक की संज्ञा शास्त्रकारों ने दी हो। इस सेवा-सुश्रूषा काल में पुत्र की भी परीक्षा होती है। उसके समक्ष भी मित्रों और परिजनों के अनेक लुभावने प्रस्ताव आते हैं। उसे सेवा छोड़ कर मौज मस्ती के लिए आमंत्रण मिलते हैं। इस माया क्षेत्र को तोड़ कर यदि वह धर्म क्षेत्र में बना रहता है, तो निश्चय ही उसे आशीर्वाद मिलता है। आशीर्वाद ही नहीं बल्कि यूं कहिए कि वरदान मिलता है। माया क्षेत्र का शिकंजा बहुत कड़ा होता है। सम्मोहन प्रक्रिया का क्षेत्र है, जहां 'मोह' 'मुहू वैचित्ये', चित्त विचलित हो जाता है। इसे जीतना भी वीरता है, धीरता है। उसे केवल भीतरी शक्तियों से ही जीता जा सकता है। आशीर्वाद में ही व्यक्ति को उन्नत करने की अभूतपूर्व शक्ति छिपी हुई है। व्यक्ति के प्राणों का उत्प्रेरण होता है, उदबृंहण होता है। नित्य आशीर्वाद से नित्य प्राणों का विकास होता है। ज्ञान का उदय होता है। श्वेतकेतु और श्रवण कुमार जैसे आदर्श पुत्रों की कथाओं से हमारे शास्त्र भरे पड़े हैं। इस परिप्रेक्ष्य में आज के वातावरण को देखा जाए, तो सब कुछ बदल रहा है। न पिता के पास बच्चे के लिए समय है, न ही उसके उत्थान में भागीदार बनने की इच्छा। वह किसी न किसी कारण से इस बोझ को उठाना ही नहीं चाहता। पुत्र भी स्वयं को पिता से जल्दी से जल्दी स्वतंत्र करना चाहता है। उसके अपने सपने हैं। वह भी आचार-संहिता के उपदेश सुनने को तैयार नहीं है। उसकी अपनी जीवन शैली ही उसे प्रिय है, जो कि विदेशी आदर्शों पर विश्वास पा चुकी है। इसको देखते हुए पिता-पुत्र का यह आत्मिक सम्बन्ध कितना आत्मिक रह पाएगा और उसका सृष्टि-क्रम में आगे क्या प्रभाव पड़ेगा, समय की गोद में है।

('मानस' पुस्तक से)

(पृष्ठ ४५ का शेष)

(३) हिन्दू रियासतों में तथाकथित सत्याग्रह चलाये गये। इस तरह वह अंग्रेज परस्त बन गये।
(४) मुस्लिम रियासतों में सत्याग्रह करने पर उनका हर प्रकार से विरोध किया गया। ताकि मुसलमानों तथा मुस्लिम रियासतों का मोर्चा बन सके।
(५) साईमन कमीशन का बहिष्कार करने पर शेरे पंजाब लाला लाजपतराय का बलिदान हुआ।
(६) पूना पैक्ट द्वारा दलितों को दुगनी सीटें दी गयीं। इससे हिन्दु अल्पमत के प्रान्तों में डॉक्टर अम्बेडकर ने हिन्दू विरोधी मोर्चा बनाया। हालांकि स्वतंत्रता मिलने के बाद डॉ. अम्बेडकर पूरे-पूरे राष्ट्रवादी बन गये थे।
(७) वायसराय की कौंसिल में हिन्दू-मुसलमानों को बराबर सीटों की पेशकश की गयी। जो जिन्ना ने नहीं मानी। जिन्ना को भारत का प्रथम प्रधानमंत्री बनाने का प्रस्ताव भी किया गया। केवल इसलिये कि जिन्ना पाकिस्तान की मांग छोड़ दे। **(शेष अगले अंग में)**

ई-११३, साकेत, नई दिल्ली

सातवां विश्व हिन्दी सम्मेलन जहां सम्पन्न हुआ सुरीनाम : घर-घर में गूंजता है वहां प्रभु का नाम

❑ रामबिहारी विश्वकर्मा

श्री विश्वकर्मा 'जनज्ञान' के पाठकों के लिए सुपरिचित नाम है। गत माह भारत से सत्रह हजार मिलोमीटर की दूरी पर स्थित सुरीनाम में सातवां विश्व हिन्दू सम्मेलन सम्पन्न हुआ। विश्वकर्मा जी भी इस सम्मेलन में सहभागी थे। सम्मेलन के समाचार तो समाचारपत्रों में प्रकाशित हुए, किन्तु जिस देश में यह आयोजन हुआ—वहां आज भी बसता है हिन्दुस्तान। उन्होंने उसकी झांकी भी सम्मेलन के साथ-साथ अपने इस लेख में प्रस्तुत की है। —सम्पादक

भारत से लगभग १७००० किलोमीटर दूर बसे सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हमारे मन में शुरू से ही कौतूहल जगा रहा था। सात समुन्दर पार जाने के बाद वहां की भूमि, वहां के लोग और वहां की भाषा तथा रीति-रिवाज कैसा होगा, इन तमाम प्रश्नों का मन में उद्धेलित होना स्वाभाविक था। परन्तु वहां हवाई अड्डे पर पहुंचते ही वर्षा की फुहारों ने हमारा स्वागत किया, और वहां के लोगों की भोजपुरी, अवधी और स्थानीय भाषा से मिश्रित वाणी ने मन में उठते तमाम प्रश्नों के उत्तर स्वतः दे दिये। उसमें वैसी ही अपनेपन की सजीवता और उल्लास के साथ-साथ भाषा की मिठास घुली हुई थी जैसी अवध प्रदेश या बिहार के पश्चिमी भाग के भोजपुरी इलाके की भाषा में होती है। यह एक सुखद संयोग ही कहा जा सकता है कि विश्व हिन्दी सम्मेलन की पूर्वसंध्या पर यानी एक दिन पहले ही ५ जून को सूरीनाम का राष्ट्रीय समारोह मनाया जा रहा था। इसी तारीख को सन् १८७३ ई. में **१३० वर्ष पहले जहाज से गिरमिटिया मजदूरों के रूप में ३९८ लोग सूरीनाम की धरती पर पहुँचाये गये थे। उनकी स्मृति में पारामारिबो में जहाज के पहुँचने के स्थान पर सूरीनाम नदी के तट पर 'बाबा-माई' की प्रतिमा स्थापित की गई है।** जिस प्रकार हमारे देश में जब भी कोई बड़ा नेता या व्यक्ति आता है तो सर्वप्रथम उसे राजघाट में गांधी जी की समाधि पर ले जाया जाता है उसी प्रकार सूरीनाम में भी परम्परा है कि किसी भी समारोह के प्रारम्भ में 'बाबा-माई' की प्रतिमा पर लोग श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए जाते हैं।

समारोह के अवसर पर एक नौका को "लालाएख" जहाज के प्रतीक केरूप में खूब सजाकर सूरीनाम नदी के तट पर लाया गया। पुरुष धोती कुर्ता और गमछा तथा स्त्रियां साड़ी की पारम्परिक पोशाक में थीं। वे लोग बाजे-गाजे केसाथ जब तट पर पहुंचे तो दर्शक भाव-विभोर हो उठे। हम लोगों को ऐसा लग रहा था कि मानो अपने ही देश में किसी स्थान पर ये सब दृश्य देख रहे हों।

वहां से जब हम लोग टैक्सी में बैठकर अपने होटल के लिए रवाना हुए तो पाया कि टैक्सी ड्राइवर महिला थी। उसने बहुत कम वस्त्र पहन रखे थे, हमने सोचा कि शायद भूमध्य रेखा के निकट के वातावरण में अत्यधिक गर्मी और आर्द्रता के कारण लोग ऐसे वस्त्र पहनते हों लेकिन बाद में यह पता चला कि यूरोप और अमरीकी संस्कृति की प्रबल हवा का यह प्रभाव था जो वहां के वातावरण को इतना उन्मुक्त बना रहा था। **टैक्सी में संगीत की मधुर धुन बज रही थी, वह पूरी तरह भारतीय थी। मूल गायक-गायिका की बजाय वहां के स्थानीय कलाकारों की आवाज में गीत रेकार्ड कर लिए गये थे। आगे एक 'टाकीज' दिखाई पड़ा, वहां आशा भोंसले का विशाल चित्र देखने को मिला। हमने जब अपने साथ के ड्राइवर से पूछा कि यहां रेडियो स्टेशन और टेलीविजन केन्द्र हैं तो उसने बताया कि हाँ, यहां 'आकाशवाणी' केन्द्र और 'दूरदर्शन' केन्द्र हैं।** हमें सुखद आश्चर्य हुआ। यहां के लोगों का संगीत प्रेम और फिल्म प्रेम इतना अधिक देखने को मिला कि वे भारतीय फिल्मी कलाकारों और संगीतकारों के नाम से पूरी तरह परिचित लगे। उनकी बातचीत के लहजे में अवधी, भोजपुरी और डच भाषा के शब्दों की अनुगूँज सुनने को मिलती थी।

सूरीनाम बालाएं चटख-शोख रंगों वाले वस्त्र पहनती हैं लेकिन उनसे उनका ताम्बई रंग और आकर्षक रूप कलात्मक ढंग से प्रदर्शित होता है। सूरीनाम में अनाथालयों की अधिक संख्या के बारे में पूछने पर पता चला कि ऐसा उन्मुक्त और स्वच्छन्द माहौल के कारण हुआ है। कई स्थानों पर देखा गया कि लोग भारतीय संगीत की धुनों पर थिरक रहे हैं। फिल्म प्रेमी और संगीत प्रेमी होने के

साथ-साथ वे लोग अब कत्थक नृत्य की ओर भी उन्मुख हो रहे हैं। अधिकतर युवतियां अपने वदन के तमाम हिस्सों में 'गोदना' गुदवाती हैं। सम्भवतः यह शौक मूल निवासियों और नीग्रो लोगों से आया है। **मेंहदी का शौक यहां अन्य लोगों की तुलना में अधिक है। भूरे, रूपहले और सुनहले रंगों के स्थान पर यहां लाल, गुलाबी, नीले और रानी रंगों की मेंहदी रचाने का शौक बहुत अजीबोगरीब लगता है।** यहां काफी, और कोक जैसे पेय पदार्थों का प्रचलन है। किसी के भी घर मेहमान के रूप में पहुंचने पर आपका इन्हीं पेय पदार्थों से प्रायः स्वागत किया जाता है।

विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर समूचे देश में समारोह जैसा माहौल छा रहा था। दुनिया के तमाम भागों से लेखक, साहित्यकार, पत्रकार और मीडिया से सम्बद्ध अनेक लोगों के पहुंचने से सूरीनाम में समूचा वातावरण हिन्दीमय हो रहा था जहां विश्व के अस्सी करोड़ से अधिक हिन्दी भाषियों के प्रतिनिधियों के सुर मिल रहे हों, वहां इस तरह का उल्लासमय वातावरण होना स्वाभाविक ही था। **सुरीनाम यों तो भारत से हजारों किलोमीटर की दूरी पर वसा हुआ है परन्तु वहां बसे भारतवंशियों के हृदय के तार उनके पूर्वजों की भूमि के लोगों की हृत्तंभी से ही झंकृत हो रहे हैं।** जब वे जहाज से वहां उतरे थे तो उनकेसाथ थे गुटका रामायण (तुलसीकृत रामचरितमानस) और हनुमान चालीसा। कुछ लोगों के पास गीता कबीर और मीरा के भजन भी थे। इन्हीं पुस्तकों को अपने दिल में संजोये हुए भारतवंशियों ने अपनी धरोहर की रक्षा की। अभी तक उन लोगों के मन और वाणी में रामायण की चौपाई और दोहे, कबीर और मीरा के पद तथा भजन रमे हुए हैं । जब भी कोई संकट आता है तो वे हनुमान चालीसा का पाठ करने लग जाते हैं। कई पीढ़ियां गुजर गईं परन्तु पढ़ाई-लिखाई का उपयुक्त वातावरण नहीं बन पाया। कहीं-कहीं हर घर में और कहीं-कहीं दो-चार घरों के बीच श्यामपट लगे दिख पड़ते हैं। इन पर वे कुछ-कुछ शब्दों को लिखने-पढ़ने का अभ्यास करते हैं। **चार-पाँच घरों के बीच जो व्यक्ति पढ़ा लिखा होता है, वह श्यामपट पर कुछ शब्दों को लिखकर अभ्यास कराता है और इस प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी मातृभाषा-ज्ञान की परम्परा चली आ रही है। परन्तु अधिकांश लोग प्रायः देवनागरी लिपि भूल जाते हैं। वे रोमन लिपि में हिन्दी लिखते हैं।** उन्होंने पूजा-अर्चना का तरीका यूरोपीय पद्धति पर रखा है। जैसे चर्च खुलता है उसी तरह भारतवंशियों के मंदिर भी शनिवार और रविवार को खुलते हैं। **वहां आर्यसमाज के मंदिर भी हैं। वहां एक बात देखने को मिली कि सुरीनाम में अधिकतर महिलाएं चर्च की तरह मंदिर में भी बेंच पर बैठते हैं।** यहां की अधिकतर महिलाएं गर्म वातावरण और यूरोपीय सभ्यता के कारण तन पर बहुत कम कपड़े पहनती हैं। उन्होंने यूरोपीय शैली की वेशभूषा अपना रखी है। लेकिन **सुखद आश्चर्य यह होता है कि वे जब भी मंदिर में जाती हैं तो सिर अवश्य ढंक कर जाती हैं। सूरीनाम में इस समय १३२ मंदिर हैं और श्रद्धालु लोग भजन-कीर्तन संध्या, हवन और आरती करते हैं।** आरती के बाद भारत की ही तरह लोग हलुवा और लड्डू का प्रसाद ग्रहण करते हैं। यह सब देखकर ऐसा लगता है कि हम विदेश में न होकर अपने ही देश में हैं।

सूरीनाम में बहुत से अभिवादन करते समय 'राम-राम भइया' कहते हैं, उसे सुनकर ऐसा प्रतीत होता है कि उनका जीवन कितना राममय है, भक्ति भावना के कारण उनके रोम-रोम में 'राम' का निवास है। सूरीनाम को इसीलिए कुछ लोग राम के पूर्वज सूर्य के नाम पर 'सूर्यनाम' भी कहते हैं। दशहरे से पहले सूरीनाम की राजधानी पारामारिवो में एक महीने तक अवकाश रहता है और उन दिनों रामलीला का उसी तरह आयोजन किया जाता है जैसे वाराणसी के रामनगर में किया जाता है।

बाह्य रूप से वे अमरीकी और यूरोपीय सभ्यता के रंग में रंगे हुए होने के बावजूद भीतर से भारतीय संस्कृति में रमे हुए हैं। किसी भारतवंशी के घर के पास से गुजरते समय उसके घर के ऊपर लाल रंग की पताका फहराती हुई देखकर तुरंत यह आभास हो जाता है कि यह किसी न किसी भारतवंशी का ही घर होगा। यहां के लोगों ने अपने धर्म और संस्कृति को इस तरह आत्मसात कर रखा है कि वह अभ्यंतर और बाह्य—दोनों ही रूपों में देखने को मिलता है। सूरीनाम के विभिन्न क्षेत्रों में गलियों यानी 'स्ट्रीट' के नाम भी भारतीय शहरों की याद दिलाते हैं। जैसे-बाम्बे, स्यात, इंदौर स्यात, अहमदाबाद स्यात, दिल्ली स्यात आदि।

वे कई पीढ़ियों से अपने मूल स्थान से उखड़जाने का दर्द अपने मन में अब भी संजोये हुए हैं। रह-रहकर उसकी टीस अब भी उनके मन को उद्वेलित करती रहती है । आज भी जब हम सूरीनाम नदी के तट पर विचारमग्न

होकर बैठ जाते हैं तो ऐसा लगता है कि मानो हम काशी में गंगा के तट पर बने घाटों को देख रहे हैं।

सूरीनाम में बसे लोगों से जब हम बात करते हैं तो पाते हैं कि उनकेमन में भारतवंशी होने का गौरव बारम्बार हिलोरे ले रहा है और वह उनकी वाणी और नेत्रों से स्पष्टतः झलकता रहता है। भारतवंशी ही नहीं, सूरीनाम में बसे रेड इंडियन भी अपने को 'विवस्वान' यानी भगवान् सूर्य के वंशज (हिमैटिक) मानते हैं। रेड इंडियन भी राम और सीता का उत्सव समारोहपूर्वक मनाते हैं। इस समारोह में वे भारतवंशियों की ही तरह धनुष-वाण तथा 'तीर-कमान' का इस्तेमाल करते हैं।

सूरीनाम के लोग अपने को हिन्दुस्तानी कहते और मानते हैं और हर हिन्दुस्तानी वस्तु या गुण को अपनाने में उन्हें गौरव की अनुभूति होती है। कई पीढ़ियां बीत जाने के बाद वे लोग अपनी लिपि (नागरी) को सुरक्षित नहीं रख पाये हैं लेकिन इसकी पूर्ति वे रोमन लिपि के माध्यम से करते हैं। हर घर में श्यामपट पर वे अपनी लिपि को लिखने की अपनी चेष्टा जारी रखे हुए हैं। तुलसीदास की चौपाई और दोहे, कबीर के 'सबद' और 'बानी', मीरा के भजन वे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तकअपनी याददाश्त के सहारे लिए आ रहे हैं। यह उनकी जिजीविषा और अपनी मातृभूमि तथा मातृभाषा के प्रति उत्कट प्रेम का अपरिमेय उदाहरण है। उसके साथ उनकी भावनात्मक एकता इस कदर जुड़ी हुई है कि जब भारतीय संस्कृति और हिन्दी विषय पर गोष्ठी चल रही थी और उसमें कुछ मुद्दों को लेकर नोक-झोंक होने लगी तो लोग शांत नहीं हो रहे थे। उग्र लोगों को शांत करने के लिए जब कोई उपाय नहीं सूझा तो एक सूरीनामी व्यक्ति उठ खड़ा हुआ और माइक लेकरउसने गोस्वामी तुलसीदास की चौपाइयां सुनाना शुरू कर दिया तो मानो जादू चल गया ऐसा लगा कि वह हिन्दी की गोष्ठी नहीं बल्कि रामभक्तिधारा का रस प्रवाहित कर रहा हो। फिर क्या था भक्तिधारा में लोग ऐसे बहने लगे कि गोष्ठी में पैदा हुआ वैमनस्य भूल गये और चतुर्दिक सौमनस्य का वातावरण छा गया। ऐसा लगा कि किसी राममंदिर में पहुंच गये और पुनः गोष्ठी का संचालन सुचारू रूप से हुआ। सूरीनाम के लोग केवल मानवप्रेमी ही नहीं हैं, उनके मन में पक्षियों के प्रति बहुत स्नेह और प्रेम है। यदि आप किसी नदी या समुद्र के तट पर भ्रमण के लिए निकलें तो देखेंगे कि वहां के लोग पक्षियों के पिंजरे लिए हुए घूम रहे हैं। जब भी वे कहीं चाहे बस में, या टैक्सी में या पैदल चले जा रहे हों, उनके साथ रंग-बिरंगी चिड़ियां पिंजरे में साथ-साथ रहती हैं। सूरीनाम में भारत की तरह कोयल और गिलहरियां नहीं पाई जातीं लेकिन तोते की अनेक जातियां पाई जाती हैं। ये तोते रंग-बिरंगे होते हैं। इनकी एक विशेषता यह होती है कि वे पेड़ पर फल-फूल खाकर तृप्त रहते हैं, जमीन पर नहीं उतरते, इसीलिए लोग इन्हें 'पंडित तोता' कहते हैं। सूरीनाम में एकचिड़िया होती है— 'त्वा त्वा' यह मशहूर गायक पक्षी है। इतना मीठा गाती है कि लोग इस पर कुर्वान हो जाते हैं और इससे सम्मोहित होकर वे ३००० डालर से भी अधिक कीमत देने के लिए उद्यत हो जाते हैं। जो पक्षी गाने की जितनी अधिक पकड़ रखता है, उसकी उतनी ही ज्यादा कीमत लगाई जाती है। कुछ पक्षी ऐसे हैं जो टेपरिकार्डर की आवाज सुनकर उसके गाने की धुन के अनुसार गूंजना और कूंजना शुरू कर देते हैं।

सम्मेलन में प्रायः प्रत्येक वक्ता ने हिन्दी को विश्वभाषा के स्तर तक पहुंचाने के बारे में कुछ न कुछ कहने का प्रयास किया। संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के प्रति अधिकतर वक्ताओं ने अपने सुझाव दिए और कुछ ने भारत सरकार की किंकर्तव्यविमूढ़ता के लिए उसके प्रति आक्रोश भी व्यक्त किया। सरकारी प्रयासों की आलोचना करते हुए कुछ वक्ताओं ने अपने मार्मिक उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी तो विश्वभाषा बन चुकी है, यह दीगर बात है कि अभी तक अपने ही देश में उसे राजभाषा का दर्जा हासिल नहीं हो सका। कुछ वक्ताओं ने सरकार की संकल्प शक्ति का आह्वान किया और कहा कि इस्राइल ने 'हिब्रू' भाषा को पुनर्जीवित कर लिया। तुर्की में कमालपाशा ने एकबार में घोषणा करके राजभाषा की स्थिति को स्पष्ट कर दिया परन्तु भारत में अर्द्धशताब्दी की अवधि बिना किसी परिणाम के बीत गई और अभी तक यह मसला तय नहीं हो सका। वक्ताओं ने कहा कि यदि सरकार इतना दृढ़ संकल्प नहीं दिखा सकती तो उसे चाहिए कि कम-से-कम हर देश में हिन्दी का एक प्रिंटिंग प्रेस लगवा दे ताकि इस भाषा में विपुल साहित्य का प्रकाशन सम्भव हो सके। जिन उदीयमान देशों में साहित्य में साहित्य का सृजन हो रहा है, उनमें साहित्य की जड़ में पानी देने की आवश्यकता है, शाखाओं में फल-फूल तो स्वतः लग जाएंगे। अब सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों का उपयोग करते हुए

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

दहेज उत्पीड़न-कुछ साहसिक कदम

❑ अमृता निकोर-शिक्षाविद

दहेज उत्पीड़न के विरोध में कुछ युवतियों ने ऐसे साहसिक कदम उठायें हैं जिन्होंने सामाजिक चेतना को झकझोरा है। निशा शर्मा के निर्णय को प्रायः सबने सराहा है। मीडिया ने उसे भरपूर सहयोग दिया है और जन साधारण ने समर्थन। आज वह एक साहसी के रूप में उभर रही है, क्या उसके द्वारा उठाया गया कदम एक अभियान बन सकेगा? कहना तो कठिन है, किन्तु वह कई युवतियों की प्रेरणा स्रोत निश्चय ही बन गई है।

ग्यारह मई को निशा ने अपनी बारात लौटायी, पुलिस को फोन कर मुनीष को जेल भिजवाया, मई १४ को अनुपमा सिंह ने निशा से प्रेरणा पाकर आठ लाख की मांग करने वाले पति योगेन्द्र के साथ ससुराल जाने से इन्कार कर दिया, १७ मई को फरजाना ने दहेज मांगने वाले नदीम को पुलिस के हवाले करते हुये कानून का सहारा लिया, ४ जून को तमिलनाडु चैन्नई में विद्या वालासुब्रमण्यम ने दहेज के विरोध में मंडप से उठकर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज करवाई। इन घटनाओं से स्पष्ट है कि युवतियां और उनके अभिभावक दहेज की बढ़ती मांग से पीड़ित हैं किन्तु वे सामाजिक प्रतिष्ठा के भय और पुलिस के डर से कानून का दामन पकड़ने को तैयार नहीं होते तथा लेन-देन के मामले किसी प्रकार समझौते से सुलझाने का प्रयास करते हैं।

कन्या स्वभाव से कोमल होती है, माता पिता के विरूद्ध नहीं जाना चाहती, उसके हृदय में लालची ससुराल के प्रति रोष तो भड़कता है, किन्तु वह उसे दबाती रहती है लोकगीतों में भी यही कहा है।

ननान सुनादे सानूं जद दहेजा दे तराने। भांभड़ बलदा दिल विच साडे, ससमारे जद ताने (विजय गुप्त)

बेटी तो बेटी है, अति भावुक संवेदनशील, किन्तु अब वह अपने अधिकारों को जानने लगी है, सजग है, उसे एक चिंगारी की जरूरत है, और यह चिंगारी क्रांति का रूप ले सकती है यदि महिला संस्थायें और युवा वर्ग सक्रिय सहयोग दें। दहेज विरोधी कानून होते हुये भी, दहेज एक ज्वलंत समस्या बनी हुई है, **दिल्ली कमीशन फार वीमेन** द्वारा प्रस्तुत आंकड़े भी इसका संकेत देते हैं।

(१) दिल्ली कमीशन को हैल्पलाइन पर जो शिकायतें मिलती हैं, उनमें ८० प्रतिशत दहेज उत्पीड़न से जुड़ी होती हैं।

(२) अप्रैल मास २००३ में कमीशन को ७०० से अधिक दहेज उत्पीड़न की शिकायतें मिलीं जो काफी बड़ी संख्या है।

(३) फरवरी, मार्च, अप्रैल २००३ में १६५६ शिकायतों में १२४५ शिकायतें 'दहेज' संबंधी थीं, १७० शिकायतें दहेज मांग की, २८८ पति द्वारा शारीरिक एवं मानसिक यातना की, २७० ससुराल द्वारा दी गई यातना संबंधी ३१७ केस ऐसे थे जिसमें पति और ससुराल वाले दोनों दोषी हैं, और यह केस कमीशन के 'पारिवारिक न्यायालय' में चल रहे हैं।

अन्य महिला संस्थानों तथा परिवार परामर्श केन्द्रों में दहेज संबंधी शिकायतों की संख्या काफी अधिक है, दहेज वापसी के मामले क्राइम सैल में निबटाये जाते हैं, कानून के अन्तर्गत यदि दोनों पक्ष, विवाह के पश्चात् वैमनस्य के कारण इकट्ठे ना रह पायें तो लड़कियां 'दहेज वापसी' का मामला दर्ज करा सकती हैं, और जांच के पश्चात उन्हें अपना स्त्रीधन वापिस मिल सकता है, इस प्रभावी कदम से लड़कियों को कुछ राहत तो मिली है।

दहेज विरोधी कानून के अन्तर्गत 'दहेज देना अथवा लेना' जुर्म है और दोषी व्यक्ति को ६ महीने से २ वर्ष की सजा का प्रावधान है, यह कानून १९६१ में बना किन्तु प्रभावी न होने के कारण १९८४ में इसमें संशोधन हुआ, और २ अक्टूबर १९८५ में कार्यान्वित किया गया, जिसमें १००० रुपये अथवा अधिक दण्ड राशि का प्रावधान किया गया, किन्तु सामाजिक चेतना के अभाव में और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों के बढ़ावे के फलस्वरूप दहेज उत्पीड़न की घटनाओं में सतत वृद्धि हुई। दहेज हत्या, वधू को जला देना और यातना से पीड़ित युवतियों का आत्महत्या करने के प्रयास जैसी घटनाओं ने समाज में खलबली सी पैदा कर दी, इन घिनौने कांडों को रोकने के लिये आई.पी.सी. में धारा ४९८-ए जोड़ी गई, धारा ४०६, एवं अपराध प्रक्रिया संहिता में धारा ३०४-बी, तथा भारतीय साक्ष्य कानून में कुछ परिवर्तन करके कानून को अधिक कड़ा बनाया गया और पुलिस स्टेशनों पर 'दहेज सैल' खोले गये जो 'क्राइम सैल' के रूप में आजकल कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा और भी बहुत से प्रभावी कदम उठाये गये, जिससे दहेज हत्याओं की संख्या में कुछ कमी आई, आज भी ऐसे कुछ मामले सामने आते हैं और आते

भी रहेंगे क्योंकि केवल कानून से ही समाज में परिवर्तन लाना संभव नहीं, सामाजिक परिस्थितियां, मानवीय स्वभाव, हिंसा की प्रवृत्तियां बढ़ती हुई आकांक्षायें आर्थिक विषमतायें, नारी का निम्न स्तर इत्यादि कई कारणों को नकारा नहीं जा सकता। किन्तु दु:ख की बात यह है कि आज के संदर्भ में हम कानून जानते हुये भी अनजान बनते हैं। नई सदी के शिक्षित नवयुवक और उनके परिवार विशेषकर मध्यम वर्ग सदियों से चली आ रही कुरीतियों से जकड़े हुये हैं। इसी कारण दहेज प्रथा आज भी एक ज्वलंत समस्या है, किन्तु आज युवतियों में कुछ जागरूकता दिखाई देती है, और अनेक युवतियां मुखर हो रही हैं जो परिवर्तन का सूचक है।

एक वास्तविक घटना का उल्लेख कर रही हूँ हमारे साथ एक मेधावी सुन्दर कन्या वैज्ञानिक का कार्य करती है, उसकी बहन का विवाह दो वर्ष पूर्व हुआ। मां ने चार पांच लाख का खर्चा किया, प्रसव के लिये उसकी बहन मां के घर आई, अचानक एक दिन फोन आया 'तुम्हारे गहने रात को चोरी चले गये हैं' सास ने कहा, और फोन रख दिया, लड़की रोई चिल्लाई किन्तु मां ने कहा इस हालत में तुम क्या करोगी वहां जाकर, और उसे समझाया 'बेटी अभी तुम्हारी छोटी बहन की शादी करनी है जो हुआ उसे भूल जा, हो सका तो मैं धीरे-धीरे और गहने बनवा दूंगी, किन्तु याद रख तूने रहना तो ससुराल में ही है, तेरी किस्मत, तेरा भाग्य, मकान तो तेरी सास का है।'

प्राय: लड़कियां कानून जानते हुये भी कुछ कर नहीं पातीं, घर संपति प्राय: सास ससुर की होती है, समायोजन तो करना पड़ता ही है। माता पिता भी दहेज तो दे देते हैं किन्तु जहां सम्पत्ति में हिस्से की बात आती है वहां उनका रवैया नकारात्मक ही होता है।

बदलते सामाजिक परिवेश में यदि दहेज देने की अपेक्षा कन्याओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जाये, उसे सजग बनाया जाये, उसके व्यक्तित्व को निखारा जाये तो दहेज की समस्या का निदान संभव है। यह भी मानना होगा कि शिक्षित और नौकरी करने वाली और आर्थिक रूप से स्वावलम्बी युवतियां भी दहेज उत्पीड़न से त्रस्त हैं, जैसा कि कई सर्वेक्षणों में उभर कर आया है किन्तु 'नारी सशक्तिकरण' से ही इस प्रथा का उन्मूलन संभव है।

हाल में मई २००३ में हुई दहेज मांग विरोधी घटनाओं से सामाजिक वातावरण इस प्रथा को समाप्त करने के पक्ष में है, अत: यदि निशा शर्मा, अनुपमा सिंह जैसी युवतियां इस मुद्दे को जीवित रखें और अग्रणी भूमिका निभायें तो शायद सामाजिक सोच में शीघ्र परिवर्तन हो सकेगा। वैसे भी जब युवा शक्ति किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प कर लेती है तो कुछ भी असंभव नहीं। हमें अपनी शाश्वत संस्कृति को पुन: एक नया आयाम दें। विवाह को पवित्र बंधन मानें। पत्नी को सहधर्मणी और अर्धांगिनी मानें। आज के खोखले मूल्यविहीन समाज को एक नई दिशा मिलेगी। जहां नारी की पूजा होती है वहां देवताओं का निवास होता है, यह वैदिक संदेश हमारी प्रेरणा बने।

१७६, कालकाजी, नई दिल्ली-११००१९

(पृष्ठ ४९ का शेष)

हिन्दी के वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति देनी चाहिए। ऐसे साफ्टवेयर का विकास करना आवश्यक है जिनसे अधिक से अधिक देशों में हिन्दी का मानकीकरण किया जा सके। आज अंग्रेजी विश्वभर में इसीलिए छायी हुई है कि उसने अपनी भाषा केसाफ्टवेयर का संतुलित विकास कर लिया है और विभिन्न देशों में उसके व्याकरण, भाषा की वर्तनी आदि में काफी हद तक एकरूपता है जबकि हिन्दी में हर देश की कौन कहे, देश के ही हर राज्य में अलग-अलग तरह की हिन्दी लिखी और बोली जाती है। हिन्दी के व्याकरण, भाषा-शास्त्र और वर्तनी में पूर्णता लाना अत्यावश्यक है।

पोलैण्ड के प्रख्यात विद्वान् प्रो. ब्रिस्की ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सुझाव दिया कि हिन्दी मातृभाषाभाषियों को चाहिए कि वे मित्रभाषाभाषियों के साथ सम्बन्धों के आयाम का विस्तार करें। विभिन्न भाषाओं के साथ अनुवाद-प्रक्रिया को बढ़ाकर हिन्दी की शब्द सम्पदा की अभिवृद्धि करनी चाहिए, केवल अंग्रेजी से अनुवाद पर आश्रित नहीं रहना चाहिए। अनुवाद भरसक मूल भाषा से ही किया जाना चाहिए। विश्व की हर भाषा के साथ सीधा अनुवाद और सम्वाद बढ़ाकर हिन्दी को विश्व भाषा के शिखर पर आसीन किया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के उपयुक्त शब्दकोशों को तैयार करना भी अत्यावश्यक है। सबसे जरूरी यह है कि हमें हिन्दी भाषा पर गर्व करना चाहिए और उसके गौरव-वृद्धि के लिए यथासम्भव प्रयत्न करना चाहिए।

बी-८३, पंडारा रोड, नई दिल्ली-३

धर्म से आर्य–कर्म से आर्य : महाशय धर्मपाल

□ सुमेधा आर्य

एम. डी. एच. मसालों के निर्माता महाशय धर्मपाल भारत के उद्योगपतियों में अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। धनवान होने के साथ-साथ वह एक उदार-हृदय इंसान भी हैं। वास्तव में वे व्यक्ति सौभाग्यशाली होते हैं जो सांसारिक सम्पत्ति को मानवता की सेवा में लगाकर ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। आरदणीय महाशय जी उन्हीं में से एक हैं। इतने बड़े व्यापारी होते हुए भी अपनी फैक्टरी कीर्तिनगर में यज्ञ और विद्वानों केप्रवचन आयोजित कराते हैं। जिसमें सभी कर्मचारी भाग लेते हैं। मैं प्रायः ऐसे सत्संग में प्रवचनों के लिए जाती रहती हूँ। इनके हृदय में धार्मिक व्यक्तियों और साधु-संन्यासियों के प्रति विशेष प्रेम और सम्मान है। विधवा, अनाथों और अन्य जरूरतमंदों की आर्थिक सहायता करते हैं।

अनाथ बालिकाओं को धन देकर उनके विवाह सम्पन्न कराकर उनके जीवन में नव विहान लाते हैं। इनके द्वारा कई विद्यालय चलाए जा रहे हैं। जो विद्या के वरदान से युवा पीढ़ी को समृद्ध करा रहे हैं। मानवता की सेवा की इसी कड़ी में इनकी माता चन्ननदेवी अस्पताल सी-१, जनकपुरी, दिल्ली अपनी एक अलग पहचान बना चुका है। आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक और दयानन्द संस्थान के आचार्य स्वामी जगदीश्वरानन्द जी रूग्ण हो गए। उनके मूत्र में कई दिनों तक निरन्तर रक्त आता रहा। होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक किसी भी चिकित्सा से कोई लाभ नहीं हुआ। अन्त में स्वामी जी को माता चन्ननदेवी अस्पताल में प्रविष्ट कराया गया। उन दिनों महाशय जी दिल्ली से बाहर थे। मैंने डॉ. ओबराय जी से फोन पर बात की उन्होंने डॉ. सोबती (एम. एस.) माता चन्ननदेवी अस्पताल को फोन किया और हमें डॉ. सोबती जी से मिलने को कहा गया। डॉक्टर महोदय का व्यवहार अत्यन्त सौम्य और सहयोग से परिपूर्ण रहा।

मैं स्वामी जी को अस्पताल में मिलने गई तो द्वारपाल से लेकर नर्सों, डॉक्टरों और अन्य कर्मचारियों का व्यवहार प्रेम और आत्मीयता से भरा हुआ पाया। यही अनुभूति स्वामी जी महाराज ने भी की। स्वामी जी (१२ मई से २३ मई तक) अस्पताल में रहे। उनका ट्यूमर का सफल आपरेशन हुआ। सारा खर्च महाशय जी की ओर से हुआ। स्वामी जी के भक्तों ने रक्त दान दिया और खूब सेवा की। सी-३ जनकपुरी आर्यसमाज के अधिकारी अपनी समाज में आपरेशन के बाद स्वास्थ्य लाभ के लिए ले गए। उनका स्वामीजी की सेवा में विशेष योगदान रहा।

आदरणीय महाशय जी स्वामी जी को सी-३ आर्यसमाज में मिलने गए। स्वामी जी पूर्ण स्वस्थ होकर ८.६.२००३ को महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम वेद मन्दिर आ गए हैं। परमपिता परमात्मा ने इनको नया जीवन प्रदान किया है। मैं स्वामी जी की ओर से और दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पं. राकेशरानीजी (जिनके द्वारा वेदमन्दिर-महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम का संचालन हो रहा है) तथा अपनी ओर से महाशय धर्मपाल आर्य का हार्दिकआभार व्यक्त करती हूँ।

महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमन्दिर, दिल्ली-३६

हरियाणा में वेद प्रचार रथयात्रा

दयानंद मठ : आर्यप्रतिनिधिसभा हरियाणा की ओर से, सभा के प्रधान आचार्य बलदेव ने दयानंदमठ से वेदप्रचार रथयात्रा का शुभारम्भ किया। यह रथयात्रा रोहतक से गुरुकुल लाढोत, मकडौली, किलोई, भालौठ, बलियाणा पाकस्मा, आसन कंसाला, हुमायुपूर, सिंहपुरा, सुन्दरपुर, भगवतीपुर, टिटौली, जिंदराण, घुसकानी, खड़वाली, सांघी, जसिया, बसंतपुर, ब्राह्मणवास, चमारिया होती हुई बोहरगढ़ पहुंची। वहां से वेद प्रचार रथ खेड़ीसाध, गांधरा, किसरैंटी, दत्तोड़, गिझी, सांपली और इस्माइला पहुंचा। वहां से रथ शिवाजी कालोनी, मायना, पहरावर, कन्हैली, शिमली करोंथा, बालंद, रिटौली, कबूलपुर, सुंडाना, ककराणा गरनावरी, सुनारिया होते हुए गद्दी खेला से गुजरा। वहां से यह रथयात्रा, बहुजमालपुर, बहुअकबरपुर, मुरादपुर, टेकणा, मदीना अजायब, खरक, खरकडा महम, खेडी निदाना होते हुए डोभी मड़ौदी, बलियानी, भाली, लाहली, कलानौर, से बसाना पहुंची।

आर्यसमाज सुन्दरनगर कालोनी

सुन्दरनगर कालोनी (हि. प्र.) आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर गत माह ग्यारह दिन का योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया। जिसकी अध्यक्षता पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक ने की। शिविर में हिमाचल प्रदेश के अलावा, जम्मू कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, अहमदाबाद से आए शिविरार्थी शामिल हुए।

समाचार—दर्शन

देशभर में वीर सावरकर जयंती की धूम : गुजरात वि. स. भ. में तैलचित्र

(जनज्ञान प्रतिनिधियों द्वारा)

नई दिल्ली : इस वर्ष पूर्व की अपेक्षा देश में कहीं अधिक धूमधाम से स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर की जयंती आयोजित हुई। इस अवसर पर देश के महानगरों, और कस्बों के अलावा अनेक ग्रामों में सावरकर के दिव्य, प्रेरक जीवन पर गोष्ठियां तथा बैठकों का आयोजन कर क्रांतिकारियों के मुकुटमणी एवं हिन्दू संघटक उस भविष्य द्रष्टा का पावन स्मरण किया गया। इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम गुजरात विधानसभा भवन में स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के तैलचित्र का अनावरण उपराष्ट्रपति माननीय भैरोसिंह द्वारा सम्पन्न किया गया।

उपराष्ट्रपति श्री शेखावत ने इस अवसर पर अपने भाषण में वीर सावरकर की स्वदेश भक्ति, राष्ट्र को पराधीनता से मुक्ति दिलाने के लिए अनेक क्रांति कार्य और अंडमान के क्रूर कारागार में झेली गयी यम यातनाओं का भाव विभोर होकर उल्लेख किया। उन्होंने युवकों से वीर सावरकर के त्याग, बलिदान और प्रखर राष्ट्रवादी सोच को आत्मसात कर राष्ट्र सेवा व्रत ग्रहण करने का आह्वान किया। प्रमुख वक्ता के रूप में वीर सावरकर के प्रति श्रद्धाज्ञापन करते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि स्वातंत्र्य वीर ने केवल क्रांतिकारी कार्यों को ही गतिमान नहीं किया अपितु एक प्रखर समाज सुधारक की भी भूमिका निभाई तथा हिन्दुओं का धर्मान्तरण करने में लिप्त देशद्रोही तत्वों के विरूद्ध भी प्रबल आंदोलन चलाया। उन्होंने स्वातंत्र्य वीर की देशभक्ति पर टीका टिप्पणी करने वाले तत्वों को आड़े हाथों लिया। विधिमंत्री अशोक भट्ट ने स्मरण दिलाया कि १९३७ में इसी अहमदाबाद नगर (कर्णावती) में वीर सावरकर ने हिन्दू महासभा के अध्यक्ष पद से अपने राजनीतिक चिंतन का श्रीगणेश किया था। कार्यक्रम के अंत में उपराष्ट्रपति श्री शेखावत ने मुम्बई की सौ. चन्द्रकला कदम को शाल और श्रीफल प्रदान कर उनका अभिनंदन किया। चन्द्रकला जी द्वारा निर्मित तैलचित्र ही गुजरात विधानसभा भवन में लगाया गया।

समारोह में भाग लेने के लिए गुजरात सरकार ने स्वातंत्र्य वीर सावरकर के भतीजे और हिन्दू महासभा के पूर्व अध्यक्ष विक्रमनारायण सावरकर को विशेष रूप से आमंत्रित किया था। समारोह में भाग लेने के लिए राजकोट, सिद्धपुर, वीरमगांव, बड़ोदरा आदि गुजरात के अनेक सावरकरनिष्ठ कार्यकर्ता कर्णावती आए थे। उनके सहभोज का आयोजन गुजरात विधानसभा के मुख्य सचेतक श्री मुखाड़िया ने किया। इस कार्यक्रम में भी श्री विक्रम सावरकर सहभागी रहे। कर्णावती केखाडिया विभाग स्थित हिन्दू महासभा कार्यालय में एक बैठक को भी श्री विक्रम सावरकर ने सम्बोधित किया। गुजरात के बडोदरा नगर में स्वातंत्र्यवीर सावरकर स्मृति मंडल के तत्वावधान में २८ से ३० मई तक तीन दिवस की एक व्याख्यान माला भी आयोजित की गई।

मुम्बई : यहां स्वातंत्र्य वीर सावरकर राष्ट्रीय स्मारक के तत्वावधान में २८ मई को सावरकर जयंती के अवसर पर कीर्ति चक्र विजेता नाइक स. तरलोकसिंह को लेफ्टिनेंट जनरल वी. पी. पंडित के हाथों "स्वातंत्र्य वीर सावरकर शौर्य पुरस्कार" प्रदान कर सम्मानित किया गया। पढंरपुर के श्री शंकर भागवत कुलकर्णी तथा मुम्बई के श्री मुरलीधर अच्युत जोशी को स्वातंत्र्य वीर सावरकर स्मृति चिह्न पुरस्कार भी प्रदान किया गया। स्वातंत्र्य वीर सावरकर जलतरण पुरस्कार इस वर्ष कु. कावेरी अजितठाकुर को तथा उत्कृष्ट रायफल प्रशिक्षणार्थी पुरस्कार २००२ श्री दीपक देसाई, श्रीमती इला परचुरे व श्री प्रांजल बाध को दिया गया।

नागपुर के महाल विभाग स्थित राष्ट्रीय वाचनालय में वीर सावरकर जयंती का आयोजन अधिवक्ता श्री अलवट कर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिसमें प्रमुख वक्ता श्री वीरेन्द्र देशपांडे ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि वीर सावरकर की हिन्दुत्व आधारित राजनीति को अंगीकार करके ही देश विद्यमान संकटों पर पार पा सकता है।

नागपुर नगर में सैकड़ों लोगों ने स्वातंत्र्य वीर सावरकर की प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन समर्पित किए। इस अवसर पर स्वातंत्र्य वीर सावरकर स्मृति समिति, हिन्दू महासभा, आर्यसमाज, सावरकर तत्वज्ञान केन्द्र, संस्कार भारती आदि के पदाधिकारी भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

स्वातंत्र्य वीर सावरकर समिति की ओर से इस वर्ष का स्वातंत्र्य वीर सावरकर गौरव पुरस्कार ज्येष्ठ नागरिक मंडल के संस्थापक श्री प्र. गो. पांडे को एक जनसभा में प्रदान किया गया। प्रमुख वक्ता प्रा. डॉ. कुमार शास्त्री थे। अध्यक्षता आचार्य सुधाकर भालेराव ने की।

सावरकर जयंती के अवसर पर नागपुर महानगर कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश हिन्दू महासभा अध्यक्ष श्री अरूण जोशी ने अपने भाषण में विश्वास व्यक्त किया कि देश निश्चय ही वीर सावरकर की कल्पना के हिन्दू राष्ट्र का स्वरूप ग्रहण करेगा। कार्यक्रम का संचालन हिन्दू महासभा के नगर उपाध्यक्ष श्री बसंतराव महाजन

ने किया। सतारा, पुणे, पंढरपुर, शोलापुर, भंगूर, नासिक, धुले आदि में भी अनेक आयोजन हुए।

कर्नाटक : हिन्दू महासभा के वयोवृद्ध नेता श्री गोपालराव गोडसे ने २८ मई को हुबली में तथा २९ मई को गडग की सभाओं में वीर सावरकर प्रणीत हिन्दू राष्ट्रवाद की सविस्तार व्याख्या की।

हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) : भाग्यनगर (हैदराबाद) में दिनांक २७ और २८ मई को स्वातंत्र्य वीर सावरकर जयंती पर समारोह तत्वावधान में भव्य कार्यक्रम आयोजित हुए। समिति के संयोजक श्री प्र. ह. हयातनगर कर ने इन कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए आर्यसमाज, क्षत्रिय मराठासमाज, जायसवालसमाज, क्षत्रिय राजपूतमंडल आदि का भी सहयोग प्राप्त किया। २७ मई को गुणवर्धक सभा गृह में प्रकट सभा, चित्र प्रदर्शन, काव्य गायन, सावरकर श्रद्धांजलि पुस्तिका का प्रकाशन आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस कार्यक्रम में सर्वश्री गुंटी कृष्ण जी आर्य, डॉ. किशोरी लाल व्यास, जी. शंकर, अशोक कुमार अग्रवाल आदि प्रमुख नागरिक उपस्थित थे। २८ मई को लाल दरवाजा, चौराहा, शालीबंदा में स्वातंत्र्य वीरसावरकर के तैलचित्र पर पुष्पमाला अर्पण समारोह सम्पन्न हुआ। इन कार्यक्रमों को सफल बनाने में श्री गुंटी कृष्णा जी आर्य, सुखदेव आर्य, पी. वी. राव, प्रकाशराव शिन्दे, सुशील कुमार, श्री सत्यनारायण जायसवाल, श्री सुदर्शन खन्ना, राणा ब्रज किशोर सिंह, श्री किशन प्रसाद कपूर, श्री गोपालजी यादव, श्री डी. पेन्टय्या, श्री द्विजराज सक्सेना, श्री चन्द्रकांत पुरवरे, श्री एन. वासुदेवराव, श्री वसंतराव कामले, आदि का सहयोग रहा।

उत्तर प्रदेश : गोरखपुर मंडल के विभिन्न नगरों में वीर सावरकर जयंती समारोह पर अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। लखनऊ, कानपुर, बरेली आदि में भी वीर सावरकर जयंती पर गोष्ठियां व बैठकों का आयोजन किया गया।

मेरठ में गरीबजन पार्टी की ओर से मंगल पांडे चौक बुढ़ाना गेट पर आयोजित एक समारोह में वक्ताओं ने वीर सावरकर के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान पर प्रकाश डाला। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विशन तुरैया ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश को हिन्दू राष्ट्र घोषित करना ही वीर सावरकर को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर किशनगोपाल तुरैया, कृष्णस्वरूप राजवंशी, पवनकुमार धीमान, हरिशंकर गुप्ता, चौधरी मोहम्मद अमर, सुरेन्द्रकुमार बंसल तथा अशोक शर्मा आदि प्रमुख नेता उपस्थित थे।

हिन्दू महासभा के तत्वावधान में भी एक कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि श्री रामगोपाल थे। समारोह की अध्यक्षता श्री सुधीरनंदन शरण ने तथा संचालन श्री विनीत जैन ने किया। इस अवसर पर पं. अशोक शर्मा, कवयित्री डॉ. मीनाक्षी शास्त्री, जे. पी. गोयल, रजनी शर्मा, मीनू कोठीवाल, सरिता तथा करमचंद आदि प्रमुख नेता उपस्थित थे। साहित्यालोक की ओर से काव्य संध्या का भी आयोजन किया गया।

मध्य प्रदेश : ग्वालियर नगर में वीर सावरकर जयंती समारोह पर अनेक समारोह आयोजित हुए तथा नगर निगम द्वारा स्थापित वीर सावरकर की भव्य प्रतिमा पर भी सैकड़ों लोगों ने पुष्पांजलियां समर्पित कीं। गुना, शिवपुरी, इन्दौर, भोपाल विदिशा आदि नगरों में भी गोष्ठियां आयोजित की गयीं। आर्यसमाज विलासपुर ने भी वीर सावरकर को एक जनसभा में श्रद्धांजलि अर्पित की।

छत्तीसगढ़ : रायपुर नगर में हिन्दू महासभा की ओर से वीर सावरकर जयंती के अलावा तीन जून को महाराणा प्रताप जयंती समारोह भी श्री काशीनाथ सिंह ठाकुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुंतलकुमार सिंह चौहान थे। विशेष अतिथि मनोहर पंजवानी थे। संचालन श्री घनश्याम राउत ने और आभार प्रदर्शन श्री मनोज शर्मा ने किया।

पं. बंगाल : कोलकाता, बांकुआ, मेदनीपुर आदि में भी वीर सावरकर जयंती पर गोष्ठियां आदि आयोजित की गई।

दिल्ली : देश की राजधानी दिल्ली के लाजपत नगर क्षेत्र में स्थापित वीर सावरकर की भव्य प्रतिमा पर नगर निगम की ओर से माल्यार्पण किया गया। आर्यसमाज, राष्ट्रीय विचार मंच, हिन्दू नवयुवक सभा, दयानंद संस्थान के कार्यकर्ताओं ने भी इस अवसर पर प्रतिमा स्थल पर उपस्थित होकर वीर सावरकर के प्रति श्रद्धाज्ञापन किया। लोदी रोड क्षेत्र के वीर सावरकर पार्क में भी सावरकरवादी कार्यकर्ताओं ने प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

आदर्श आर्यसमाज गांधीधाम

नई दिल्ली : गुजरात के कच्छ जिले में गांधीधाम नगर में १९५४ में स्थापित आर्यसमाज द्वारा इस वर्ष स्वर्णजयंती वर्ष में भव्य वैदिक सत्संग समारोह, वैदिक संस्कार का उदघाटन तथा आर्य महासम्मेलन का आयोजन २१ से २५ मई केदौरान सम्पन्न हुआ। समाज ने भूकम्प से अनाथ हुए बच्चों को 'जीवन-प्रभात' प्रकल्प के अन्तर्गत आश्रय दिया है। ये बच्चे ग्रीष्मावकाश में दिल्ली दर्शन पर भी आए थे। ये महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम तथा प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी से भी मिलने गए। राष्ट्रपति महोदय ने आर्यसमाज के प्रयासों की सराहना तथा बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने बच्चों के निर्माणाधीन प्रकल्प हेतु पचास लाख रुपए देने की घोषणा की।

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

१. परमात्मा की अमरवाणी "चारों वेदों का हिन्दीभाष्य" मूल्य १८०० रु. अभी १२०० रु. में। आदेश के साथ सम्पूर्ण धन १२००रु. भेजकर ३०० रु. का साहित्य उपहार में प्राप्त करें। आज ही वेद भाष्य अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में लायें। डाक से मंगाने पर १५० रुपये अधिक लगेंगें।

२. वढ़िया पेपर पर छपा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य ३२०० रु. अभी २२५० रु. में प्राप्त करें। साथ ही ४०० रु. का उत्तम साहित्य भी उपहार में दिया जा रहा है। डाक से मंगाने पर १८० रु. अधिक लगेंगे।

३. विगत सैंतीस वर्षों से लगातार वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न मासिक "जनज्ञान" के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। वार्षिक शुल्क १०० रुपये है। ८०१ रुपये में आजीवन सदस्य बनकर ३००/- रु. का श्रेष्ठ साहित्य भी उपहार में प्राप्त करें।

४. प्रतिमास "जनज्ञान" की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ ५०/- रुपये में मंगाकर बांटें तथा "जनज्ञान" मासिक में विज्ञापन देकर हमारे "राष्ट्र जागृति अभियान" में सहयोग प्रदान करें।

५. संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेदप्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं, जिनकी सूची "जनज्ञान मासिक" में प्रकाशित होती रहती है। अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटें तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।

६. चारों वेद हिन्दी भाष्य तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थ वैदिक विचारधारा के प्रसार हेतु छापने में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग प्रदान करें।

७. वेद मन्दिर गौशाला में गौ दान करें तथा गउओं के लिए चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।

८. महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमंदिर, इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में ८ जून २००२ से धर्मार्थ औषधालय का शुभारम्भ किया गया है। दयानंद संस्थान के इस जन कल्याणकारी अभियान में मुक्त हस्त से योगदान दें तथा औषधियों के लिये धनराशि प्रतिमास भेजकर पुण्य के भागी बनें।

९. वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम दिल्ली-३६ में अपनी ओर से अथवा अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कुटिया बनवा सकते हैं। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें :—

अध्यक्ष-दयानन्द संस्थान

२२८६, आर्य समाज मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५ दूरभाष : २५७२४७४१, २५८१५४५७

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान्!

कम से कम एक और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

'जनज्ञान' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है। विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्र से संबद्ध विषयों पर निर्भीक टिप्पणियां जनज्ञान की विशेषता है।

- यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के तर्कसंगत पृष्ठपोषण का।
- यह अभियान है सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को बचाने का।
- यह अभियान है अपने बिछुड़े बंधुओं को पुनः साथ लाने का।
- यह अभियान है तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- यह अभियान है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष को गुंजाने का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के विश्वबंधुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाइये।
- अपने मित्रों, परिजनों में कम से कम एक और जनज्ञान का सदस्य बनाइए।
- यही है परिस्थिति का आह्वान्। घर-घर पहुंचे जनज्ञान।
- सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत।
- क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं हैं अभ्यागत।

वार्षिक शुल्क १०० रु. और आजीवन शुल्क ८०१रुपये है। अभी आजीवन सदस्य बनने पर ३०० रु का साहित्य उपहार दिया जा रहा है। —सम्पादक

जनज्ञान मासिक मंगाने के नियम

१. जनज्ञान के पाठक पत्र व्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें (सदस्य संख्या : जनज्ञान के रैपर पर लिखे पते के साथ अंकित रहती है।)

२. 'जनज्ञान' प्रतिमाह पांच और छः तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।

३. मास के अन्त तक 'जनज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भी भेज दिया जाता है।

४. 'जनज्ञान' की एक प्रति का मूल्य दस रुपये है। वार्षिक शुल्क १०० रुपये, आजीवन शुल्क ८०१ रुपये है।

५. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। **पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न होता है। कृपया पोस्टकार्ड पर उत्तर अवश्य दें।**

६. आगामी वर्ष के लिए शुल्क मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा **दिल्ली के किसी भी बैंक के चैक द्वारा** भेज सकते हैं। शुल्क प्राप्त न होने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी. पी. द्वारा भेजा जाता है।

७. **वी. पी. में पच्चीस रुपये डाकव्यय अतिरिक्त लगता है जिसका लाभ न तो सदस्यों को और न ही संस्था को होता है।** अतः कृपया सूचना मिलते ही धन तुरन्त मनीआर्डर द्वारा भेज देवें अथवा संलग्न कार्ड पर उत्तर अवश्य दें। **-सम्पादक**

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	1800 रु.
2.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य	201 रु.
3.	वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या)	50 रु.
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	80 रु.
5.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	60 रु.
6.	भारत के वीर बच्चों की कहानियां	10 रु.
7.	धरती का स्वर्ग	10 रु.
8.	सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र)	50 रु.
9.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	15 रु.
10.	धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	10 रु.
11.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	5 रु.
12.	वैदिक सम्पत्ति	151 रु.
13.	धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	10 रु.
14.	योग और ब्रह्मचर्य	10 रु.
15.	Inside the Congress	60 रु.
16.	Life and Teachings of Swami Dayanand	200 रु.
17.	History of the assassins	60 रु.
18.	Concept of God	60 रु.
19.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	60 रु.
20.	Light of Truth	150 रु.
21.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	15 रु.
22.	वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य	60 रु.
23.	संक्षिप्त महाभारत	60 रु.
24.	संक्षिप्त रामायण	15 रु.
25.	ऋग्वेद शतकम	10 रु.
26.	चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं	25 रु.
27.	सत्संग पद्धति	5 रु.
28.	वैदिक सान्ध्य गीत	10 रु.
29.	A Short Life Story of Swami Dayanand	30 रु.
30.	गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें	4 रु.

100 रु. से अधिक साहित्य पर 15 प्रतिशत 300 रु. से अधिक लेने पर 20 प्रतिशत तथा 500 रु. से अधिक लेने पर 25 प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1.	क्या आप मारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	1.00 रु.
2.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षुः	1.00 रु.
3.	भारत के मुसलमानों का क्या करें? — वेदभिक्षुः	1.00 रु.
4.	हम सब हिन्दू हैं—सावरकर	2.00 रु.
5.	इस्लाम में क्या है? —राकेश रानी	1.00 रु.
6.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ — जहीर नियाजी	1.00 रु.
7.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ	1.00 रु.
8.	इस्लाम—एक परिचय	1.00 रु.
9.	पोप की सेना का भारत पर हमला — वेदभिक्षुः	1.00 रु.
10.	पादरियों को चुनौती	2.00 रु.
11.	बाईबिल को चुनौती	2.00 रु.
12.	क्या ईसा खुदा का बेटा था?	1.00 रु.
13.	और पादरी भाग गया	1.00 रु.
14.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	1.00 रु.
15.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	1.00 रु.
16.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	1.00 रु.
17.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा	1.00 रु.
18.	A challange to the Christian Faith	50 पैसे
19.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	10.00 रु.
20.	वीर सावरकर—संक्षिप्त जीवन परिचय	5.00 रु.
21.	भाई परमानन्द (जीवन परिचय)	30.00 रु.
22.	बाल सत्यार्थ प्रकाश	60.00 रु.
23.	मां गायत्री	2.00 रु.
24.	स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा	2.00 रु.
25.	विश्व को वेद का संदेश	2.00 रु.
26.	विश्व को आर्यसमाज का संदेश	2.00 रु.
27.	Great Gayatri	2.00 रु.

एक रुपये वाली "हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की 1000 पुस्तकें मंगाने पर 50 प्रतिशत और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25 प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक—दयानन्द संस्थान

2286-आर्यसमाज मार्ग, नई दिल्ली-5

जन-ज्ञान (मासिक) वेद मन्दिर-- महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम लेखराम नगर— (इब्राहीमपुर) पो. आ. मुखमेलपुर-दिल्ली-36	आषाढ़-संवत-२०६० जुलाई-सन्-२००३	Posted at N. D. PSO on Dates 5 & 6 & Delhi Postal Registration No. DL-11185/2003 R. N. 10719/65

ओ३म्

मन प्राणों में वेद पले
दुःख कष्ट से मुक्ति मिले

वेद नहीं जिसके घर में
हिन्दु न कहलाए जग में

वेद सृष्टि का मूल महान
आर्य जनों, यह लो पहचान

"परमात्मा" की
दिव्य-सनातन वाणी

मंत्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, ऋषि-देवता आदि विवरण सहित 23 X 36 सें.मी. साइज में, कुल पृष्ठ 2200, बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्रायः 8 किलो। सुन्दर मुद्रण।

चारों वेदों का सरल, रोचक हिन्दी भाष्य

महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी भाष्य, मूल संस्कृत सहित

अभी वेद घर में लाओ, शुद्ध आर्य जन कहलाओ

प्रसारार्थ लागत मूल्य
रु.1800/=
अभी मात्र 1200/= में प्राप्त करें
डाक व्यय पृथक

श्रेष्ठ बढ़िया कागज़ पर लागत मूल्य 3200/-
अभी लेने पर 2250/-

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

अधिक विवरण व राशि भेजने के लिए:
दयानंद संस्थान, 2286 आर्यसमाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, (भारत) दूरभाष - 25815457, 25724741
प्रधान कार्यालयः महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-1100036 (भारत) दूरभाष - 27202249

साइबर सेपियन्स 23512929, 23551818